Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

MRINALINE

Mrinalini

Bikam Chand Chatterji

Gyanaroop
Kashi 1931

Translated by
Ram Sheesh Singh

C. No. 24767
4-12-12

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

Rs. 1.25

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मृणालिनी

प्रथम परिच्छेद

आचार्य

एक दिन प्रयाग तीर्थमें गंगा-यमुनाके संगमपर वर्षा ऋतुके सन्ध्या समय अपूर्व शोभा देख पड़ती थी। वर्षाका समय था, पर बादल नहीं थे। जो बादल थे भी वे सोनेकी तरंगमालाकी तरह पश्चिम दिशाके आकाशमें शोभित हो रहे थे। सूर्य भगवान अस्त हो चुके थे। वर्षाके जलकी बाढ़से गंगा और यमुना, दोनों भरकर पूर्ण यौवन-मदसे मतवाली दो बहनोंके समान परस्पर आलिंगन कर रही थीं। चञ्चल अञ्चलके समान लहरें हवाके झोंके खाकर तीरपर आ टकराती थीं।

एक छोटी नावमें दो आदमी बैठे थे। वह नाव बड़े साहसके साथ यमुनाकी उस भयङ्कर धाराके वेगमें बहकर प्रयागके एक घाटपर आ लगी। एक आदमी नावसे नीचे उतर आया, दूसरा उसीपर बैठा रहा। जो उतर पड़ा उसकी नई जवानी थी, देह ऊंची और मजबूत थी, और उसका सैनिक वेश था। उसके सिरपर पगड़ी, बदनपर बखतर (कवच), हाथमें धनुष-बाण, पीठपर तरकस और पांवमें जूते थे। वह वीर पुरुष बड़ा सुन्दर था। घाटपर कितने ही संसार-विरक्त, पुण्यात्मा तपस्वियोंके आश्रम थे। उन आश्रमोंकी एक छोटी कुटीमें उस जवानने प्रवेश किया।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कुटीके मध्यमें एक ब्राह्मण कुशासनपर बैठकर जपमें लीन थे। ब्राह्मणका शरीर बहुत लम्बा था। बदनका चमड़ा ढीला था। चौड़े मुंहपर सफेद दाढ़ी विराजमान थी। सिरके बाल घने न थे और ललाटपर विभूति शोभा दे रही थी। ब्राह्मणके शरीरकी कान्ति बड़ी तेज थी और आंखें चमकीली थीं। देखनेमें वे निर्दय वा घृणाके योग्य नहीं जान पड़ते थे, किन्तु उन्हें देखनेसे भय होता था। उस वीरको देखते ही उनकी गम्भीरता दूर हुई—मुखपर प्रसन्नता झलकने लगी। वह वीर ब्राह्मणको प्रणाम कर खडा हो गया। ब्राह्मणने आशीर्वाद देकर कहा—वत्स हेमचन्द्र! मैं बहुत दिनोंसे तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

हेमचन्द्रने नम्रतासे कहा—अपराध क्षमा कीजिये। दिल्लीमें कार्य सिद्ध नहीं हुआ। यवनोंने मेरा पीछा किया था, इसलिये कुछ सचेत होकर आना था। इसी कारण विलम्ब हुआ।

ब्राह्मणने कहा—दिल्लीका समाचार मैंने सुन लिया है। बख्तियार खिलजी हाथीसे मारा जाता तो अच्छा होता। देवताका शत्रु उस पशुके हाथसे मारा जाता, तूने उसकी जान क्यों बचायी?

हेमचन्द्र—इसलिये कि युद्धमें मैं उसको अपने हाथोंसे मारूंगा, वह मेरे पिताका राज्य अपहरण करनेवाला है। मेरे ही हाथोंसे वह मारा जायगा।

ब्राह्मण—जिस हाथीने क्रोधित हो उसपर हमला किया था, तुमने बख्तियार खिलजीको न मारकर उस हाथीको ही क्यों मारा?

हेम०—क्या मैं चोरकी तरह बिना युद्ध किये ही शत्रुको मारूंगा, मैं मगध-विजयीको युद्धमें पराजित कर पिताके राज्यका उद्धार करूंगा। नहीं तो मेरे इस "मगध-राजपुत्र" नाममें कलङ्क लगेगा।

ब्राह्मणने कुछ रूखे होकर कहा—ये सब बातें तो बहुत पुरानी हैं। इसके पहले तुम्हारे यहां आनेकी बात थी। तुमने विलम्ब क्यों किया? क्या तुम मथुरा चले गये थे?

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हेमचन्द्रने सिर झुका लिया। ब्राह्मणने कहा—मैं समझता हूँ तुम मथुरा गये थे। मेरे मना करनेपर भी तुमने मेरा कहना न माना। जिसे देखनेके लिये तुम मथुरा गये थे, क्या उससे मुलाकात हुई ?

इस बार हेमचन्द्रने बहुत विरक्त होकर कहा—मुलाकात जो न हुई वह तो आपकी ही दया है आपने मृणालिनीको कहां भेज दिया है ?

माधवाचार्यने कहा—यह बात तुमको कैसे मालूम हुई कि मैंने ही उसे कहीं भेज दिया है ?

हेम०—माधवाचार्यके सिवा यह सलाह और किसकी हो सकती है ? मैंने मृणालिनीकी धायसे सुना है कि मृणालिनी मेरी अंगूठी देखकर कहीं चली गई है—और उसका कहीं पता नहीं है। आपने मेरी अंगूठी रास्तेमें धीरज रखनेके लिये ली थी। अंगूठीके बदलेमें मैंने दूसरा रत्न देना चाहा था, किन्तु आपने लिया नहीं। उसी समय मुझे सन्देह हुआ। पर मेरे पास ऐसी कोई चीज नहीं जिसे आपको न दूं। इसी कारण मैंने बिना विवाद किये ही अंगूठी आपको दे दी। किन्तु मेरी उस असावधानीका प्रतिफल आपने मुझे दे दिया।

माधवाचार्यने कहा—यदि यही बात है तो मुझपर क्रोध मत करो। यदि तुम देवकार्य नहीं कर सकते, तो कौन कर सकेगा ? यदि तुमने यवनोंको न भगाया, तो कौन भगा सकता है ? यवनोंका विनाश करना ही तुम्हारा प्रधान कार्य होना उचित है। उसीपर तुम्हें सदा ध्यान रखना चाहिये। इस समय मृणालिनी तुम्हारे मनपर कैसे अधिकार जमाती ? उस बार तुम मृणालिनीकी आशासे मथुरामें रहते थे और इधर तुम्हारे बापका राज्य छीन लिया गया। यवनोंके आनेके समय यदि हेमचन्द्र मथुरामें न रहकर मगधमें रहता, तो मगध क्यों जीता जाता ? अब भी क्या मृणालिनीके पाशमें बँधकर निश्चेष्ट बैठे रहोगे ?

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
माधवाचार्यके जीते जी तो यह बात नहीं हो सकती। इसलिये जिस जगह रखनेसे तुम मृणालिनीको न पा सकोगे, मैंने उसी जगह उसको रख दिया है।

हेम०—अपने देवकार्यका आप ही उद्धार कीजिये। मैं तो बस यहीं तक कर सका।

मा०—तुम्हारी बुद्धि बिगड़ गई है। क्या यही तुम्हारी देव-भक्ति है? अच्छा! वह भी न हो। देवताओंको अपना कार्य सिद्ध करनेके लिये तुम्हारे जैसे मनुष्योंकी सहायताकी चाह नहीं है, किन्तु यदि तुम कायर नहीं हो, तो क्यों शत्रुकी हुकूमतमें रहना चाहते हो? क्या यही तुम्हारा वीरोचित अंहकार है? क्या यही तुम्हारी शिक्षा है? राजवंशमें जन्म लेकर अपने राज्य-के उद्धार करनेसे क्यों मुंह मोड़ना चाहते हो?

हेम०—राज्य—शिक्षा—अंहकार अथाह जलमें डूब जायं।

मा०—नराधम! तुम्हारी माताने तुमको दस महीने दस दिन गर्भमें रखकर क्यों दुःख उठाया? और मैंने भी क्यों बारह बरसों तक देवताओंकी आराधना छोड़कर इस अधमको सारी विद्याएं सिखलायीं?

माधवाचार्य बहुत देरतक चुपचाप हथेलीपर गाल रखे बैठे रहे। धीरे-धीरे हेमचन्द्रके सुन्दर गोरे मुखकी कान्ति मध्याह्न-की किरणोंसे मुरझाये हुए वन-कमलके सदृश लाल हो रही थी। लेकिन भीतर धधकती हुई अग्निवाले पर्वतके शिखरके समान स्थिर भावसे हेमचन्द्र खड़े रहे। अन्तमें माधवाचार्यने कहा-हेम-चन्द्र, धीरज धरो। मैं बतला दूंगा कि मृणालिनी कहां है। उसके साथ तुम्हारा व्याह करा दूंगा। लेकिन इस समय तुम मेरे परा-मर्शके अनुसार काम करो। फिर अपना काम पूरा करना।

हेमचन्द्रने कहा—जब तक आप यह न बतलायेंगे कि मृणालिनी कहां है, तबतक मैं यवनोंको मारनेके लिये अस्त्र न उठाऊंगा।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

माधवाचार्यने कहा—यदि मृणालिनी मर गई हो ?

हेमचन्द्रकी आँखोंसे आगकी चिनगारियाँ निकलने लगीं। उन्होंने कहा—तब यह आपका ही काम है।

माधवाचार्यने कहा—मैं मानता हूं कि मैंने ही देवकार्यके काँटेको विनष्ट किया है।

हेमचन्द्रके मुखकी कान्ति बरसनेवाले बादलके समान हो गयी। हाथमें धनुष ले और उसपर बाण चढ़ाकर बोले—जिसने मृणालिनीको मारा है, उसे मैं मारूंगा। इसी बाणसे गुरु-हत्या और ब्रह्म-हत्या दोनों ही दुष्कर्म करूंगा।

माधवाचार्य हँसकर बोले—गुरु-हत्या और ब्रह्म-हत्या करनेमें जितना आनन्द तुम्हें है उतना आनन्द हमें स्त्री-हत्या करनेमें नहीं है। इस समय तुम्हें पापी न बनना पड़ेगा। मृणालिनी जीती है। तुमसे हो सके, तो ढूँढ़कर उससे मिलो। इस समय तुम मेरे आश्रमसे निकलकर दूसरी जगह चले जाओ। आश्रमको अपवित्र मत करो। अपात्रपर मैं कोई भार नहीं देता। यह कहकर माधवाचार्य पहलेकी ही तरह जप करने लगे।

हेमचन्द्र आश्रमसे बाहर निकलकर घाटपर आये और उस छोटी नावपर चढ़ गये। जो दूसरा आदमी नावमें था उससे कहा—दिग्विजय ! नाव खोल दो।

दिग्विजय बोला—कहाँ जाइयेगा ?

हेमचन्द्रने कहा—जहाँ इच्छा होगी—यमके घर जाऊँगा।

दिग्विजय स्वामीका स्वभाव जानता था। धीरेसे कहा—वह तो थोड़ी दूर ही है। यह कहकर उसने नाव छोड़ दी और धारके विमुख उसे खेने लगा।

हेमचन्द्र बहुत देरतक चुप रहनेके बाद बोले—चलो, लौट चलें।

दिग्विजयने नाव लौटाकर फिर प्रयागके घाटपर लगायी। हेमचन्द्र कूदकर तीरपर उतर पड़े और फिर माधवाचार्यकी कुटीमें चले गये।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

उनको देखकर माधवाचार्यने कहा—फिर क्यों आये ?

हेमचन्द्रने कहा—आप जो कहेंगे, वही करूंगा। बतलाइये मृणालिनी कहां है ?

मा०—तुम सत्यवादी हो। तुमने मेरी आज्ञाका पालन करना स्वीकार कर लिया। मैं इसीसे सन्तुष्ट हो गया। गौड़ नगरमें एक शिष्यके घर मैंने मृणालिनीको रखा है। तुमको भी वहीं जाना होगा। पर तुम उसे न देख सकोगे। शिष्यसे मैंने भलीभाँति कह दिया है—जितने दिनोंतक मृणालिनी तुम्हारे घर रहे, उतने दिनोंतक वह किसी पुरुषसे साक्षात् न करने पावे।

हेम०—आपकी इस बातसे मैं कृतकृत्य हो गया। इस समय मुझे क्या करना होगा ? आज्ञा दीजिये।

मा०—तुम दिल्ली जाओ, और यह पता लगाकर कि यवनों की क्या राय है, चले आओ।

हेम०—यवन लोग बङ्गाल जीतनेका उद्योग कर रहे हैं। बहुत शीघ्र बख्तियार खिलजी सेना लेकर गौड़की ओर जायगा।

माधवाचार्यका मुख प्रसन्नतासे खिल उठा। उन्होंने कहा—जान पड़ता है, इतने दिनोंके बाद इस देशपर ईश्वरने दया की है।

हेमचन्द्र एकाग्रचित्त हो माधवाचार्यकी ओर मुंह करके आगे सुननेकी प्रतीक्षा करने लगे। माधवाचार्य कहने लगे—कई महीनोंतक मैं केवल गणनामें ही लगा था। गणनासे जिस भविष्य बातकी सम्भावना थी, उसके फलित होनेके चिह्न प्रकट होने लगे।

हेम०—कैसे ?

मा०—गणना करके मैंने देखा था कि बंगराज्यसे ही यवन-राज्यका विनाश प्रारम्भ होगा।

हेम०—हो सकता है। किन्तु कितने दिनोंमें और किसके हाथसे होगा ?

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मा०- उसको भी गिनकर स्थिर कर लिया है। जब पश्चिम देशके रहनेवाले बनिये बंग राज्यमें हथियार उठायेंगे, उसी समय यवनराज्यका विनाश होगा।

हेम०-तब मेरे जयलाभकी सम्भावना कहां ? मैं तो बनिया नहीं हूँ।

मा०-तुम्हीं बनिया हो। जब तुम मृणालिनीकी आशामें बहुत दिनोंतक मथुरामें वास करते थे, तब कौन छल करके वहां रहे ?

हेम०-उस समय मैं अपनेको बनिया कहकर अपना परिचय देता था।

मा०-तो तुम्हीं पश्चिम देशके बनिये हो। गौड़ राज्यमें जाकर तुम्हारे अस्त्र उठाते ही यवनोंका पतन हो जायगा। तुम मेरे सामने प्रतिज्ञा करो कि कल प्रातःकाल ही गौड़की यात्रा करूँगा। जब तक तुम यवनोंके साथ युद्ध न करो, तब तक मृणालिनीसे भेंट न करो।

हेमचन्द्रने ऊँची सांस लेकर कहा-मैं इसे स्वीकार करता हूं। किन्तु अकेले युद्ध करके क्या करूँगा ?

मा०--गौड़ेश्वरकी सेना है।

हेम०--हो सकती है, पर उसमें भी कई सन्देह हैं। यदि है भी, तो वह मेरे अधीन क्यों होगी ?

मा०—तुम आगे जाओ। नवद्वीपमें मुझसे भेंट होगी। वहीं चलकर इसका उचित उपाय किया जायगा। गौड़ेश्वरसे मैं परिचित हूं।

"जो आज्ञा" कहकर हेमचन्द्र प्रणाम करके विदा हुए। जब तक उनकी वीरमूर्ति आंखोंके सामने थी, तबतक आचार्य एक टक उनकी ओर देखते रहे। जब हेमचन्द्र आंखोंसे ओझल हो गये, तब माधवाचार्य मन-ही-मन कहने लगे—जाओ वत्स ! पद पदपर विजय लाभ करो। यदि मेरा जन्म ब्राह्मण-वंशमें है, तो

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)
तुम्हारे पैरोंमें कुशका अंकुर भी न गड़ेगा। मृणालिनी चिड़िया-को तुम्हारे ही लिये पिंजरेमें बन्द कर रखा है। पर न जाने, कहीं पीछे तुम उसकी मधुर बोलीसे मोहित होकर अपना महान काम न भूल जाओ, इसीलिये तुम्हारा परम मंगलाकांक्षी ब्राह्मण कुछ दिनोंके लिये तुम्हारे मनको दुःख दे रहा है।

द्वितीय परिच्छेद

पिंजरेकी चिड़िया

लक्षणावती-निवासी हृषीकेश न तो इतने धनी हैं और न इतने दरिद्र ब्राह्मण ही हैं। उनका घर बहुत सुन्दर था। घरके भीतर दीवारमें जहाँपर दो युवतियाँ चित्र अंकित कर रही हैं, वहाँ पाठक महाशयोंको ठहरना होगा। दोनों ही युवतियोंने अपने काममें अच्छी तरह मन लगाया है, पर उनके आपसके वार्तालापमें कोई बाधा नहीं पड़ती है। उस वार्तालापके बीचसे ही पाठकोंको कुछ सुनाना आरम्भ करता हूं।

उस युवतीने दूसरीसे कहा—क्यों मृणालिनी! मेरी बात-का जवाब क्यों नहीं देती? मैं उसी राजपुत्रकी बात सुनना चाहती हूँ।

मृणालिनीने कहा—सखि मणिमालिनी! अपने सुखकी बात कहो मैं आनन्दसे सुनूँगी।

मणिमालिनीने कहा—अपने सुखकी बात सुनते-सुनते मैं ही जल गयी। तुमको क्या सुनाऊँ?

मृ०—तुम किससे सुनती हो? अपने स्वामीसे?

मणि०—नहीं तो, और किसीसे अधिक सुनने भी तो नहीं पाती! देखो, इस कमलको कैसा बनाया है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मृ०—इतना अच्छा तो नहीं है। कमल जलसे बहुत ऊपर है। तालाबमें तो ऐसा नहीं रहता। कमलकी डंडी जलसे सटी रहती है,चित्रमें भी वैसा ही होना चाहिये। और कई एक कमलके पत्ते बनाओ,नहीं तो कमलकी सुन्दरता स्पष्ट न दीख पड़ेगी। और यदि बना सको, तो उसके पास एक राजहंस बनाओ।

मणि०—हंस यहां क्या करेगा?

मृ०—तुम्हारे स्वामीके समान कमलको सुखकी बातें सुनायेगा।

मणि०—(हंसकर) दोनोंके ही स्वर मधुर हैं। मैं हंसको न बनाऊँगी। मैं सुखकी कथा सुनते-सुनते ऊब गई हूँ।

मृ०—तब एक खंडरिच बनाओ।

मणि०—खंडरिच न बनाऊँगी। खंडरिच पंख फैलाकर उड़ जायगा। यह तो मृणालिनी नहीं है कि प्रेमकी जंजीर बाँध रखूंगी।

मृ०—यदि खण्डरिच ऐसा निर्दय है, तो जैसे मृणालिनी को पिंजरेमें बन्दकर रखा है, वैसे ही खण्डरिचको भी पिंजरेमें बाँध रखो।

मणि०—हमने मृणालिनीको पिंजरेमें नहीं बाँध रखा है,वह आप ही आकर पिंजरेमें घुस गई है।

मृ०—यह माधवाचार्यका गुण है।

मणि०—सखी! तुमने कई बार कहा है कि माधवाचार्यके उस कठोर कार्यकी बात विस्तारसे कहूँगी। किन्तु आजतक तुमने उसे कहा नहीं? क्या तुम माधवाचार्यकी बात पिताके घर छोड़ आई हो?

मृ०—माधवाचार्यकी बात कहने नहीं आई हूं। माधवाचार्य को मैं नहीं पहचानती। मैं अपनी इच्छासे यहाँ नहीं आई हूं। एक दिन शाम होनेके बाद मेरी दासीने मुझे यह अंगूठी दी और कहा कि जिन्होंने यह अंगूठी दी है, वे फूलबागमें तुम्हारी

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

राह देख रहे हैं। मैंने देखा कि वह हेमचन्द्रके संकेतकी अंगूठी है। मुझे देखनेकी इच्छासे उन्होंने अंगूठी भेज दी है। मेरे घरके पीछे ही फूलबाग था। यमुनासे आकर ठंढी हवा उस बागमें नाचती थी। वहीं उनसे भेंट होती।

मणिमालिनीने कहा—इस बातके याद पड़नेपर भी दुःख होता है कि तुम कुमारी होकर किस प्रकार पुरुषसे गुप्त प्रेम करती ?

मृ०—दुःख क्यों होता है। सखी ! वे मेरे स्वामी हैं। उनके अतिरिक्त कोई कभी मेरा स्वामी नहीं हो सकता।

मणि०—किन्तु अब तक तो वे स्वामी नहीं हुए। क्रोध मत करना। सखी ! मैं तुम्हें बहिनके समान प्यार करती हूं,इसीलिये कहती हूँ।

मृणालिनीने सिर झुका लिया। थोड़ी देरके बाद आँखोंके आँसू पोंछकर कहा—मणिमालिनी ! इस विदेशमें कोई मेरा अपना नहीं है। और न कोई ऐसा है जो मुझसे अच्छी बात कहे। जो मुझे प्यार करता है, उसके साथ कभी भेंट होनेकी अब आशा भी नहीं है। केवल तुम्हीं मेरी सखी हो। यदि तुम मुझे प्यार न करोगी, तो कौन प्यार करेगा ?

मणि०—मैं तुम्हें प्यार करती हूं और करूँगी। किन्तु जब यह बात याद आती है, तब सोचती हूं कि—

मृणालिनी चुपचाप होकर रोने लगी। और बोली सखी ! तुम्हारे मुँहकी यह बात मुझसे नहीं सही जाती। यदि तुम मेरे सामने शपथ करो कि जो मैं तुमसे कहूँगी, उसको इस संसारमें किसीसे न कहोगी तो मैं तुमसे सब बातें साफ-साफ कह सकती हूँ। उसके कहनेसे ही तुम मुझे प्यार करोगी।

मणि०—मैं शपथ करती हूं।

मृ०—तुम्हारी चोटीमें देवताका फूल है, उसे छूकर शपथ करो। मणिमालिनीने वैसा ही किया।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

उस समय मृणालिनीने जो बात मणिमालिनीके कानमें कही, उसे बढ़ाकर कहनेकी कोई आवश्यकता नहीं है सुनकर मणिमालिनीने बड़ा प्रेम दिखलाया। गुप्त बातचीत बन्द हुई।

मणिमालिनीने कहा—उसके बाद माधवाचार्यके साथ तुम कैसे आई? वह बात तुम कह रही थी, कहो।

मृणालिनीने कहा—मैं हेमचन्द्रकी अँगूठी देखकर उनको देखनेकी आशासे बागमें गई। दूतीने कहा—"राजपुत्र नावपर हैं, नाव किनारेपर लगी है।" मैंने बहुत दिनोंसे राजपुत्रको न देखा था। बड़ी घबड़ाई। इसीसे कुछ सोच न सकी। घाटपर आकर मैंने देखा कि सच ही एक नाव किनारेपर लगी हुई है। उसके बाहर एक मनुष्य खड़ा है। मैं नावके पास गई। जो उस पर खड़े थे उन्होंने मेरा हाथ पकड़कर मुझे नावपर चढ़ा लिया। इतनेमें ही मल्लाहोंने नाव खोल दी; किन्तु मैं हाथके स्पर्श करते ही समझ गयी कि हेमचन्द्र नहीं थे।

मणि०—क्या उस समय तुम चिल्लाने लगी?

मृ०—मैं चिल्लाई नहीं। एक बार चिल्लानेकी इच्छा हुई, चिल्ला न सकी।

मणि०—मैं होती तो जलमें कूद पड़ती।

मृ०—हेमचन्द्रको बिना देखे मैं कैसे मरती?

मणि०—उसके बाद क्या हुआ?

मृ०—पहले ही उस पुरुषने मुझे "मां" कहकर पुकारा और कहा—मैं तुमको "मां" कहकर पुकारता हूँ। मैं तुम्हारा पुत्र हूँ। तुम किसी बातकी आशंका मत करो। मेरा नाम माधवाचार्य है। मैं हेमचन्द्रका गुरु हूं। केवल मैं हेमचन्द्रका ही गुरु नहीं हूँ, वरन भारतवर्षके अनेक राजाओंसे मेरा वही सम्बन्ध है। मैं इस समय एक देव-कार्यमें व्यस्त हूँ। उसमें हेमचन्द्र मेरे प्रधान सहायक हैं। तुम उनकी पूरी बाधा हो।

मैंने कहा—मैं बाधा हूँ? माधवाचार्यने कहा—तुम्हीं बाधा

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
हो। यवनोंको जीतना और हिन्दू राज्यका फिर उद्धार करना सहल नहीं है। हेमचन्द्रके सिवा और किसीसे वह काम नहीं हो सकता। यदि हेमचन्द्रका मन दूसरी ओर चला जाय, तो उनसे भी वह काम पूरा न होगा। जबतक तुमसे भेंट होती रहेगी तबतक हेमचन्द्रके तुम्हारे अतिरिक्त और कोई व्रत नहीं रहेगा। तब यवनोंको कौन मारेगा ?

मैंने कहा—मैं समझती हूं कि मुझको मारे बिना यवन नहीं मारे जायँगे! क्या आपके शिष्यने आपके हाथ अँगूठी भेजकर मुझको मार डालनेकी आज्ञा दी है ?

मणि०—तुमने उस बुड्ढेसे इतनी बातें कैसे कहीं ?

मृ०—मुझे बड़ा क्रोध हुआ था। बुड्ढेकी बातोंसे मेरी हड्डियाँ जल गई थीं। और विपत्तिके समय लज्जा कैसी ? माधवाचार्यने अपने मनमें मुझे लड़ाकू समझा। हँसकर कहा—"मैं तुमको इस तरह अपने कब्जेमें करूंगा, इस बातको हेमचंद्र नहीं जानते हैं।"

मैंने मन-ही-मन कहा–तब जिसके लिये मैं यह प्राण रखती हूं, उसकी अनुमति लिये बिना प्राण त्याग न करूँगी। माधवाचार्य कहने लगे—"तुम्हें प्राणत्याग न करना होगा। इस समय केवल हेमचन्द्रका त्याग करना होगा। इससे उनका बड़ा मंगल होगा। जिससे वे राजेश्वर होकर तुम्हें महारानी बना सकें, क्या वह करना तुम्हारा कर्तव्य नहीं है ? तुम्हारे प्रेम-मन्त्रसे वे कायर हो गये हैं। उनका यह भाव दूर करना क्या उचित नहीं है ?"

मैंने कहा—यदि मुझसे भेंट करना उनके लिये उचित नहीं है, तो वे कभी मुझसे फिर भेंट न करेंगे। माधवाचार्यने कहा—"वह लड़का है, लड़के और बुड्ढेकी विचारशक्ति समान होती है; किन्तु यह बात नहीं है। हम लोगोंमें दूरकी बातें सोचनेकी शक्ति हेमचन्द्रसे अधिक है, इसमें सन्देह मत करो। तुम्हारी राय हो या न हो, जिसे मनमें संकल्पकर लिया है उसे मैं अवश्य

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
करूंगा। मैं तुमको दूसरे देशमें ले जाऊंगा। गौड़ देशमें एक शान्त स्वभाववाले ब्राह्मणके घर तुमको रखकर चला आऊंगा। वे अपनी लड़कीके समान तुम्हारी रक्षा करेंगे। एक बरसके बाद तुमको तुम्हारे पिताके पास पहुँचा दूंगा। उस समय हेमचन्द्र जिस अवस्थामें रहेगा, उसी अवस्थामें तुम्हारे साथ उसका व्याह करा दूंगा। यह बात सच कहता हूँ।" इस बातसे या लाचारीसे मैं चुप हो गई! उसके बाद यहां आई हूँ! क्या वह वही है?

तृतीय परिच्छेद

भिखारिन

दोनों सखियां इसी तरह बातचीत कर रही थीं कि एक कोमल कंठसे निकला हुआ मधुर गीत उनके कानोंमें सुनाई पड़ा।

"मथुराबासिनी, मधुरहासिनी,
श्यामविलासिनि रे।"

मृणालिनीने कहा—सखी! कहां गा रही है?

मणिमालिनीने कहा-घरके बाहर गा रही है।

फिर वह गाने लगी—

"क्यों री नागरि, घरको परिहरि,
काहे विवासिनि रे।"

मृ०-सखी! कौन गाती है? जानती हो?

मणि०-कोई भिखारिन होगी।

"वृन्दाबन धन, गोपी मोहन,
काहे तू त्यागी रे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

देश देशान्तर, सो श्याम सुन्दर,
फिरे तोहि लागी रे।"

मृणालिनीने बड़ी जल्दीसे कहा—सखी! सखी!! उसको घरके भीतर बुला लाओ।

मणिमालिनी गायिकाको बुलाने गई। उसी समय वह गाने लगी—

"विकसित नलिने, युमना पुलिने, रेतीला तट
बहुत पियासा रे।
चन्द्रमा शालिनी, यह मधुयामिनी,
मिटी न आशा रे।
सा निशा समरि।"

इसी समय मणिमालिनी उसे बुलाकर घरके भीतर ले आई। भीतर आकर वह पहलेकी ही तरह गाने लगी—

"सा निशा समरि, कह लो सुन्दरि,
कहां मिले देखा रे।
सुनि आओ चलि, बाजे मुरली,
बन बन एका रे।"

मृणालिनीने उससे कहा—तुम्हारा स्वर बड़ा मीठा है। तुम गीतको एक बार और गाओ।

गायिकाकी अवस्था सोलह वर्षकी है। वह नाटी और काली है। वह स्वभावसेही काले रंगकी है। उसके शरीरपर यदि भौंरा बैठ जाय, तो वह देख न पड़े। स्याही में जल मिला दिया गया हो या जलमें स्याही मिलायी गई हो, ऐसी वह काली नहीं है। वैसी काली है जैसी अपने घरमें रहनेपर उसे लोग सांवली कहते दूसरेके घरमें वेश्याको जैसी काली कहते हैं वैसी ही वह काली है। उसका रंग कैसा ही क्यों न हो, पर भिखारिन कुरूपा नहीं है। उसका शरीर स्वच्छ, चिकना और चमकीला है। चेहरा खिला हुआ है; दोनों आंखें बड़ी चंचल और हँसीसे भरी

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हैं, आंखकी पुतलियां बड़ी काली हैं। एक पुतलीके पास एक तिल है। दोनों ओठ छोटे और बड़े लाल हैं, उनके भीतर बहुत निर्मल, चमकीली, सफेद चमेलीकी कलियोंके समान दांतोंकी दो कतारें हैं बाल छोटे हैं, कन्धेपर लटक रहे हैं। उनमें जूहीकी माला गुंथी हुई है। यौवन आनेसे शरीरकी गठन सुन्दर जान पड़ती है। ऐसा मालूम होता है कि किसी कारीगरने काले पत्थरमें पुतली खोदी है। कपड़े बहुत ही साधारण पर साफ हैं। उसमें धूलि नहीं लगी है। उसका शरीर गहनोंसे बिल्कुल खाली नहीं है। कुछ गहने भिखारिनके योग्य पहने है। हाथमें पीतलके कड़े, गलेमें काठकी माला, नाकपर एक टीका और भौंहोंके बीच चन्दनकी एक बिंदुली है। वह आज्ञा पाकर पहलेकी ही तरह गाने लगी—

"मथुरावासिनि, मधुरहासिनि श्यामविलासिनि रे।
कहु री नागरि! घरको परिहरि, काहे विवासिनि रे॥ १॥
वृन्दावन धन, गोपी मोहन, काहे तुम त्यागी रे।
देश देशपर, सो श्यामसुन्दर फिरे तोहि लागी रे॥ २॥
विकसित नलिने, यमुना पुलिने, बहुत पियासा रे।
चन्द्रमाशालिनी, यह मधुयामिनी, मिटी न आशा रे॥ ३॥
सा निशा समरि, कहलो सुन्दरि, कहां मिले देखा रे।
सुनि आओ चलि, बाजे मुरली, बन बन एका रे॥४॥"

गाना समाप्त हुआ। मृणालिनीने कहा—तुम अच्छा गाती हो। सखि मृणिमालिनी! इसको कुछ देना अच्छा है। लाकर कुछ दो?

मणिमालनी इनाम लाने गई। इसी बीच मृणालिनीने बालिकाको पास बुलाकर पूछा—भिखारिन! तुम्हारा नाम क्या है?

गि०—मेरा नाम गिरिजाया है।

मृ०—तुम्हारा घर कहाँ है?

गि०—इसी गांवमें रहती हूं।

मृ०—क्या तुम गीत गाकर दिन बिताती हो?

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गि०—और कुछ तो जानती नहीं।

मृ०—तुम यह सब गीत कहाँसे पाती हो?

गि०—जहां जो पाती हूं, उसे सीख लेती हूं।

मृ०—यह गीत तुमने कहाँ सीखा?

गि०—एक बनियेने मुझे सिखाया है।

मृ०—वह बनिया कहाँ रहता है?

गि०—इसी गांवमें।

मृणालिनीका मुख आनन्दसे खिल उठा, जैसे प्रातःकालके सूर्यकी किरणोंके स्पर्शसे कमल खिल गया हो। उसने कहा— बनिया तो वाणिज्य करता है। वह किस चीजका व्यापार करता है?

गि०—जो सबका व्यवसाय है, वही उसका भी व्यवसाय है।

मृ०—वह व्यवसाय क्या है?

गि०—बातका व्यवसाय।

मृ०—यह तो नया रोजगार है। इसमें हानि लाभ कैसे होता है?

गि०—इसमें लाभ है "प्रेम करना" और हानि है "झगड़ा करना।"

मृ०—तुम भी तो व्यवसायी हो? इसका महाजन कौन है?

गि०—जो ही महाजन हो।

मृ०—तुम उसकी कौन हो?

गि०—नगदा गाहक।

मृ०—अच्छा अपना बोझ उतारो। इसमें क्या है? देखूं।

गि०—यह सामग्री देखी नहीं जाती, सुनी जाती है।

मृ०—अच्छा! सुनाओ।

गिरिजाया गाने लगी—

जमुनामें पाया सखी, एक अनूपम रतन।
पहिरि लिया अनि प्रेमसे, करि अनेकहू यतन॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

निद्रामें मैं मग्न थी, आय भवनमें चोर।
ले भाग। उस रतनको, काटि गलेसे डोर॥

मृणालिनीकी आँखोंमें आँसू भर आये। उसने हँसकर गद्गद् स्वरसे कहा—यह किस चोरकी बात है ?

गि०—उसे बनिया कहते हैं। चोरीका ही धन लेना उसका रोजगार है।

मृ०—उससे कहना कि चोरीके व्यापारसे साधुओंके प्राण नहीं बचते।

गि०—मैं समझती हूँ। व्यापारीके भी नहीं।

मृ०—क्यों नहीं ? व्यापारीके क्यों ? गिरिजायाने गाया—

घाट बाट बन बागमें, घूम फिरी बहु देश।
कहाँ बसत वह शशिबदन, सुन्दर राज सुवेश॥
हियपै बिरवा कमलका, रोप्यों करि बहु यत्न।
चला गया कहँ कमल वह, वह मृणाल मम रत्न॥

मृणालिनीने प्रेम भरे कोमल स्वरसे कहा—मैं बतला सकती हूँ कि मृणाल कहाँ है ? तुम उसे याद रख सकती हो ?

गि०—याद रख सकती हूँ, कहाँ है, कहाँ।

मृणालिनीने कहा—

निर्विवेक विधिने मृणालको काँटोंसे विंधवाया है।
उसे हृदयमें सता सताकर जलके बीच डुबाया है॥
राजहंस एक सुन्दर देखो उसपर ले बिठलाया है।
पाँवोंमें बेड़ी पहनाकर निर्दय उसे फँसाया है॥
कहो यहाँसे राजहंस अब कहाँ किधर जाओगे।
मेरे हृदय कमलपर क्या तुम आसन भले जमाओगे॥
राजहंस वह आकरके जब बैठा हृदय कमलपर।
सिहर उठी तब मृणालिनी सब कांटे-कांपे थर-थर॥
नभमें उठे कालके बादल राजहंस उड़ चला गया।
डूब मरी जलमें मृणालिनी हृदय कमल वह टूट गया॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

क्यों गिरिजाया ! गीत सीख सकती हो ?

गि०—सीख तो सकती हूँ.पर क्या आँसू भरकर ही सीखूँ ?

मृ०—नहीं। इस व्यवसायमें यही मे॰ भ है।

मृणालिनी गिरिजायाको यही कविता याद करा रही थी, कि मणिमालिनीके पैरकी आहट सुन पड़ी। मणिमालिनी उसकी प्यारी सखी थी। वह उसकी सभी बात जानती थी, तो भी उसपर ऐसा विश्वास न था कि वह पिताकी प्रतिज्ञा भंग होनेमें सहायता करेगी। इसीलिये उसने ये सब बातें सखीसे छिपाकर गिरिजायासे कहीं—आज और काम नहीं है। बनियेसे जाकर मिलो और अपना दूसरा बोझा लाओ। यदि कोई चीज खरीदनी होगी, तो उसे मैं खरीदूंगी।

गिरिजाया चली गयी। मृणालिनी उस भिखारिनको इनाम देनेका विचार भूल गई थी। जब गिरिजाया कुछ दूर चली गई, तब मणिमालिनीने एक केला, एक पुराना कपड़ा और कुछ कौड़ियाँ लाकर गिरिजायाको दीं। मृणालिनी भी एक पुराना कपड़ा देने गई। देनेके समय उस भिखारिनके कानोंमें कहा—मैं धीरज नहीं रख सकती। कलतक मैं राह नहीं देखूँगी। तुम आज एक पहर रात बीतनेपर आकर इस घरकी उत्तर ओर दीवारके पास खड़ी रहना, वहीं मुझसे भेंट होगी। यदि तुम्हारे बनिया आवें तो उन्हें साथमें ले आना।

गिरिजायाने कहा—मैं अवश्य आऊँगी।

मृणालिनी मणिमालिनीके पास लौट आई। मणिमालिनीने कहा—सखी ! भिखारिनके कानमें तुमने क्या कहा ?

मृणालिनीने कहा—क्या कहूं, सखी !
कानोंमें थी सुनाई, मनकी व्यथा सखी री।
फिर क्या तुझे सुनाऊँ, मनकी व्यथा सखी री॥
तुम भी मुझे सुनाओ, अपनी कथा सखी री।
तो फिरसे मैं कहूँगी, मनकी व्यथा सखी री॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मणिमालिनीने हँसकर कहा—तुम क्या हो गयी सखी ?

मृणालिनीने कहा—तुम्हारी ही सखी।

चतुर्थ परिच्छेद

—❀:❀—

दूत

लक्षणावती नगरीके एक महल्लेमें सर्वधन नामक बनियेके घरमें हेमचन्द्र रहते थे। बनियेके द्वारपर एक सुन्दर अशोकका पेड़ था। दिन थोड़ा बाकी था। उस पेड़की छायामें बैठकर एक फूली हुई अशोककी डालको छुरीसे बिना प्रयोजन ही वे टूक-टूक कर रहे थे, और बार-बार रास्तेकी ओर देख रहे थे। जान पड़ता था कि वह किसीकी प्रतीक्षा कर रहे थे। जिसकी वह प्रतीक्षा कर रहे थे, वह नहीं आई। नौकर दिग्विजयसिंह आया। हेमचन्द्रने दिग्विजयसे कहा—दिग्विजय! आज भिखारिन अबतक नहीं आई। मैं बहुत घबड़ा गया हूं। तुम एक बार उसकी खोज कर आओ। जो आज्ञा, कहकर दिग्विजय गिरिजायाको खोजने चला। नगरकी एक सड़कपर उसने गिरिजायाको देखा।

गिरिजायाने कहा—क्या है, दिग्विजय! दिग्विजयने क्रोध करके कहा—मेरा नाम दिग्विजय है।

गि०—अच्छा दिग्विजय! आज किस ओर विजय करने चले हो ?

दि०—तुम्हारी ओर।

गि०—क्या मैं एक दिशा हूँ ? तुम्हें दिशा-विदिशाका ज्ञान नहीं है ?

दि०—कैसे ज्ञान हो—तुम जो अन्धकार हो। चलो, मालिक तुम्हें बुलाते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गि०—क्यों ?

दि०—जान पड़ता है कि तुम्हारे साथ मेरा व्याह करा देंगे।

गि०—क्यों, तुम्हारे मुँहमें आग देनेके लिये और कोई नहीं मिला ?

दि०—नहीं, यह काम तुम्हींको करना पड़ेगा। अभी चलो।

गि०—दूसरेके ही लिये तो मुझे मरना है, तो चलो—यह कहकर गिरिजाया दिग्विजयके साथ चली। दिग्विजय अशोककी छायामें बैठे हुए हेमचन्द्रको दिखाकर कहीं दूसरी जगह चला गया। हेमचन्द्र अनमने भावसे धीरे-धीरे गा रहे थे—

विकसित नलिने यमुना पुलिने, बहुत पियासा रे।

गिरिजायाने पीछेसे गाया—

चन्द्रमाशालिनी, यह मधुयामिनी, मिटी न आशा रे !

गिरिजायाको देखकर हेमचन्द्रका चेहरा खिल उठा। उन्होंने कहा—कौन ? गिरिजाया ! क्या आशा मिट गई ?

गि०—किसकी आशा ? आपकी या मेरी ?

हे०—मेरी आशा ! उसके मिटनेसे तुम्हारी भी मिट जायगी।

गि०—आपकी आशा कैसे मिटेगी ? लोग कहते हैं कि राजे-रजवाड़ोंकी आशा कभी नहीं मिटती।

हे०—मेरी आशा बहुत छोटी है।

गि०—यदि कभी मृणालिनीसे भेंट होगी तो उससे यह बात कहूँगी।

हेमचन्द्र दुखी हो गये। फिर कहा—तो क्या आज भी मृणालिनीका पता नहीं लगा ? आज तुम किस महल्लेमें गीत गाने गई थी ?

गि०—कई महल्लोंमें गई थी। उसका हिसाब रोज-रोज क्या दूँ ? कोई दूसरी बात कहिये।

हेमचन्द्रने ऊँची सांस लेकर कहा—जानता हूं कि विधाता अनुकूल नहीं है। अच्छा, :फिर कल पता लगानेके लिये जाना।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गिरिजाया प्रणाम करके बनावटी विदा मांगनेका भाव दिखाने लगी। जाते समय हेमचन्द्रने उससे कहा—गिरिजाया! तुम तो हँसती न थी, पर तुम्हारी आँखें हँसती थीं। क्या आज तुम्हारा गाना सुनकर किसीने कुछ कहा है?

गि०—कौन कुछ कहेगा। एक लड़की खदेड़कर मारने दौड़ी थी और कहा—"मथुरावासिनीके लिये तो श्यामसुन्दरके सिरमें दर्द हुआ था।"

हेमचन्द्र ऊँची साँस लेकर धीरे-धीरे आप-ही-आप कहने लगे—इतनी मिहनत करनेपर भी यदि मैंने उसका पता नहीं पाया तो अब आशा करना व्यर्थ है। समय गँवाकर अपना काम क्यों बिगाड़ूँ? गिरिजाया! कल तुम्हारे नगरसे चला जाऊँगा।

"अच्छा!" कहकर गिरिजाया धीरे-धीरे गाने लगी—

"सुनि आओ चलि बाजै मुरली, बन बन एका रे।"

हेमचन्द्रने कहा—इस गानेको यहींतक रहने दो। कोई दूसरा गाना गाओ

गिरिजायाने गाया—

गृह तरु शाखापर सखो, शोभित था जो फूल।
उसे उड़ाकर पवनने, दिया हियेमें शूल॥

हेमचन्द्रने कहा—जो फूल हवामें उड़ गया उसके लिये दुःख क्या? अच्छा गीत गाओ।

गिरिजायाने गाया—

निर्विवेक विधिने मृणालको कांटोंसे बिंधवाया है।
उसे हृदयमें सता सताकर जलके बीच डुबाया है॥

हे०—क्या, क्या? मृणाल क्या?

गि०—निर्विवेक विधिने मृणालको कांटोंसे बिंधावाया है।
उसे हृदयमें सता सताकर जलके बीच डुबाया है॥
राजहंस एक सुन्दर देखो उसपर ले बिठलाया है।
पांवोंमें बेड़ी पहनाकर निर्दय उसे फँसाया है॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

नहीं, अब दूसरा गीत गाती हूँ।

हे०—नहीं, नहीं, नहीं, नहीं, यही गीत गाओ, यही गीत गाओ। तुम राक्षसी हो।

गि०—कहो यहांसे राजहँस अब कहां किधर जाओगे।
मेरे हृदय-कमलपर क्या तुम आसन भले जमाओगे॥
राजहंस वह आकरके जब बैठा हृदय कमलपर।
सिहर उठी तब मृणालिनी सब कांटे कांपे थर थर॥

हे०—गिरिजाया! यह गीत तुमको किसने सिखाया है?

गि०—(हँसकर)
नभसे उठे कालके बादल, राजहंस उड़ चला गया।
डूब मरी जलमें मृणालिनी, हृदय कमल वह टूट गया॥

हेमचन्द्रने आंखोंमें आंसू भरकर गद्गद् हो गिरिजाया-से कहा—यह मेरी ही मृणालिनी है। तुमने उसे कहाँ देखा?

गि०—मैंने देखा है—सरोवरमें हवाके भारसे मृणालके ऊपर मृणालिनी कांप रही थी।

हे०—इस समय रूपक मत बांधो, मेरी बातका उत्तर दो। मृणालिनी कहां है?

गि०—इसी नगरमें।

हेमचंद्रने कुछ क्रोध करके कहा—यह तो मैं बहुत दिनोंसे जानता हूं—इस नगरमें वह कहां है?

गि०—हृषीकेश शर्माके घरमें।

हे०—क्यों पापिनी! इतना तो मैंने ही तुमसे कह दिया था। इतने दिनोंतक तो तुम उसका पता न लगा सकी। अब तुम क्या पता लगाओगी?

गि०—पता लगाया है।

हेमचंद्रने दो बूंद-केवल दो ही बूंद आंसू गिराये। फिर कहा—वह यहांसे कितनी दूर है?

गि०—बहुत दूर।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हे०—यहाँसे किस ओर जाना पड़ेगा ?

गि०—यहाँसे दक्खिन, वहांसे पूरब, वहांसे उत्तर, फिर वहाँसे पच्छिम।

हेमचन्द्रने मुक्का बांधकर कहा—इस समय खिलवाड़ मत करो; नहीं तो सिर फोड़ डालूँगा।

गि०—शान्त होइये, क्या रास्ता बता देनेसे आप पहचान सकेंगे ? यदि नहीं पहचान सकेंगे, तो पूछनेका क्या मतलब ? आपकी आज्ञासे मैं आपको अपने संग लेकर चलूँगी।

बादलसे बाहर निकले हुए सूर्यके समान हेमचन्द्रका मुँह प्रफुल्लित हो उठा। उन्होंने कहा—तुम्हारी सब कामनाएँ पूरी हों। कहो, मृणालिनीने क्या कहा ?

गि०-उसने तो कहा था—'जलमें डूबकर मृणालिनी मर गई।'

हे०—मृणालिनी कैसी है ?

गि०—मैंने देखा है। शरीरमें कोई पीड़ा नहीं है।

हे०—सुखमें है या दुःखमें—क्या तुमने पूछा था ?

गि०—शरीरपर गहने हैं। पहननेके लिये सुन्दर कपड़े हैं। और हृषीकेश ब्राह्मणकी कन्याकी सखी बनी हैं।

हे०—जा तेरा नाश हो ! तुमने मेरे मनकी बात कुछ समझी है ?

गि०—वर्षाऋतुके कमलकी तरह उसका मुँह सदा जलमें डूबा रहता है।

हे०—दूसरेके घरमें वह कैसे है ?

गि०—इसी अशोकके गुच्छेके समान अपने बड़प्पनसे आप ही झुकी रहती है।

हे०—गिरिजाया ! तुम्हारी उम्र तो लड़कीकी है, पर तुम्हारी जैसी लड़की और कहीं नहीं दीख पड़ी।

गि०—और सिर फोड़नेके लायक भी मेरे समान कोई दीख न पड़ी होगी।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हे०—मेरे इस अपराधको मनमें मत ला। मृणालिनीने और क्या कहा?

गि०—जेहि दिन जानकि—

हे०—और?

गि०—जेहि दिन जानकि राम निरखि—

हेमचन्द्रने गिरिजायाकी चोटी पकड़कर खींच लिया। उसने कहा—छोड़ो! कहती हूँ, कहती हूँ।

"कहो" कहकर हेमचन्द्रने चोटी छोड दी। तब गिरिजायाने मृणालिनीकी सब बातें आदिसे अन्ततक कह सुनायीं। अन्तमें कहा-महाशय! यदि आप मृणालिनीको देखना चाहते हैं,तो मेरे साथ पहर रात बीतनेपर चलें।

गिरिजायाकी बात खतम हुई। हेमचन्द्र चुपचाप अशोकके नीचे टहलने लगे। कुछ देर बाद बिना कुछ कहे घरके भीतर चले गये। फिर बाहर आकर, गिरिजायाके हाथमें एक पत्र दे बोले—मृणालिनीसे मुलाकात करनेका इस समय मेरा अधिकार नहीं है। तुम रातमें उसके कथनानुसार भेंट करना और उसे यह पत्र देकर कहना—"यदि देवता प्रसन्न होंगे, तो एक बरसके भीतर ही भेंट होगी। मृणालिनी जो कुछ कहे उसे आज ही रातको मुझसे कह जाना।"

गिरिजाया चली गयी। हेमचन्द्र बहुत चिन्तित होकर अशोकके नीचे घासपर लेट गये। हाथपर सिर रखकर पृथ्वीकी ओर मुँह किये सो गये। थोड़ी देरके बाद अकस्मात उनकी पीठपर एक कठोर हाथका स्पर्श आ लगा। सिर घुमाकर उन्होंने देखा कि सामने माधवाचार्य है।

माधवाचार्यने कहा—बेटा! खड़े हो जाओ। मैं तुमसे असन्तुष्ट भी हूँ—सन्तुष्ट भी हूं। तुम हमको देखकर क्यों आश्चर्यमें पड़ गये?

हेमचन्द्रने कहा—आप कहांसे आ रहे हैं? माधवाचार्य कुछ

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
जवाब न देकर कहने लगे—तुम अबतक नदिया न जाकर रास्तेमेंही रुके पड़े हो, इसलिये तो हम तुमसे असन्तुष्ट हैं और मृणालिनीका पता पाकर भी अपनी सत्यतापर दृढ़ रहनेके लिये उससे भेंट होनेके सुअवसरको छोड़ दिया, इसलिये मैं तुमसे सन्तुष्ट हूं। तुम्हारा तिरस्कार न करूंगा, किन्तु यहां अब तुमको देर न करनी होगी। मृणालिनीके उत्तरकी प्रतीक्षा मत करो। चञ्चल हृदयका विश्वास नहीं करना चाहिये। मैं आज नदिया जा रहा हूं। तुमको मेरे साथ चलना होगा। नाव तैयार ही है। अस्त्र-शस्त्र आदि घरसे ले आओ और मेरे साथ चलो।

हेमचन्द्रने ऊंची सांस लेकर कहा—कोई हर्ज नहीं है। मैंने तो सब आशा-भरोसा छोड़ दिया है, चलिये। लेकिन आप यह तो बतलाइये कि आप कामचारी हैं या अन्तर्यामी ?

यह कहकर हेमचन्द्रने घरमें जाकर बनियेसे छुट्टी ली और अपनी चीजें एक नौकरके सिरपर रखकर आचार्यके पीछे हो लिये।

पंचम परिच्छेद

—०❀०—

लुब्ध

मृणालिनी और गिरिजाया–दोनोंको अपनी तय की हुई बात भूली न थी। पहर रात बीतनेपर वे हृषीकेशके घरके पास मिलीं मृणालिनीने गिरिजायाको देखकर पूछा-क्यों, हेमचन्द्र कहां हैं ?

गिरिजायाने कहा—वे नहीं आये।

"नहीं आये ?" यह बात मृणालिनीके अन्तर्हृदयसे गूंज उठी। कुछ देरतक दोनों चुप रहीं। इसके बाद मृणालिनीने पूछा क्यों नहीं आये ?

गि०—यह तो मैं नहीं जानती। लो यह पत्र दिया है—यह

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कहकर गिरिजायाने उसके हाथमें पत्र दे दिया। मृणालिनीने कहा—इसे कैसे पढ़ूं? घरमें दीया जलाकर पढ़ूंगी तो मणि-मालिनी उठ जायगी।

गिरिजायाने कहा—घबड़ाओ मत, मैं दीया, तेल, चकमक, सोला लेकर आयी हूँ। अभी जलाती हूं।

गिरिजायाने बहुत जल्दी दीया जला दिया। आग पैदा करने की आवाज एक घरवालेके कानमें पड़ी। उसने दीयेकी रोशनी भी देखी। गिरिजायाके दीया जलानेपर मृणालिनीने नीचे लिखे हुए पत्रको मनमें ही पढ़ लिया।

"मृणालिनी! क्या कहकर तुम्हारे पास पत्र लिखूं? तुम मेरे लिये घर छोड़कर दूसरेके यहां दुःखसे दिन काट रही हो। ईश्वरकी कृपासे तुम्हारा पता पाया भी तो तुमसे भेंट न कर सका। इससे तुम मुझे प्रेमशून्य समझोगी—नहीं, दूसरी कोई होती तो ऐसा समझती, तुम ऐसा न करोगी। मैं एक विशेष कार्यमें लगा हूं। यदि मैं उसकी अवहेलना करूं, तो कुलकलंक बनूंगा। उसे पूरा करनेके लिये मैंने गुरुसे प्रतिज्ञा की है कि तुम्हारे साथ यहां भेंट नहीं करूंगा। मैं अच्छी तरह जानता हूं कि तुम्हारी भी ऐसी इच्छा नहीं है कि तुम्हारे लिये मैं प्रतिज्ञा भङ्ग करूं। इसलिये किसी तरह एक बरस बिताओ। उसके बाद यदि ईश्वर प्रसन्न होंगे, तो शीघ्र ही तुम्हें रानी बनाकर अपना सुख पूरा करूंगा। इसी चतुर बालिकाके हाथ उत्तर भेजना।"

मृणालिनीने पत्र पढ़कर गिरिजायासे कहा—गिरिजाया! मेरे पास कागज या कलम कुछ भी तो नहीं है। उत्तर कैसे लिखूं? तुम जबानी मेरे ओरसे उत्तर ले जाओ। मैं तुम्हारा विश्वास करती हूँ। तुमको इनाममें अपने शरीरके गहने उतारकर देती हूँ।

गिरिजायाने कहा--उत्तर किसके पास ले जाऊंगी? उन्होंने पत्र देकर यहां भेजते समय मुझसे कहा था—"आज ही रातको

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मेरे यहाँ उत्तर लाना।" मैंने भी स्वीकार कर लिया था। आते समय मैंने विचार किया कि तुम्हारे यहाँ लिखनेका तो कुछ भी सामान नहीं है। इसीलिये ये सब उपाय करके उनको यहाँ लानेके उद्देश्यसे ही गयी थी। पर उनसे भेंट न हुई। सुना है कि वे शामको ही नदिया चले गये।

मृ०—नदिया ?

गि०—नदिया।

मृ०—शामको ही ?

गि०—हां, शामको ही। सुना है कि उनके गुरु आये थे और उनको साथ लेकर चले गये हैं।

मृ०—माधवाचार्य ! माधवाचार्य ही मेरे लिये काल हैं।

कुछ देर चिन्ता करके मृणालिनी बोली—गिरिजाया ! मुझे छुट्टी दो। अब मैं घरके बाहर नहीं रहूँगी।

गिरिजायाने कहा—मैं जाती हूँ, कहकर गिरिजाया चली गयी। उसके मधुर गान सुनती हुई मृणालिनी भी घरमें चली आई।

मृणालिनी घरमें जाकर जैसे ही दरवाजा बंद करनेका उद्योग करने लगी, वैसेही पीछेसे किसीने आकर उसका हाथ पकड़ लिया। मृणालिनी चौंक उठी। हाथ पकड़नेवालेने कहा—पतिव्रते ! अबकी बार जालमें पड़ी हो। तुम्हारी कृपादृष्टि किस पर है ? क्या मैं सुन सकता हूं ?

उस समय मृणालिनी क्रोधसे कांपती हुई बोली—व्योमकेश ! ब्राह्मण कुलांगार, हाथ छोड़।

व्योमकेश हृषीकेशका पुत्र था। वह बहुत बड़ा मूर्ख और चरित्रहीन था। वह मृणालिनीपर रीझ गया था। अपने मनकी कामना पूरी करनेका दूसरा उपाय न पाकर बलात्कार करनेका उसने संकल्प किया था। पर मृणालिनी मणिमालिनीका साथ कभी न छोड़ती थी इसलिये व्योमकेशको आजतक कोई अवसर न मिला था।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मृणालिनीके डांटनेपर व्योमकेशने कहा—क्यों हाथ छोड़ूं। हाथ छोड़नेसे क्या होगा? छोड़ा-छोड़ीका काम क्या है? अपने मनका कुछ दुःख सुनाता हूँ, क्या मैं मनुष्य नहीं हूं? यदि एकका मन प्रसन्न करती हो, तो दूसरेका नहीं कर सकती?

मृ०—कुलाङ्गार! यदि हाथ नहीं छोड़ेगा तो अभी चिल्लाकर सबको जगा दूंगी।

व्यो०—जगाओ। मैं उनसे कह दूंगा कि यह अपने यारसे मिलने गयी थी, इसलिये पकड़ लिया है।

मृ०—तब तुम्हारा नाश हो! यह कहकर मृणालिनी बलसे अपना हाथ छुड़ाना चाहा, पर सफल न हो सकी। व्योमकेशने कहा—घबड़ाओ मत। अपना मतलब पूरा कर तुमको छोड़ दूंगा! इस समय तुम्हारी सखी बहिन मणिमालिनी कहां है?

मृ०—तुम्हारी बहिन मैं ही हूं।

व्यो०—तुम मेरी ब्राह्मणीके भाईकी बहिन हो-मेरी तो प्राणाधिकाराधिका और सर्वार्थसाधिका हो।

यह कहकर व्योमकेश मृणालिनीको हाथसे खींचकर ले चला। जिस समय माधवाचार्य मृणालिनीको उठा लाया था, उस समय भी वह स्त्रियोंकी तरह चिल्लाई नहीं थी और न इसी समय ही चिल्लाई। किन्तु मृणालिनी अब अधिक न सह सकी। उसने अपने मनमें लाखों ब्राह्मणोंको प्रणाम करके व्योमकेशको जोरसे लात मारी। व्योमकेश लात खाकर बोला—वाह! वाह! मैं धन्य हुआ। इन चरणोंके स्पर्शसे मुझे मोक्षपद मिलेगा। सुन्दरी! तुम मेरी द्रौपदी हो, और मैं तुम्हारा जयद्रथ हूँ।

पीछेसे किसीने कहा—और मैं तुम्हारा अर्जुन हूँ।

चौंककर व्योमकेश, कातर स्वरमें बड़े जोरसे चिल्ला उठा—राक्षसी! तेरे दांतोंमें क्या विष है? यह कहकर मृणालिनीके हाथको छोड़ अपनी पीठ हाथोंसे सुहराने लगा। छूनेपर जान पड़ा कि पीठसे खून निकल रहा है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हाथ छूट जानेपर भी मृणालिनी न भगी। वह भी पहले व्योमकेशकी ही तरह अचम्भेमें पड़ गयी कि मैंने तो व्योमकेश-को दांतोंसे काटा नहीं! भालूके समान काम करना तो मुझे उचित नहीं है! उसी समय तारोंके उजालेमें एक छोटी लड़कीकी मूर्त्ति सामनेसे जाती हुई दीख पड़ी। गिरिजायाने उसका कपड़ा खींच कर धीरेसे कहा—"भाग जाओ" और आप भी भाग गई।

भागना मृणालिनीके स्वभावके अनुकूल न था। वह भागी नहीं। व्योमकेशको अपने आँगनमें चिल्लाते और कातर स्वरमें रोते देखकर वह मन्द-मन्द गतिसे अपने सोनेके कमरेमें चली गयी।

किन्तु उस समय व्योमकेशके चीत्कारसे सभी घरवाले जग उठे। सामने हृषीकेश आया और पुत्रको घबड़ाया देखकर पूछा—क्या हुआ है? क्यों साँड़की तरह चिल्ला रहे हो?

व्योमकेशने कहा—"मृणालिनी अपने यारसे मिलने गई थी। मैंने उसको पकड़ा है, इसलिये उसने मेरी पीठ दांतोंसे काट ली है।"

हृषीकेशको लड़केके दुष्टाचरणका कुछ भी पता नहीं था। मृणालिनीको आँगनसे जाती हुई देखकर उसे लड़केकी बात ठीक जँच गयी। उस समय उसने मृणालिनीसे कुछ न कहा। वह चुपचाप उस गजगामिनीके पीछे उसके सोनेके कमरेमें गया।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

षष्ठम परिच्छेद

--❀:❀--

हृषीकेश

मृणालिनीके साथ ही उसके सोनेके कमरेमें आकर हृषीकेश ने कहा—मृणालिनी ! तुम्हारी यह चाल कैसी है ?

मृ०—मेरी चाल कैसी है ?

हृ०—मुझे भी मालूम नहीं कि तुम किसकी लड़की हो और तुम्हारा चरित्र कैसा है ? गुरुके कहनेसे मैंने तुमको घरमें रहने दिया है। तुम मेरी लड़की मणिमालिनीके साथ एक बिछौनेपर सोती हो—तुम्हारी चाल कुल्टाकी तरह क्यों है ?

मृ०—जो मुझे कुल्टा कहता है, वह झूठा है।

क्रोधसे हृषीकेशके ओठ काँपने लगे। कहा—क्यों पापिनी ! मेरा ही खायेगी और मुझे ही गाली देगी ? जा, मेरे घरसे। माधवाचार्यके क्रोधकी परवाह कर मैं अपने घरमें काला साँप नहीं पाल रखूंगा।

मृ०—बहुत अच्छा। कल सवेरे तुम मुझे न देख पाओगे।

हृषीकेश समझता था कि मृणालिनी मेरे घरसे निकलकर आश्रयहीन हो जायगी, उसे रहनेको कहीं जगह नहीं मिलेगी। उस समय उससे ऐसा उत्तर न दिया जा सकेगा। किन्तु मृणालिनीको आश्रय-हीन होनेकी आशंकासे कुछ भी न डरते देखकर उसने मनमें सोचा कि कहीं और जगह पानेकी आशासे ही वह ऐसी बातें कर रही है। इसलिये हृषीकेशका क्रोध और भी तेज हो गया। उसने जोरसे कहा—कल सवेरे ! आज ही यहांसे भाग ?

मृ०—जो आज्ञा। मैं सखि मणिमालिनीसे विदा होकर आज ही यहांसे चली जाती हूं। यह कहकर मृणालिनी उठकर चली।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हृषीकेशने कहा—मणिमालिनीके साथ कुछ ... या बात-चीत ?

इस बार मृणालिनीकी आखें डबडबा आयीं। वह बोली—वही होगा। मैं कुछ लेकर न आई हूँ और न कुछ लेकर जाऊँगी। एक साड़ी पहनकर जा रही हूँ। मेरा प्रणाम स्वीकार कीजिये।

इतना कहकर बिना दूसरी बात कहे ही मृणालिनी घरसे बाहर निकल पड़ी।

जिस तरह घरके और रहनेवाले व्योमकेशकी चिल्लाहट सुनकर जग गये थे उसी तरह मणिमालिनी भी उठ गयी थी। मृणालिनीके साथ अपने पिताको उसके सोनेके कमरेमें आते देख मणिमालिनी अपने भाईको बुरा-भला कह रही थी और उसकी बेजा हरकतके लिये उसे डाट रही थी। भाईको डाँट-डपटकर जब वह लौट रही थी तब उसने मृणालिनीको बड़ी तेजीसे जाते देखा। मणिमालिनीने पूछा—सखी, इतनी तेजीसे रातको कहाँ जा रही हो ?

मृणालिनीने कहा—सखी मणिमालिनी! बहुत दिनतक जीती रहो। मुझसे बात मत करो। तुम्हारे पिताने मना किया है।

मणि०—यह क्या हुआ ? तुम रोती क्यों हो ? सर्वनाश हुआ। न जाने पिताने क्या कह दिया है ? सखी ! लौट चलो, क्रोध मत करो।

मणिमालिनी मृणालिनीको न लौटा सकी। पहाड़की चोटी-से लुढ़के हुए पत्थरके टुकड़ेके समान अभिमानिनी साध्वी मृणा-लिनी चली गई। मणिमालिनी घबड़ाकर पिताके पास गई। मृणालिनी भी घरसे बाहर आई।

बाहर आकर उसने देखा कि पहले बतलाये हुए स्थानपर गिरिजाया राह देख रही है मृणालिनीने उसे देखकर कहा—तुम अबतक क्यों खड़ी हो ?

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गि०—मैं तुमको भागनेके लिये कह आई थी। तुम आती हो या नहीं, यही देखकर जानेके लिये खड़ी हूं।

मृ०—क्या तुमने ब्राह्मणको दांतोंसे काटा था ?

गि०—तो हानि ही क्या है ? वह ब्राह्मण गुरु तो नहीं है।

मृ०—तुम गाती हुई चली गई थी वह तो मैंने देखा था।

गि०—उसके बाद तुम लोगोंकी बातचीत सुनकर देखनेके लिये लौट आई थी। मनमें इच्छा हुई कि चलके देखूँ। वह मुंहझौंसा एक दिन मुझे "काली चींटी" कहकर ठट्टा उड़ाता था। उस दिनका बदला लेना बाकी था। अच्छा मौका पाकर उस ब्राह्मणका कर्ज अदा कर दिया। इस समय तुम कहाँ जाओगी।

मृ०—क्या तुम्हारे घरद्वार है।

गि०—हाँ, पत्तोंकी झोपड़ी है।

मृ०—वहां और कौन रहता है ?

गि०—सिर्फ एक बुढ़िया रहती है। उसको "आजी" कहती हूँ।

मृ०—चलो, तुम्हारे घर चलूंगी।

गि०—चलो, मैं भी यही चाहती हूं।

यह कह दोनों चलीं। रास्तेमें गिरिजायाने कहा—लेकिन वह तो झोपड़ी है, वहां कितने दिनोंतक रहोगी।

मृ०—कल सवेरे कहीं और जगह चली जाऊंगी।

गि०—कहाँ। मथुरा ?

मृ०—मथुरामें अब मेरे लिये स्थान नहीं है।

गि०—तब कहाँ ?

मृ०—यमपुरी।

इसके बाद कुछ देरतक दोनों चुप रहीं। फिर मृणालिनीने कहा—क्या इस बातका तुम्हें विश्वास है।

गि०—विश्वास क्यों न होगा। किन्तु वह जगह तो हई है,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जब इच्छा हो तभी जा सकती हो। इसी समय क्यों नहीं एक दूसरी जगह चली जाती?

मृ०—कहाँ?

गि०—नदिया।

मृ०—गिरिजाया! तुम भिखारिनके भेषमें कोई मायाविनी हो। तुमसे कोई बात नहीं छिपाऊँगी। तुम मेरी बड़ी हित चाहनेवाली हो। नदिया जाऊँगी, यह मैंने ठीक कर लिया है।

गि०—अकेली जाओगी?

मृ०—साथी कहाँ पाऊंगी?

गिरिजायाने गाया—

चली बदरिया देखने, चहकि चातकिनि धाय।
तेरे संगकी जाइ हैं, हमहिं देहु बतलाय॥
चमकति बिजुरी मेघमें, अति प्रिय मोहि लखाति।
तेरे संग जाये कोऊ, गिरिजाया अब जाति॥

मृ०—इसका क्या रहस्य है, गिरिजाया?

गि०—मैं जाऊंगी।

मृ०—सचमुच?

गि०—हां, सच जाऊंगी।

मृ०—क्यों जाओगी?

गि०—मेरे लिये सब जगह एक ही तरह है। राजधानीमें बहुत भीख मिलती है।

———

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सप्तम परिच्छेद

—:❀:—

गौड़ेश्वर

एक बड़े विशाल सभामण्डपमें नवद्वीपको उजाला करनेवाले राजाधिराज गौड़ेश्वर विराजमान थे। संगमर्मरके ऊँचे चबूतरे-पर मणि-मुक्तासे जटित एक सिंहासन रखा था। उसपर रत्नोंसे विभूषित छत्र लगा हुआ था। उसके नीचे वृद्ध राजा बैठे थे। उस सिंहासनके ऊपर एक सफेद जरीकी चांदनी तनी हुई थी, जिसमें चारों ओर मोतियोंकी झालरें लगी हुई थीं। चांदनीमें तरह-तरहके चित्र अङ्कित किये गये थे। दूसरे आसनपर बैठे हुए सभापंडितको, होमकी विभूतिसे भूषित सुन्दर ब्राह्मण मंडली घेरकर बैठी थी। जिस आसनपर कभी हलायुध बैठा करते थे उसी आसनपर आज एक अल्पबुद्धि और हांमें हाँ मिलानेवाला पुरुष बैठा है। दूसरी ओर प्रधान दीवान, न्यायाधीश आदि प्रमुख राज-पुरुष बैठे थे। नायब दीवान, बड़े राजकुमारके दीवान, खेत नापनेवाले, ऊपरके काम करनेवाले दण्ड देनेवाले, चोर पकड़नेवाले, तहसीलदार, बगीचोंके दारोगा, गृहनिरीक्षक, चौह-द्दकी रखवाली करनेवाले, बनकी रखवाली करनेवाले, मुकद्दमा चलानेवाले आदि राजकर्मचारी बैठे थे सभाका प्रधान चोपदार हथियार लेकर बड़ी चौकसीसे सभाकी रखवाली कर रहा था। दोनों ओर भाट, बंदी आदि स्तुति करनेवाले एक पंक्तिमें खड़े थे। सबसे दूर एक कुशकी चटाईपर पंडितवर माधवाचार्य बैठे थे।

राजसभाके सब काम नियमपूर्वक समाप्त हुए। सभा विस-र्जन करनेकी तैयारी हुई। उस समय माधवाचार्यने महाराजको

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सम्बोधित कर कहा—महाराज ! ब्राह्मणका अनुचित वचन क्षमा कीजियेगा। आप नीति-शास्त्रके बड़े भारी ज्ञाता हैं। इस समय समस्त भूमण्डलके राजाओंमें दूरदर्शी एवं प्रजापालन करनेवाले आप ही जन्मसे राजा हैं। यह बात आप अच्छी तरह जानते हैं कि राजाका प्रधान कर्त्तव्य शत्रुका नाश करना ही है। आपने प्रबल शत्रुको दबानेके लिये क्या उपाय किया है ?

राजाने कहा—आप क्या आज्ञा देते हैं ? सब बातें बूढ़े राजाको मालुम नहीं हैं।

माधवाचार्यके फिर कुछ कहनेकी प्रतीक्षा न करके धर्माधिकारी पशुपतिने कहा—महाराज ! माधवाचार्य श्रीमानसे पूछते हैं कि राज्यके शत्रुओंको दबानेका क्या उपाय किया गया है ? बंगेश्वरके किस शत्रुका आजतक दमन नहीं किया गया ? इस समय आचार्यने उसे बतलाया नहीं। वे स्पष्ट कहें।

माधवाचार्यने हंसकर ऊंचे स्वरमें कहा—महाराज ! तुर्की लोगोंने सारे भारतको अपने अधीन कर लिया है। अब वे मगध विजयकर शीघ्रही गौड़ राज्यपर धावा करनेका प्रयत्न कर रहे हैं।

राजाने इस बातको सुन लिया। उन्होंने कहा—आप तुर्की लोगोंकी बात कहते हैं ? क्या वे आ गये हैं !

माधवाचार्यने कहा—ईश्वर ही रक्षा कर रहे हैं। अबतक भी वे लोग यहाँ नहीं आये। किन्तु आ जानेपर आप उन्हें कैसे भगायेंगे ?

राजाने कहा-मैं क्या करूंगा ? मेरा यह शरीर जर्जर हो गया। अब मुझसे लड़ाई न हो सकेगी। इस समय यदि मैं मर जाऊं तो अच्छा हो। तुर्की लोग आते हैं, तो आवें।

राजाकी यह बात सुनकर सभाके सब लोग चुप हो गये। केवल महासामन्तकी म्यानकी तलवार झनक उठी। और सब लोगोंके मुंहपर कोई नया भाव न देख पड़ा। माधवाचार्यकी आंखोंसे एक बूंद आंसू निकल पड़ा।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पहले सभापंडित; दामोदरने कहा—आचार्य ! आप क्यों घबड़ा गये हैं ? महाराजने जो बात कही है, वह शास्त्र-संगत है। शास्त्रोंमें ऋषियोंने लिखा है कि "तुर्की लोग इस देशपर शासन करेंगे।" शास्त्रका लिखा अवश्य होगा। उसे कौन टाल सकता है ? ऐसी दशामें युद्ध करनेकी क्या आवश्यकता है ?

माधवाचार्यने कहा—अच्छा, पण्डितजी महाराज ! मैं पूछता हूँ, यह बात किस शास्त्रमें लिखी है ?

दामोदरने कहा—विष्णुपुराणमें। जैसे—

माध०—"जैसेको" अलग रखिये। कहिये मैं विष्णुपुराण लाऊं ? और आप दिखलाइये कि यह बात उसमें कहाँ लिखी है।

दामोदर—क्या मैं इतना भूल गया हूँ ? अच्छा ! याद करके बतलाता हूं। देखें, मनुने यह बात लिखी है या नहीं ?

माध०—क्या गौड़ेश्वरके सभापण्डित मानव धर्मशास्त्रको भी अच्छी तरह नहीं जानते ?

दामोदर—यह क्या बात है ! आपने तो मुझे हैरान कर दिया। आपके सामने सरस्वती भी मलिन पड़ जाती हैं। मेरी कौन गिनती। आपके सामने ग्रंथका नाम तो स्मरण नहीं आता पर श्लोक सुनिये।

माध०—यह असम्भव नहीं है कि गौड़ेश्वरके सभापण्डित अनुष्टुप छन्दमें कविता बना सकते हैं। मैं चिल्लाकर कहता हूँ, कि किसी भी शास्त्रमें गौड़राज्यपर तुर्कोंकी विजयके सम्बन्धमें कोई बात नहीं लिखी है।

पशुपतिने कहा—क्या सभी शास्त्रोंमें आपकी पहुँच है।

माधवाचार्यने कहा—यदि आप कर सकें तो मुझे "अशास्त्रज्ञ" प्रमाणित कीजिये।

सभापण्डितके एक साथीने कहा—मैं प्रमाणित करूंगा। शास्त्रोंमें अपनी प्रशंसा करनेकी निन्दा लिखी है। अपनी

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

प्रशंसा करनेवाला यदि अपनेको पंडित कहता है, तो मूर्ख कौन है?

माधवाचार्यने कहा—मूर्ख तीन हैं। जो अपनी रक्षाके लिये उद्योग नहीं करते, जो उद्योग न करनेकी राय देते, और जो अपनी बुद्धिसे बाहरके विषयमें व्यर्थ बकवाद करते हैं—ये ही मूर्ख हैं। आप तीनों ही प्रकारके मूर्ख हैं।

सभापण्डितका साथी मुँह नीचा करके बैठ गया।

पशुपतिने कहा—मुसलमान आवें, हमलोग लड़ेंगे।

माधवाचार्यने कहा—बहुत अच्छा, बहुत अच्छा! आपका जैसा नाम है वैसा ही प्रस्ताव आपने रखा। भगवान आपको कुशलपूर्वक रखें। मैं केवल इतना ही पूछना चाहता हूं कि यदि युद्ध ही करनेका निश्चय किया गया है तो उसके लिये क्या उपाय ठीक किया गया है?

पशुपतिने कहा—एकान्तमें ही कोई सलाह करनी चाहिये। सभामें इसकी बात करना ठीक नहीं। लेकिन जो घोड़े, पैदल और नावोंकी सेना इकट्ठी की जा रही है, उसका पता आपको इस नगरीमें कुछ दिन घूमनेसे ही लग जायगा।

मा०—कुछ-कुछ तो जानता हूँ।

पशु०—तब यह प्रस्ताव क्यों रखते हैं?

मा०—प्रस्तावका अर्थ यही है कि एक वीर पुरुष यहाँ आये हुए हैं। मगधके युवराज हेमचन्द्रकी शूरताकी ख्याति आपने सुनी होगी?

प०—बहुत सुनी है। यह भी सुना है कि वे श्रीमान्‌के ही शिष्य हैं। आप कह सकते हैं कि ऐसे वीर पुरुषके हाथोंसे रक्षित मगध राज्य शत्रुओंके अधीन कैसे हो गया?

मा०—यवनोंके उपद्रवके समय युवराज बाहर थे। केवल यही कारण है।

प०—क्या वे अभी नवद्वीपमें आये हुए हैं?

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मा०—हाँ, आये हैं। राज्य हड़पनेवाले यवन इसी देशकी ओर बढ़ रहे हैं। इसी देशमें वे उनके साथ लड़ाईकर उन डाकुओंको दण्ड देंगे। गौड़ राज्य उनसे सुलह करके यदि शत्रुके नाश करनेकी चेष्टा करेगा, तो इसमें दोनोंका ही मङ्गल है।

प०—राजाके अपने आदमी आज ही उनकी सेवाके लिये नियुक्त किये जायँगे। उनके रहनेके लिये उत्तम वासस्थान दिया जायगा। सुलह करनेकी राय उचित समयपर ठीक की जायगी।

इसके बाद राजाकी आज्ञासे सभा विसर्जित हुई।

———

अष्टम परिच्छेद

कुसुम निर्मिता

नगरके बाहर गंगाके किनारे एक ऊंचे महलमें राजपुरुषोंने हेमचन्द्रको ठहराया। हेमचन्द्रने माधवाचार्यकी रायसे उस रमणीय भवनमें रहना निश्चय किया।

नवद्वीपमें जनार्दन नामक एक वृद्ध ब्राह्मण रहते थे। वे बूढ़े और बहरे होनेके कारण असमर्थ और असहाय थे। उनकी स्त्री भी बूढ़ी और शक्तिहीन थी। थोड़े दिन हुए कि इनकी झोपड़ी भी भयंकर आँधीके झोंकेसे टूट फूट गयी थी। उसी दिनसे ये रहनेकी जगह न मिलनेके कारण इसी बड़े मकानके पास राजपुरुषोंकी आज्ञा लेकर रहा करते थे। यह बात सुनकर कि एक राजकुमार यहाँ आकर रहेंगे, वे उस स्थानको छोड़कर दूसरी जगहकी तलाश कर रहे थे।

हेमचन्द्र यह सुनकर दुखी हुए। उन्होंने विचार किया कि इस बड़े मकानमें हम दोनोंके रहनेके लिये स्थान काफी है। ब्राह्मण क्यों बिना घरके रहेंगे? हेमचंद्रने दिग्विजयसे कहा—जाकर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ब्राह्मणको मना करो कि वह घर न छोड़ें। नौकरने मुस्कुराकर कहा—यह काम नौकरसे तो न होगा। ब्राह्मण देवता मेरी बात ही नहीं सुनते।

उसका कहना ठीक था-ब्राह्मणने उसकी कई बातें न सुनी थीं, कारण वे बहरे थे। हेमचन्द्रने सोचा—ब्राह्मण शायद अभिमानसे नौकरकी बात नहीं सुनते, इसलिये वे आप ही उनसे कहने गये। हेमचन्द्रने ब्राह्मणको प्रणाम किया।

जनार्दनने आशीर्वाद देकर पूछा—तुम कौन हो?

हे०—मैं आपका सेवक हूँ।

ज०—क्या कहा? तुम्हारा नाम रामकृष्ण है?

हेमचन्द्रको मालूम हुआ कि ब्राह्मण ऊंचा सुनते हैं। इसलिये उन्होंने जरा जोरसे कहा—मेरा नाम हेमचन्द्र है—मैं ब्राह्मणोंका दास हूँ।

ज०—अच्छा, अच्छा! पहले मैं अच्छी तरह न सुन सका। तुम्हारा नाम हनुमानदास है?

हेमचन्द्रने सोचा—नामकी बात हटाओ। काम पूरा होना चाहिये। उन्होंने कहा—नवद्वीपके राजाका यह भवन है। उन्होंने इसे मेरे रहनेके लिये मुझे दिया है। मुझे मालूम हुआ है कि मेरे आनेसे आप इस स्थानको छोड़ रहे हैं।

ज०— नहीं मैं अभीतक गङ्गा स्नान करने नहीं गया। अब स्नान करने जाऊंगा।

हे०—(ऊंचे स्वरसे) अपने समयपर स्नान कीजियेगा। इस समय मैं आपसे प्रार्थना करने आया हूँ कि आप घर छोड़कर न जायं।

ज०— घरमें भोजन नहीं करूं? तुम्हारे घरमें आज क्या है? क्या श्राद्ध है?

हे०—अच्छा! आपके लिये भोजनका भी बन्दोबस्त करूंगा। इस समय तो जैसे पहले रहा करते थे वैसे ही रहियें।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ज०—अच्छा, अच्छा! ब्राह्मण-भोजन करानेपर दक्षिणा तो दी ही जाती है। उसके लिये तो कुछ कहना ही न होगा। तुम्हारा घर कहां है?

हेमचन्द्र हताश होकर लौट रहे थे कि पीछेसे किसीने उनकी चादर पकड़कर खींची। हेमचन्द्रने फिरकर देखा। देखकर पहले तो ऐसा जान पड़ा कि किसी फूलकी बनी हुई देवीकी मूर्त्ति है। फिर देखा तो जान पड़ा कि वह मूर्त्ति सजीव है। तीसरी बार देखा तो मालूम हुआ कि वह मूर्त्ति नहीं है। वरन् विधाताकी कारीगरीकी सीमा-एक बालिका या पूर्ण यौवनवती युवती है।

हेमचन्द्र उसे देखकर यह निश्चय न कर सके कि वह बालिका है या युवती।

वीणासे भी मधुर स्वरमें सुन्दरीने कहा—तुम बाबासे अभी क्या कह रहे थे? क्या वे तुम्हारी बात सुन सकते थे?

हेमचन्द्रने कहा—नहीं, वे मेरी बात तो न सुन सके। तुम कौन हो?

बालिकाने कहा—मेरा नाम मनोरमा है।

हे०—ये तुम्हारे बाबा हैं?

म०—हां, तुम बाबासे क्या कहते थे।

हे०—मैंने सुना है कि ये इस घरको छोड़ देनेका विचार कर रहे हैं। मैं उन्हें ही मना करने आया था।

म०—इस घरमें एक राजकुमार आये हैं। क्या वे हम लोगोंको इसमें रहने देंगे?

हे०—वह राजकुमार तो मैं ही हूँ। मेरा अनुरोध है कि तुम लोग यहीं रहो।

म०—क्यों?

हे०—'क्यों' का जवाब नहीं। हेमचन्द्रने दूसरा जवाब न पाकर कहा—क्यों, समझ लो कि यदि तुम्हारा भाई आकर इस घरमें रहता तो क्या वह तुम लोगोंको यहाँसे निकाल देता?

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

म०—तुम मेरे भाई तो नहीं हो ।

हे०—आजसे मैं तुम्हारा भाई हुआ । आया समझमें ?

म०—समझी । पर बहिन समझकर कभी हमारा तिरस्कार तो नहीं करोगे ?

हेमचन्द्रको मनोरमाकी बातचीतके ढंगसे आश्चर्य हुआ। उन्होंने सोचा-यह भोली-भाली बालिका है या पगली ? कहा—क्यों तिरस्कार करूंगा ?

म०—शायद मुझमे कुछ अपराध हो जाय ।

हे०—अपराध करनेपर तो सभी तिरस्कार नहीं करते ?

मनोरमा उदास हो खड़ी रही । बोली—मैंने कभी भाई नहीं देखा है । क्या उससे लजाना होता है ?

हे०—नहीं ।

म०—तो मैं तुमसे नहीं लजाऊंगी । क्या तुम मुझसे लाज करोगे ?

हेमचन्द्र हंसकर बोले—मैं अपनी बात तुम्हारे बाबासे न कह सका । क्या करूं, इसका कुछ उपाय है ?

"मैं उपाय बतलाती हूँ" यह कहकर मनोरमाने धीरेसे कानमें जनार्दनसे हेमचन्द्रका अभिप्राय कह सुनाया । देखकर हेमचन्द्र अचम्भेमें आ गये कि मनोरमाकी धीमी आवाजको बहरा समझ गया ।

ब्राह्मणने प्रसन्न होकर राजपुत्रको आशीर्वाद दिया । और कहा—"मनोरमा ! ब्राह्मणीसे कहो, राजपुत्र उसके नाती हुए—आकर आशीर्वाद दें ।" यह कहकर ब्राह्मण आप भी ब्राह्मणीको पुकारने लगे । ब्राह्मणी दूसरी जगह घरके काममें लीन थीं, पुकारना न सुन सकीं । ब्राह्मणने क्रोध करके कहा-ब्राह्मणीमें यह बड़ा ऐब है कि वह कानोंसे कम सुनती है ।

———

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

नवम परिच्छेद

नावपर

हेमचन्द्र उस फूलबागके मकानमें ठहरे। और मृणालिनी—घरसे निकाली हुई, सताई हुई, असहाया, अनाथ-मृणालिनी कहां है?

संध्या समय लाल बादल अपना सुनहला रंग छोड़ धीरे-धीरे काले होने लगे। रातकी ओढ़ाई हुई अन्धकारकी चादरसे गंगाका विशाल हृदय धुंधला हो गया। सभामण्डलमें सेवकोंके हाथोंमें जलते हुए दीयेके समान अथवा प्रातःकाल फुलवाड़ीमें खिले हुए फूलोंके समान आकाशमें तारे चमकने लगे। नदीके धुंधले हृदयपर रातकी हवा कुछ वेगसे बहने लगी। उसके बहनेसे कामिनीके हृदयमें नायकके स्पर्शसे उत्पन्न होनेवाली कँपकँपीके समान नदीके फेन सफेद फूलकी मालाकी तरह गुंथे जाने लगे। जन समूहके कोलाहलके समान लहरकी कल-कल ध्वनि उठने लगी। मल्लाह अपनी नावोंको तीरपर लगाकर रातमें दूसरी जगह ठहरनेका विचार करने लगे। एक छोटी सी डोंगी दूसरी नावोंसे अलग एक गड्ढेकी ओर आ लगी। मल्लाह खाने-पीनेकी तैयारी करने लगे।

उस छोटी नावमें केवल दो स्त्रियां चढ़ी हुई थीं। पाठकोंसे बताना न होगा कि ये मृणालिनी और गिरिजाया हैं।

गिरिजायाने मृणालिनीसे कहा—आजका दिन तो कट गया। मृणालिनीने कुछ उत्तर न दिया।

गिरिजायाने फिर कहा—कलका दिन भी काटूंगी, परसोंका दिन भी काटूंगी, क्यों न काटूंगी?

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

तो भी मृणालिनीने कुछ जवाब नहीं दिया; केवल एक दीर्घ श्वास लिया।

गिरिजायाने कहा—ठकुरानी! यह क्या है? रात-दिन चिन्तामें पड़े रहनेसे क्या होगा। यदि हमलोगोंका नदिया आना अच्छा नहीं हुआ, तो चलो फिर चलें।

मृणालिनीने अब जवाब दिया। बोली—कहां जाऊँ?

गि०—चलो, हृषीकेशके घर चलें।

मृ०—ना, इसी गङ्गाजलमें डूब मरूँगी।

गि०—चलो, तब मथुरा चलें।

मृ०—मैंने तो कहा है कि वहाँ मेरे लिये स्थान नहीं है। कुलटाकी तरह रातके समय जिस पिताके घरको छोड़ आई हूँ उसी पिताके घर अब कैसे मुँह दिखलाऊँगी।

गि०—किन्तु तुम अपने मनसे तो नहीं आई हो। किसी बुरी नीयतसे भी नहीं आई हो, तो जानेमें हानि ही क्या है?

मृ०—इस बातपर कौन विश्वास करेगा? जिस पिताके घर लाड़-प्यारकी मूरत थी, उसी पिताके घर लोगोंकी नीची निगाहमें कैसे रहूँगी?

गिरिजाया देख न सकी कि मृणालिनीकी आँखोंसे झरझर आँसू गिर रहे हैं। गिरिजायाने पूछा—तब कहाँ जाओगी?

मृ०—जहाँ जा रही हूँ।

गि०—यह तो सुखकी यात्रा है। उदास क्यों हो? जिसे देखना चहती हो, उसीको देखने जाती हो। इससे बढ़कर और अधिक सुख क्या होगा?

मृ०—नदियामें हेमचन्द्रसे मेरी भेंट न होगी।

गि०—क्यों? क्या वे वहाँ नहीं हैं?

मृ०—वहीं हैं, पर तुम्हें तो अच्छी तरह मालूम है कि मुझसे एक बरस तक भेंट न करनेका ही उनका व्रत है। क्या मैं उस व्रतको भंग कराऊँगी।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गिरिजाया चुप हो गई। मृणालिनीने फिर कहा--और कौनसा मुँह लेकर उनके सामने खड़ी हूँगी। क्या मैं कहूँगी कि हृषीकेशपर क्रोध करके चली आई हूँ। या यह कहूँगी कि हृषीकेशने मुझे कुलटा कहकर घरसे निकाल दिया है।

गिरिजाया कुछ देरतक चुप रहकर बोली--तो क्या नदिया-में हेमचंद्रसे तुम्हारी मुलाकात न होगी?

मृ०--नहीं।

गि०--तो क्यों जा रही हो?

मृ०--वे हमको न देख सकेंगे, पर मैं उनको देख लूँगी। उन्हें देखनेके लिये ही जा रही हूँ।

गिरिजाया हँसी न रोक सकी। बोली--तब मैं गीत गाऊँगी।

श्याम! तुम्हारे चरणोंमें, सौंपा है मैंने प्राण रतन।
नाथ तुम्हें अर्पण करूँगी, दो दिनका अपना जोवन॥
इसी रतनके ठीक बराबर लाकर मोल चुकाना।
निशिदिन अपना चन्द्र-बदन, हँस हँसके हमें दिखाना॥

ठकुरानी! तुमतो उनको देखकर जीओगी किन्तु मैं तुम्हारी दासी हूँ। उनको देखनेसे मेरी भूख तो न जायगी। मैं क्या खाकर रहूंगी?

मृ०--मैं दो एक कारीगरीके काम जानती हूँ। माला गूँथना जानती हूँ, तसवीर बनाना जानती हूं, कपड़ेपर बेल-बूटा काढ़ सकती हूँ। तुम बाजारमें मेरी कारीगरीकी चीजें बेच दिया करना।

गि०--और मैं घर-घर गीत गाऊँगी। क्या 'मृणाल अधम' वाला गाऊँ?

मृणालिनने कुछ हँसते हुए क्रोधभरी नजरसे गिरिजायाकी ओर देखा।

गिरिजायाने कहा--इसी तरह मेरी ओर देखनेसे मैं गीत गाऊँगी। ऐसा कहकर गाने लगी--

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

डाली है किसने तरंगमें, मेरी आशाकी नैया।
कौन चलेगा साथ हमारे, होगा कौन खेवैया।

मृणालिनीने कहा—यदि इतना डरती थी तो अकेले क्यों आई।

गिरिजाया—आगेकी कौन जाने—कहकर गाने लगी।

चढ़ी सवेरे उसी नावपर, मीठी हवा लगी बहने।
लगे गरजने बादल नभमें, बिजली लगी तड़पने॥

मृणालिनीने कहा—क्यों नहीं तीरपर लौट जाती

गिरिजाया गाने लगी—

किसी तरहसे नाव चलाकर, लगी किनारे आने।
वहां कटीले तरुवर देखे, बिच्छू, सांप भयाने॥

मृणालिनीने कहा—तब क्यों नहीं डूब मरती?

गिरिजायाने कहा—मरनेमें तो हानि नहीं है। पर—यह कहकर गाया—

जिसके लिये सजाई थी, मैंने वह सुन्दर नैया।
कभी न उसपर पैर दिया वह निष्ठुर, मोर खेवैया॥

मृणालिनीने कहा—गिरिजाया! यह किस नीरस आदमीका गाना है।

गि०—क्यों?

मृ०—मैं होती तो नावको ही डुबा देती।

गि०—साध लगती है।

मृ०—हां, साध लगती है?

गि०—कब तुमने जलमें रत्न देखा है?

—:※:—

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

[illegible]

[illegible] होती थी । [illegible] कभी बातचीत [illegible] थी । मनोरमाका [illegible] जनक जान पड़ने लगा । [illegible] नहीं लगता था । [illegible] कभी-कभी बड़ी [illegible] बात-चीतके बहाने [illegible] कहाँ है । मनोरमाने [illegible] पूछा—मनोरमा ! [illegible] जवाब दिया—[illegible]

[illegible]

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

है। इन सब बातोंका विचारकर हेमचन्द्र गौड़ न गये। तौ भी मृणालिनीकी चिन्ता सदा हृदयमें बनी रहती थी। एक दिन सन्ध्या समय वे सोनेके कमरेमें पलगपर लेटे मृणालिनीको चिन्तामें मग्न थे। चिन्तासे भी हृदयको शांति मिलती थी। खुली हुई खिड़कीसे हेमचन्द्र प्रकृतिकी शोभा देख रहे थे। शरद ऋतुकी चाँदनी रात थी। निर्मल आकाश तारोंसे जगमगा रहा था। समीप ही खिड़कीको राहसे गंगा भी दीख पड़ती थीं। गङ्गा का पाट बड़ा था और वह बहुत दूरतक फैली हुई थीं। चन्द्रमाकी किरणोंके पड़नेसे उनकी लहर चमकीली जान पड़ती थी। वह नये जलके भरजानेसे उमड़ी हुई थीं। नये जलके गिरनेका कल कल शब्द हेमचन्द्रको सुनाई दे रहा था। खिड़कीसे हवा आ रही थी। गंगाके जलकणसे ठंढी और रातमें खिलनेवाले फूलोंके गंधसे सुगन्धित हवा बह रही थी। पेड़ोंके काले और सफेद पत्तोंको हिलाकर, नदीके तटपर उगे हुए कासके फूलोंको हिलाडुलाकर हवा खिड़कीसे आ रही थी। हेमचन्द्र भी बहुत प्रसन्न हो रहे थे।

अकस्मात खिड़कीके दरवाजेपर अँधेरा हो गया। चाँदनीका आना रुक गया। हेमचन्द्रकी खिड़कीके पास किसी आदमीका सिर दिखाई पड़ा। खिड़की जमीनसे कुछ ऊंची थी, इसलिये उस आदमीके हाथ-पैर कुछ न दीख पड़े। केवल एक मुँह दिखाई पड़ा। मुँह बहुत बड़ा था, दाढ़ी लटक रही थी और सिरके ऊपर पगड़ी थी। निर्मल चाँदनीमें, खिड़कीके पास ही उस पगड़ीवाले मनुष्यके मुँहको देखते ही हेमचन्द्र पलंगसे उछल कर, अपनी तलवार उठाई।

तलवार ले हेमचन्द्रने झाँककर देखा, तो खिड़कीके पास वह आदमी न था।

हेमचन्द्रने दरवाजा खोला और घरसे बाहर निकल पड़े। खिड़कीके नीचे आकर देखा, वहां कोई नहीं था।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

दसम परिच्छेद

झरोखेमें

हेमचन्द्र कुछ दिनोंतक उसी फूल भंवरमें रहे। जनार्दनसे रोज देखा-देखी होती थी, पर उस ब्राह्मणके बहरे होनेके कारण केवल इशारेसे बातचीत होती थी। मनोरमासे भी प्रतिदिन भेंट होती थी। मनोरमा कभी उनके साथ प्रेमिका बनकर बातें करती, कभी बातचीत किये विना ही दूसरी जगह चली जाया करती थी। मनोरमाका स्वभाव हेमचन्द्रके लिये बहुत ही आश्चर्य-जनक जान पड़ने लगा। पहले तो उसकी उमरका कुछ पता ही नहीं लगता था। यों तो देखनेमें वह बालिका जान पड़ती थी, पर कभी-कभी बड़ी गम्भीर दीख पड़ती थी। एक दिन हेमचन्द्रने बात-चीतके बहाने मनोरमासे पूछा—मनोरमा तुम्हारी! ससुराल कहाँ है। मनोरमाने कहा—नहीं बता सकती। और एक दिन पूछा—मनोरमा! तुम कै बरसकी हुई। मनोरमाने उसका भी उत्तर दिया—'मैं नहीं कह सकती।'

माधवाचार्य हेमचन्द्रको उस फूल भवनमें छोड़कर देश घूमने के लिये निकले। उनके घूमनेका अभिप्राय यह था कि गौड़ देशके अधीन राजाओंको अपनी सारी सेनाके साथ खुद नदिया आकर गौड़ेश्वरकी सहायता करनेके लिये उत्साहित करूं। हेमचन्द्र नदियेमें उनके आनेकी राह देख रहे थे। पर बेकार बैठे-बैठे तबीयत ऊब उठी थी। हेमचन्द्र उदास हो गये। एक बार मनमें यह बात उठी कि दिग्विजयको घरकी रखवाली करनेके लिये रखकर घोडेपर चढ़ फिर गौड़ लौट आयें। किन्तु वहां जानेसे तो मृणालिनीसे भेंट होगी और मेरी प्रतिज्ञा भंग हो जायगी। और गौड़ जाकर यदि मृणालिनीसे न मिला तो वहां जाना ही व्यर्थ

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

है। इन सब बातोंका विचारकर हेमचन्द्र गौड़ न गये। तौ भी मृणालिनीकी चिन्ता सदा हृदयमें बनी रहती थी। एक दिन सन्ध्या समय वे सोनेके कमरेमें पलगपर लेटे मृणालिनीको चिन्तामें मग्न थे। चिन्तासे भी हृदयको शांति मिलती थी। खुली हुई खिड़कीसे हेमचन्द्र प्रकृतिकी शोभा देख रहे थे। शरद ऋतुकी चाँदनी रात थी। निर्मल आकाश तारोंसे जगमगा रहा था। समीप ही खिड़कीकी राहसे गंगा भी दीख पड़ती थीं। गङ्गा का पाट बड़ा था और वह बहुत दूरतक फैली हुई थीं। चन्द्रमा-की किरणोंके पड़नेसे उनकी लहर चमकीली जान पड़ती थी। वह नये जलके भरजानेसे उमड़ी हुई थीं। नये जलके गिरनेका कल कल शब्द हेमचन्द्रको सुनाई दे रहा था। खिड़कीसे हवा आ रही थी। गंगाके जलकणसे ठंढी और रातमें खिलनेवाले फूलोंके गंधसे सुगन्धित हवा बह रही थी। पेड़ोंके काले और सफेद पत्तोंको हिलाकर, नदीके तटपर उगे हुए कासके फूलोंको हिलाडुलाकर हवा खिड़कीसे आ रही थी। हेमचन्द्र भी बहुत प्रसन्न हो रहे थे।

अकस्मात् खिड़कीके दरवाजेपर अँधेरा हो गया। चाँदनीका आना रुक गया। हेमचन्द्रकी खिड़कीके पास किसी आदमीका सिर दिखाई पड़ा। खिड़की जमीनसे कुछ ऊंची थी, इसलिये उस आदमीके हाथ-पैर कुछ न दीख पड़े। केवल एक मुँह दिखाई पड़ा। मुँह बहुत बड़ा था, दाढ़ी लटक रही थी और सिरके ऊपर पगड़ी थी। निर्मल चाँदनीमें, खिड़कीके पास ही उस पगड़ीवाले मनुष्यके मुँहको देखते ही हेमचन्द्र पलंगसे उछल कर, अपनी तलवार उठाई।

तलवार ले हेमचन्द्रने झाँककर देखा, तो खिड़कीके पास वह आदमी न था।

हेमचन्द्रने दरवाजा खोला और घरसे बाहर निकल पड़े। खिड़कीके नीचे आकर देखा, वहां कोई नहीं था।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हेमचन्द्रने घरके चारों ओर, गङ्गाके तीरपर और बनमें इधर-उधर ढूंढ़ा, पर कहीं कोई दिखाई न दिया। हेमचन्द्र घर पर लौट आये। उसके बाद राजपुत्रने पिताके दिये हुए सैनिक कपड़ों और गहनोंसे अपना सारा शरीर सजा डाला (आकाशमें घिरे हुए मेघमण्डलके समान उनका सुन्दर मुख अंधकारसे भर गया।) वे अकेले ही उस सुनसान रातमें हथियारोंसे लैस हो निकल पड़े। खिड़कीके दरवाजेपर आदमीका मुँह देखकर वे जान गये कि बङ्गालमें तुर्क आ गये।

एकादश परिच्छेद

वापीके तोरपर

(असमयमें घिरे हुए बादलके समान भयङ्कर राजपुत्र हेमचंद्र तुर्कको ढूँढ़ने निकले। जैसे बाघ अपना शिकार देखते ही दौड़ता है वैसे ही हेमचन्द्र तुर्कको देखते ही दौड़े। पर इसका कुछ ठिकाना न था कि तुर्कसे कहाँ भेंट होगी।

हेमचन्द्रने एक ही तुर्कको देखा था। पर उन्होंने यह निश्चित कर लिया कि अवश्य ही तुर्ककी सेना नगरके पासही आकर छिपी है। या यही आदमी तुर्कसेनाके आगे आनेवाला दूत है। यदि तुर्कोंकी सेना आ ही गई है, तो उसके साथ अकेले लड़ना तो सम्भव नहीं। पर जो हो, ठीक बातका पता लगाये बिना हेमचन्द्र चुप न बैठ सकते थे। जिस महान कामके लिये मृणालिनीका त्याग किया था, आज रातमें सोकर उसे योंही नहीं छोड़ सकते थे। हेमचन्द्रको शत्रुओंके मारनेमें हार्दिक आनन्द था। उस पगड़ीवाले मनुष्यके मुँहको देखते ही उसे मारनेके लिये उनकी इच्छा और भी भयानक तथा प्रबल हो गई। इस-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
लिये उनके शान्त होनेकी सम्भावना क्या थी? अतः जल्दी-जल्दी पैर बढ़ाते हुए हेमचन्द्र राजमार्गकी ओर चले।

फूल भवनसे राजमार्ग कुछ दूर था। जिस रास्तेसे होकर उस भवनसे राजमार्गपर आना पड़ता था उसपर थोड़े ही लोग चला करते थे। वह रास्ता गांवमें जानेके लिये था। हेमचन्द्र उसी रास्तेसे चले। उसी रास्तेकी बगलमें एक बहुत बड़ी सुन्दर बावली थी, जिसमें बड़ी सुन्दर सीढ़ियां बनी थीं। बावलीके आसपास मौलसरी, साल, अशोक, चम्पा, कदम्ब, पीपल, बड़, आम, इमली आदिके वृक्ष लगे थे। वे वृक्ष पांतीमें नहीं लगे थे, वरन बहुतसे वृक्षोंकी शाखाएं आपसमें ऐसी मिल गई थीं कि बावलीके तीरपर अन्धकार छाये रहता था। दिनमें भी वहां अन्धेरा ही जान पड़ता था। लोग कहते थे कि उस बावलीमें भूत खेला करते हैं। यह बात वहांके रहनेवालोंके मनमें ऐसी दृढ़ जम गई थी कि वहां कोई न जाता था। यदि कोई जाता भी था, तो अकेले नहीं। रातको तो वहां जानेका कोई नाम ही न लेता था।

पौराणिक धर्मके राज्यमें हेमचन्द्र भी यदि भूतोंमें विश्वास करें, तो आश्चर्य ही क्या है? भूतोंका ख्यालकर वे उस रास्तेसे होकर जानेमें डरें, ऐसे डरनेवाले वे नहीं थे। वे निडर होकर बावलीके पास होकर चले। निडर थे; पर भूत देखनेकी इच्छा थी। बावलीके आसपास इधर-उधर और तीरपर देखते चले जाते थे। सीढ़ियोंके करीब पहुँचे। वहां एक-ब-एक चौंक उठे। लोगोंकी कही हुई बातोंपर उनका भी विश्वास दृढ़ हो गया। उन्होंने देखा कि चांदनीके उजालेमें सबसे नीचेकी सीढ़ीपर, पानीमें पैर लटकाकर, सफेद चादर ओढ़े कोई बैठी है। उन्होंने उसे स्त्री समझा। उस स्त्रीका वस्त्र सफेद था, सिरके बाल घने काले थे और मुंह, दोनों बांह, कंधा, पीठ, छाती आदि सब अंगोंको ढकते हुए जमीनतक लटके थे। उसको भूत

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
जानकर हेमचन्द्र चुपचाप बढ़े चले जाते थे। पर मनमें सोचा—यदि यह आदमी है तो इतनी रात गये यहां क्यों आया है ? इसने तुर्कको तो अवश्य देखा होगा ? इसी सन्देहमें हेम-चन्द्र लौट पड़े। निडर होकर बावलीके तीर आ खड़े हुए। सीढ़ियोंसे नीचे उतरने लगे। भूतनी उनका आना जानकर भी न हटी। पहलेकी ही तरह बैठी रह गयी। हेमचन्द्रके पास आनेपर वह उठ खड़ी हुई। हेमचन्द्रकी ओर फिरकर देखा और हाथोंसे मुंहको ढांकनेवाले बालोंको हटाया। हेमचन्द्रने उसका मुंह देखा। वह भूतनी नहीं थी। भूतनी होनेपर हेमचन्द्रको बहुत आश्चर्य न होता। उन्होंने कहा—मनोरमा ! तुम यहां क्यों आई ?

मनोरमाने कहा—मैं तो यहां रोज ही आती हूँ, पर तुम क्यों आये ?

हे०—एक काम है।

मनो०—इस रातमें क्या काम है ?

हे०—पीछे बतलाऊंगा। तुम इस रातमें यहां कैसे आई ?

म०—तुम्हारा यह वेश कैसा है ? हाथमें बरछा, बगलमें तलवार—तलवारमें यह क्या चमक रहा है ? क्या हीरा है ? कमरमें यह क्या है ? यह चमचम चमक रहा है। और यह क्या है ? क्या यह भी हीरा है ? ओ हो ! इतने हीरे तुमने कहां पाये ?

हे०—मेरे हैं।

म०—इस रातको इतने हीरे पहनकर किधर जा रहे हो ? कहीं चोर चुरा लें तो ?

हे०—मेरे पाससे चोर चुरा नहीं सकते।

म०—तो इस रातमें इतने गहनोंकी ज़रूरत ही क्या है ? क्या तुम दूल्हा बनने जाते हो ?

हे०—तुम्हें क्या मालूम होता है, मनोरमा ?

म०—आदमी घातक हथियारोंको लेकर शादी करने नहीं जाता। तुम लड़ाई जाते हो !

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हे०—किसके साथ लड़ाई करूंगा। तुम यहां क्यों बैठी थी ?

म०—नहाकर बैठी हवामें बालोंको सुखा रही थी। यह देखो अब भी बाल भींगे हुए हैं—यह कहकर मनोरमाने अपने भींगे बाल हेमचन्द्रके हाथसे छुआ दिये।

हे०—रातमें क्यों नहाती हो ?

म०—आज गरमी मालूम पड़ती थी।

हे०—गंगामें न नहाकर बावलीमें क्यों नहाती हो।

म०—इसका पानी बड़ा ठंडा है।

हे०—क्या, हर रोज यहां आती हो ?

म०—हां।

हे०—मैं तुम्हारा ब्याह करने आ रहा हूं। फिर ब्याह हो जानेपर इस तरह कैसे आ सकोगी।

म०—पहले ब्याह तो हो ले।

हेमचन्द्रने हंसकर कहा—तुम्हें लाज नहीं है। तुम्हारा काला मुंह हो।

म०—क्यों तिरस्कार करते हो ? तुमने वचन दिया कि तिरस्कार नहीं करूंगा।

हे०—अच्छा, बुरा न मानो। यह बताओ, इस रास्तेसे किसीको जाते हुए देखा है ?

म०—हां, देखा है।

हे०—उसका वेश कैसा था ?

म०—तुर्ककी पोशाक पहने था।

हेमचन्द्रको बहुत आश्चर्य हुआ ! बोले—तुमने तुर्कको कैसे पहचान लिया।

म०—मैंने पहले तुर्क देखे हैं।

हे०—कैसे ? तुमने कहां देखा है ?

म०—यहां नहीं देखा है। क्या तुम उस तुर्कका पीछा करोगे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हे०—हां, पीछा करूँगा। वह किस ओर गया है।

म०—क्यों?

हे०—उसे मारूँगा।

म०—मनुष्यकी हत्या करनेसे क्या होगा?

हे०—तुर्क मेरे शत्रु हैं।

म०—तो क्या एकको मारकर खुश होगे।

हे०—जितने तुर्क मेरी आंखोंके सामने आयेंगे, सबको मारूँगा।

म०—सबको मार सकोगे?

हे०—हां, मार सकता हूं।

मनोरमाने कहा—तब सावधानीसे मेरे साथ चलो।

हेमचन्द्र इधर-उधर करने लगे। सोचा—क्या यवनोंकी लड़ाईमें यही रास्ता बतायेगी? मनोरमा उसके मनकी बात ताड़ गई। बोली—मुझे लड़की जानकर मेरा अविश्वास करते हो?

हेमचन्द्र मनोरमाकी ओर बड़ी देरतक देखते रहे। विस्मयमें पड़कर सोचा—क्या मनोरमा मानुषी है।

द्वादश परिच्छेद

—०❀०❀०—

पशुपति

गौड़ देशके धर्माधिकारी पशुपति साधारण आदमी नहीं थे। वे गौड़के दूसरे राजा थे। गौड़ेश्वर बूढ़े थे। बुढ़ापेके कारण वे दूसरेके कहनेपर चलते थे और राजकाज भलीभांति समझ सकते थे। इसलिये प्रधान दीवान धर्माधिकारीके ही हाथमें राज्यकी सच्ची बागडोर थी। धन और वैभवमें पशुपति गौड़ेश्वरके समान हो गये थे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पशुपतिकी उमर पैंतीस बरसकी होगी। वे बड़े सुन्दर दीख पड़ते थे। उनका शरीर लम्बा और छाती चौड़ी था। शरीरके पुट्ठे चढ़े हुए थे। उनका रङ्ग तपाये हुए सोनेकी तरह था। सिर ऊंचा था। उनमें मानसिक शक्ति भी पूरी थी। नाक लम्बी और उठी हुई थी। आँखें छोटी और चमकीली थीं। चेहरेसे वे बुद्धिमान जान पड़ते थे। दिन रात काम करनेकी चिन्तासे मुंहपर कुछ रूखापन आ गया था। पर इससे क्या? राजसभामें उनके समान सर्वाङ्ग सुन्दर दूसरा कोई नहीं था। लोग कहते थे कि गौड़ देशमें ऐसा पण्डित और चतुर नहीं है।

पशुपति ब्राह्मण थे। पर उनकी जन्मभूमिका पता आजतक किसीको न था। लोग कहते थे कि उनके पिता विद्वान दरिद्र ब्राह्मण थे। पशुपति केवल अपनी बुद्धि और विद्याके बलसे गौड़ राज्यके प्रधान पदपर पहुंचे थे।

पशुपति अपनी युवावस्थामें काशीपुरीमें रहकर अपने पितासे शास्त्र पढ़ते थे। वहाँ केशव नामक एक बंगाली ब्राह्मण रहते थे। केशवके हेमवती नामकी एक आठ बरसकी लड़की थी। उसके साथ पशुपतिका व्याह हो चुका था, पर भाग्यवश व्याहकी रातको ही केशव व्याही हुई कन्याको लेकर कहीं छिप गया। फिर उसका कहीं पता न चला। उसी दिनसे पशुपति पत्नीके सुखसे वंचित थे। किसी कारणसे उन्होंने दूसरा व्याह नहीं किया। वे राज भवनके समान ऊंचे मकानमें रहते थे, किन्तु स्त्रीके नयनोंकी ज्योतिके बिना वह ऊंचा महल आज अन्धकारसे भरा है।

आजकी रात उसी ऊंचे महलके एक एकान्त कमरेमें पशुपति अकेले ही दीयाके उजालेमें बैठे थे। उस कमरेके पीछे ही एक आमका बागीचा था। उस बागीचेमें जानेके लिये एक गुप्त दरवाजा था। आधी रातको कोई आकर धीरे-धीरे दरवाजा खटखटाने लगा। भीतरसे पशुपतिने दरवाजा खोला। एक आदमी घरमें घुस आया। वह मुसलमान था। हेमचन्द्रने उसीको

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
खिड़कीसे देखा था। उस समय पशुपतिने उसको अलग बैठने-की आज्ञा दी और विश्वासकी दृष्टिसे उसकी ओर देखा।

पशुपतिने संस्कृतमें कहा—मैं समझता हूं। आप तुर्कोंके प्रधान सेनापतिके विश्वासपात्र हैं, इसलिये मेरे भी विश्वास-पात्र हैं। आपहीका नाम मुहम्मद अली है न? कहिये सेनापति का क्या विचार है।

मुसलमानने भी संस्कृतमें जवाब दिया। लेकिन उसकी संस्कृतमें तीन चौथाई फारसी शब्द थे और बाकी जैसी संस्कृत थी, वैसी भारतवर्षमें कहीं नहीं बोली जाती। वह मुहम्मद अली की ही रची हुई संस्कृत थी। पशुपतिने बड़ी कठिनाईसे उसका अर्थ समझा। पाठकोंको उनकी कठिनाईमें हिस्सा बँटाने की कोई जरूरत नहीं है। उनके समझनेके लिये बस नई संस्कृतका उल्था कर देता हूं।

मुसलमानने कहा—खिलजी साहबका विचार तो आप जानते ही होंगे। बिना लड़ाई-झगड़ेके गौड़ देश जीतनेकी उनकी इच्छा है। आप किस तरह यह राज्य उनके हाथमें देंगे?

पशुपतिने कहा—मैं यह राज्य उनके हाथमें दूंगा या नहीं, अभी यह तय नहीं हुआ है। अपने देशकी बुराई करना बहुत बड़ा अपराध है। मैं यह दुष्कर्म कैसे करूंगा?

मुस०—बहुत अच्छा! मैं जाता हूं। तब आपने खिलजीके पास दूत क्यों भेजा था?

पशु०—यह जाननेके लिये कि उनकी लड़नेकी इच्छा कितनी प्रबल है।

मु०—तो मैं यह आपको बतला देता हूँ कि लड़नेमें ही उन्हें आनन्द मिलता है।

पशु०—मनुष्यकी लड़ाईमें, पशुकी लड़ाईमें या हाथीकी लड़ाई में—किसमें उन्हें आनन्द मिलता है?

मुहम्मद अलीने क्रोध करके कहा—गौड़में युद्ध ही होगा,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ऐसी आशा है। मैंने समझ लिया कि व्यंग सुनानेके लिये ही आपने सेनापतिसे दूत भेजनेको कहला भेजा था। हमलोग लड़ना जानते हैं, ताना देना नहीं जानते। जो जानते हैं, वही करेंगे।

यह कहकर मुहम्मद अली जानेकी तैयारी करने लगा। पशुपतिने कहा-जरा और ठहरिये और कुछ सुनकर जाइये। मैं इस राज्यको मुसलमानोंके हाथ सौंपनेमें "नहीं" भी नहीं करता और असमर्थ भी नहीं हूँ। मैं ही गौड़का स्वामी हूँ। सेन-राजा केवल नामके लिये हैं। पर पूरा दाम पाये बिना अपना राज्य आपलोगोंको कैसे दे सकता हूँ?

मुहम्मद अलीने कहा—आप क्या चाहते हैं?

पशु०—खिलजी क्या देंगे?

मु०—जो कुछ आपका है वह आपहीके पास रहेगा। आपके प्राण, धन और पद—सभी रहेंगे। इतना ही न?

पशु०—तो मुझे क्या मिला? ये सब तो मेरे ही हैं। किस-लिये मैं यह बहुत बड़ा पाप करूंगा?

मु०—हमलोगोंको राजी न रखनेसे तो कुछ भी नहीं मिलेगा। युद्ध करनेसे आपकी सम्पत्ति, पद और प्राणतक भी चले जायंगे।

पशु०—युद्ध समाप्त हुए बिना तो कुछ कहा नहीं जा सकता। आप यह मत समझिये कि लड़ाईसे हम बिलकुल लापरवाह । मगधमें जो विद्रोहकी तैयारी हो रही है, उसे भी मैं जानता हूँ। खिलजी उसीको दबानेमें लगे हैं। इसलिये मैं जानता हूँ कि कुछ दिनोंके लिये गौड़-विजयकी लालसाको वे दूर रखेंगे। चाहे वे मेरा मांगा हुआ पुरस्कार न दें, पर यदि उन्होंने लड़ना ही तय कर लिया है, तो हम लोगोंके लिये यही बढ़िया मौका है। जब बिहारमें विद्रोहियोंकी फौज इकट्ठी होगी, तब गौड़ेश्वर भी अपनी सेना साजेंगे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मु०—हर्ज ही क्या है ? चींटीके काटनेके बाद मच्छरके काटनेसे हाथी नहीं मरता। पर आप क्या पुरस्कार चाहते हैं, मैं यह सुनकर जाना चाहता हूँ।

पशु०—सुनिये, आजकल मैं ही गौड़का सच्चा राजा हूँ, पर लोग मुझे गौड़ेश्वर नहीं कहते। मेरी इच्छा है कि मैं राजा कहलाऊं, सेनवंशका नाम लोप हो जाय और पशुपति ही गौड़के अधीश्वर हों।

मु०—इससे आप हमारा क्या उपकार करेंगे ? हमलोगोंको क्या मिलेगा ?

पशु०—केवल राजकर। मुसलमानोंकी अधीनतामें मैं केवल कर देकर राजा रहूँगा।

मु०—अच्छा ! यदि आप ही सचमुच गौड़के राजा हैं, और राजा आपके हाथकी कठपुतली हैं, तो हमलोगोंसे आपको बातचीत करनेकी जरूरत ही क्या है ? हमारी सहायता आप क्यों लेंगे ? और हमें कर ही क्यों देंगे ?

पशु०—उसे मैं साफ-साफ बताऊंगा, कुछ छिपाऊंगा नहीं। पहले तो सेन राजा मेरे मालिक हैं, बुड्ढे हैं और मुझे बहुत मानते हैं। यदि बलपूर्वक मैं उन्हें गद्दीसे उतार दूं, तो संसारमें मेरी निन्दा होगी। आप लोग लड़ाईकी थोड़ी तैयारी दिखाकर बिना युद्ध किये ही राजधानीमें आइये और राजाको सिंहासनसे हटाकर मुझे उसपर बैठाइये, तो इससे मेरी निन्दा न होगी। दूसरी बात यह है कि अयोग्य पुरुषके हाथमें पड़नेसे ही राज्यमें विद्रोह होनेकी सम्भावना रहती है। मैं आपलोगोंकी सहायतासे उस विद्रोहको सहजमें ही दबा सकूंगा।

तीसरी बात यह है कि यदि मैं आप ही आप राजा बन जाऊंगा, तो इस समय सेनराजाके साथ जैसा आपलोगोंका सम्बन्ध है वैसा ही मेरे साथ भी रहेगा। हमलोगोंके साथ युद्ध तो होगा ही और युद्धके लिये हमलोग तैयार हैं भी, किन्तु इसमें

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जय और पराजय दोनोंकी ही सम्भावना है। जीतनेपर मुझे कोई नई वस्तु न मिलेगी, पर हारनेमें सब हानि ही है। उसके अलावा आपलोगोंके साथ सुलह करके राज्य लेनेसे शंका न रहेगी। और सदा युद्धके लिये तैयार रहनेसे नये राज्यका शासन भी अच्छी तरह नहीं हो सकेगा।

मु०—आप राजनीतिज्ञकी तरह सोच विचारकर बातें कर रहे हैं। आपकी बातोंसे मुझे यकीन हो गया। मैं भी इसी तरह साफ-साफ कहकर खिलजी साहिबका मतलब बतलाता हूँ। यह सच है कि इस समय वे कई चिन्ताओंमें पड़े हैं, लेकिन तमाम हिन्दुस्तानमें मुसलमानोंकी हुकूमत रहेगी और राजाओंके नाम भी हमलोग यहाँसे मिटा देंगे, तो भी आपको गौड़ देशका राजा बनावेंगे। जैसे दिल्लीमें मुहम्मदगोरीके कायममुकाम कुतुबुद्दीन हैं उसी तरह पूरबमें कुतुबुद्दीनके कायममुकाम बख्तियार खिलजी हैं, वैसे ही गौड़देशमें बख्तियार खिलजीके कायममुकाम आप रहेंगे। आप इसे मंजूर करते हैं ?

पशु०—मुझे स्वीकार है।

मु०—अच्छा, मैं एक और बात पूछना चाहता हूं। क्या आप जिस बातको मंजूर करते हैं, उसे पूरा करनेमें आपको कामयाबी हो सकेगी ?

पशु०—मेरी आज्ञाके बिना एक भी सिपाही हथियार नहीं उठा सकता। राज्यका खजाना मेरे ही आदमियोंके हाथमें है। बिना मेरी आज्ञाके लड़ाईकी तैयारीमें एक कौड़ी भी खर्च नहीं की जा सकती। सिर्फ पाँच सिपाहियोंको लेकर खिलजीको राजधानीमें प्रवेश करनेके लिये कहना। कोई नहीं पूछेगा कि तुम कौन हो ?

मु०—एक बात और है। इस देशमें मुसलमानोंका बहुत बड़ा दुश्मन हेमचन्द्र रहता है। आज रातको ही उसका सिर मुसलमानोंकी सेनामें भेजना होगा।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पशु०—आप ही लोग आकर उसका सिर काटिये। मैं अपनी शरणमें आये हुए मनुष्यको मारकर महापाप कैसे करूँगा ?

मु०—हमलोगोंसे यह नहीं हो सकेगा। मुसलमानोंका आना सुनकर वह राजधानी छोड़कर भाग जायगा। आज वह निश्चिन्त है। आज ही आदमी भेजकर उसको मरवा डालिये।

पशु०—अच्छा, यह भी मंजूर करता हूं।

मु०—मैं खुश हुआ। आपका जवाब लेकर मैं जा रहा हूं।

पशु०—जो आज्ञा। एक और बात पूछनी है।

मु०—क्या है ? कहिये।

पशु०—मैं तो राज्य आप लोगोंके हाथ सौंप देता हूं। इसके बाद यदि आपलोग मुझे राज्यसे हटा दें तो ?

मु०—हमलोग आपकी बातोंपर भरोसा रख थोड़ी सी फौज लेकर, दूतके कहनेके मुताबिक राजधानीमें घुसेंगे। यदि हमलोग आपके कहे मुताबिक काम न करेंगे, तो आप बिना तकल्लुफ ही हम लोगोंको निकाल दीजियेगा।

पशु०—यदि आप लोग थोड़ी फौज लेकर न आवे तो ?

मु०—तब लड़ाई कीजियेगा—यह कहकर मुहम्मद अली चला गया।

त्रयोदश परिच्छेद

चोर पकड़नेवाला

मुहम्मद अली, बाहर निकल कर आँखोंसे ओझल हो गया। उसके बाद एक दूसरा आदमी गुप्तद्वारके पास आकर धीरेसे बोला—भीतर आवें ?

पशुपतिने कहा—आओ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

एक गुप्त दूत आया। आकर उसने प्रणाम किया। पशुपतिने आशीर्वाद देकर पूछा—शान्तिशील! कहो, क्या समाचार है?

शांतिशीलने कहा—आप एक एक बात पूछते जायं, मैं अलग अलग सबका जवाब दूंगा।

प०—क्या तू मुसलमानोंके पड़ावपर गया था?

शा०—नहीं।

प०—क्यों?

शा०—जङ्गल बड़ा घना है। उसमें घुसना आसान नहीं।

प०—कुल्हाड़ी लेकर पेड़ोंको काटते-काटते क्यों न घुस गया?

शा०—बाघ और भालुओंका खतरा था।

प०—हथियार क्यों न लेता गया?

शा०—जो लकड़िहारे बाघ भालुओंको मारकर बनमें घुसे थे, उन सबोंको मुसलमानोंने मार डाला। कोई वापस नहीं आया।

प०—तू भी जाकर उसी तरह न लौटता।

शा०—तब आपको आकर समाचार कौन सुनाता?

पशुपतिने हंसकर कहा—तू ही आता।

शान्तिशीलने प्रणाम करके कहा—मैं ही समाचार सुनाने आया हूँ।

पशुपतिने प्रसन्न होकर पूछा—तू कैसे गया?

शा०—पहले पगड़ी, हथियार, टोपी आदि तुर्की पहनावा इकट्ठा किया। उन्हें गठरीमें बांधकर पीठपर लटका लिया। उसके बाद लकड़हारोंमें मिलकर जङ्गलमें घुस गया। राहमें जब मुसलमान लकड़हारोंको देखकर मारनेके लिये दौड़े तब मैंने पेड़की आड़में जाकर अपना भेष बदल लिया। फिर मुसलमान बनकर मुसलमानोंकी फौजमें जहां चाहा घूमता फिरा।

प०—तूने तो तारीफका काम किया। अच्छा मुसलमानोंकी फौज कितनी बड़ी है?

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

शा०—उस बड़े बनमें जितने समा सकती है—जान पड़ता है कि वे पचीस हजार होंगे।

पशुपति भौंहें टेढ़ी करके कुछ देरतक चुप रहे। फिर कहा-उन लोगोंकी क्या बातचीत सुनी?

शा०—अच्छी तरह सुनी है, पर आपसे कुछ नहीं कह सकता।

प०—क्यों?

शा०—मुसलमानोंकी भाषा मैं कुछ समझ न सका।

पशुपति हंसे। शान्तिशीलने कहा—मुहम्मद अली जो यहां आया था, मैं उससे डरता हूँ।

पशुपतिने घबराकर कहा—क्यों?

शा०—वह छिपकर न आ सका। किसी किसीको उसका आना मालूम हो गया है।

पशुपति बहुत डरकर बोले—यह बात तुमने कैसे जानी?

शान्तिशीलने कहा—जब मैं आपके चरणोंके दर्शन करनेके लिये आ रहा था, उस समय देखा कि पेड़के नीचे एक आदमी छिपा हुआ है। वह सिपाहियाना भेषमें था। उसके साथ बातचीतकर मैं जान गया कि उसने मुहम्मद अलीको नगरमें आते हुए देखा है और उसकी राह देख रहा है। पर अंधेरेमें मैं उसे पहचान न सका।

प०—उसके बाद?

शा०—उसके बाद दासने उसे "चित्रगृह" में कैद कर दिया है।

पशुपति शान्तशीलको बधाई देने लगे। फिर बोले-कल प्रातःकाल उस आदमीके लिये उचित कारवाई की जायगी। आज रात भर उसे जेलमें ही रहने दो। इस समय तुम्हें एक और काम करना होगा। मुसलमान सेनापतिकी इच्छा है कि आज ही रातको मगध देशके राजकुमारका कटा सिर देखूं, इसलिये उसे आज ही काटना है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

शा०—यह काम सहल नहीं है। राजपुत्र चींटी या मक्खी तो नहीं है?

प०—मैं तुम्हें अकेले जानेके लिये नहीं कहता। कई आदमियोंको साथ ले उसके घरपर चढ़ जाओ।

शा०—लोगोंसे आप क्या कहेंगे?

प०—कह दिया जायगा कि उसे डाकू मारकर चले गये हैं।

शा०—जो आज्ञा। मैं जाता हूं।

पशुपतिने शान्तिशीलको इनाम देकर विदा किया। उसके बाद घरमें जहाँ सुन्दर मन्दिरमें अष्टभुजी देवीकी मूर्ति स्थापित थी, वहां जाकर मूर्त्तिको साष्टांग प्रणामकर भक्तिभावसे स्तुति करनेके बाद पशुपतिने कहा—"जननी! विश्वपालिनी! मैं अथाह समुद्रमें कूद चुका हूं। मा! मेरा उद्धार करना। मैं प्राणोंसे प्यारी जन्मभूमिको देवताओंके शत्रु मुसलमानोंके हाथ कभी न बेचूंगा। केवल मेरा इतना ही पापकर्म है कि पुराने निर्बल राजा के स्थानपर मैं राजा होना चाहता हूं। जिस तरह कांटेसे कांटा निकालकर दोनों कांटोंको दूर फेंक देते हैं वैसे ही मुसलमानोंकी सहायतासे राज्य पाकर, फिर उसी राज्यकी सहायतासे मुसलमानोंको भगाऊँगा। इसमें पाप क्या है, मा! यदि इसमें पाप है, तो प्रजाके सुखोंके लिये कार्यकर जीवन भर उस पापका प्रायश्चित्त करूंगा, जगज्जननी! प्रसन्न होकर मेरी मनोकामना पूरी करो।"

यह कहकर पशुपति फिर प्रणामकर सोनेके कमरेमें जब लौट रहे थे तो उन्होंने एक विचित्र दृश्य देखा—

"सामने दरवाजा रोककर सजीव मूर्त्तिकी तरह एक युवती खड़ी है।"

पशुपतिको पहले तो आश्चर्य हुआ। फिर काँप उठे। उसके बाद ही लहराते हुए समुद्रकी तरह आनन्दसे फूल उठे।

उस युवतीने बड़े मधुर स्वरसे कहा—"पशुपति!"

पशुपतिने देखा कि—वह मनोरमा है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

चतुर्दश परिच्छेद

मोहिनी

रत्नोंके दीपसे जगमगाते हुए उस देव मन्दिरमें, चाँदनीसे प्रकाशित द्वारपर मनोरमाको देखकर, पशुपतिका हृदय लहराते हुए समुद्रके समान उछलने लगा। मनोरमा बिल्कुल नाटी न थी; पर तो भी वह बालिकासी जान पड़ती थी। क्योंकि उसका मुँह बड़ा सुन्दर और कोमल था, वह भोलीभाली थी। इसलिये यदि हेमचन्द्रने उसे पन्द्रह बरसकी समझा था तो इसमें कुछ अनुचित न था। मनोरमाकी ठीक उमर क्या थी? पन्द्रह, सोलह या इससे कुछ अधिक या कम—यह तो इतिहासमें नहीं लिखा है। पाठक महाशय खुद अन्दाज लगा लें।

मनोरमाकी उमर चाहे जो हो, किन्तु उसके समान रूपवती कोई न थी। उसपर आँखें नहीं ठहर सकती थीं। लड़कपन या जवानी—सभी समय वैसी सुन्दरता दुर्लभ है। एक तो उसका रंग ही सुनहला था। सिरके घुंघराले बाल बावलीके जलसे भींगकर सीधे लटक रहे हैं, अर्धचन्द्रके समान निर्मल ललाट है, भौरोंके भारसे हिलते हुए नील पुष्पके समान काली पुतलियोंसे सुशोभित चंचल नेत्र हैं, सुन्दर नासिका-छिद्र कभी फैल जाता है, कभी सिकुड़ जाता है, दोनों ओठ मानों प्रातःकालकी ओससे नम हैं, चन्द्रमाके समान उज्ज्वल कपोल गंगाजलके समान स्थिर और विस्तृत है, बच्चेके पकड़े जानेके डरसे चौंकी हुई हंसनीके समान गला है, वेणी बँधी होनेपर भी छोटे-छोटे बाल आकर गलेपर क्रीड़ा कर रहें है। यदि हाथीके दाँत फूलके समान कोमल हो सकें, चम्पाके फूल गढ़नेके लायक कठिन हो सकें, अथवा चन्द्रमाकी किरणें शरीर धारण कर सकें तो उनसे उसकी दोनों

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

भुजाएं गढ़ी जा सकती हैं। मनोरमाकी रूपराशि इसलिये अतुल है कि उसके सब अंग बड़े ही कोमल हैं; उसके मुँह, ओठ, दोनों भौहें, ललाट, कपोल, बाल बड़े सुन्दर हैं। सर्प शिशुकी तरह उसके बाल हैं। गलेकी गढ़नमें सुकुमारता है। बाहोंमें और उनके हिलाने डुलानेमें भी सुन्दरता है। हृदयके उछलनेमें भी सुकुमारता है। पैर और उनकी बनावट भी सुकुमार है। बसन्त की हवासे पुष्पित लताके धीरे-धीरे हिलने-डुलनेके समान उसका मन्द-मन्द गमन है। आधी रातके समय जलराशिके उस पारसे आये हुए विरहगीतके समान वचन सुकुमार हैं। मेघमालासे निकली हुई चन्द्रमाकी किरणोंकी तरह कटाक्ष सुकुमार हैं। देवीके द्वारपर पशुपतिको देखनेके लिये, आंखोंके तारे ऊपरकी ओर किये, बावलीके जलसे भीगे तथा लपेटे हुए बालोंके छोरको हाथमें लेकर एक पांव कुछ आगे बढ़ाये जिस भावभंगीसे मनोरमा खड़ी है—वह भी बाल रविके उदय होनेपर खिले हुए कमलराशिके समान सुकुमार है। उस मधुरिमामय देहपर देवीके पास जलनेवाले रत्नदीपका प्रकाश आ पड़ा। पशुपति चाहभरी निगाहसे उसे देखने लगे।

पञ्चदश परिच्छेद

मोहिता

पशुपति उसको एकटक देखने लगे। देखते-ही-देखते मनोरमाके सौन्दर्य-सागरकी एक बड़ी महिमा उन्होंने देखी। जैसे सूर्यकी तेज किरणोंसे हँसता हुआ समुद्रका जल मेघोंके छा जानेसे धीरे-धीरे कृष्णवर्णका हो जाता है, वैसेही पशुपतिके देखतेही-देखते मनोरमाका मुखमण्डल गम्भीर होने लगा और

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

उसका बालिका—सुलभ उदारता पूर्णभाव जाता रहा। अपूर्व तेजके साथ युवती स्त्रियोंकी गम्भीरता उसमें विराजने लगी। सरलताको ढककर प्रतिभा जागृत हुई। पशुपतिने कहा–मनोरमा! इतनी रातको क्यों आई? मैंने आज तुम्हारा यह भाव देखा!

मनोरमाने जवबा दिया—मेरा क्या भाव देखा?

प०—तुम्हारी दो मूर्तियाँ हैं—एक मूर्ति तो आनन्दमयी भोली-बालिका है। उस मूर्त्तिमें तुम नहीं आई। उस रूपसे मेरा हृदय शीतल होता है और तुम्हारी यह दूसरी मूर्त्ति गंभीर, तेजस्विनी,प्रतिभामयी और तीव्र बुद्धिवाली है। इस मूर्त्तिको देखकर मैं भयभीत हो रहा हूं समझता हूं कि तुम कोई दृढ़ प्रतिज्ञा पूरी करने चली हो। आज तुम इस मूत्तिमें मुझे भयभीत करने क्यों आयी हो?

म०—पशुपति! तुम इतनी राततक क्या करते हो?

प०—मैं राजके काममें लगा हूँ। लेकिन तुम।

म०—पशुपति! राजका काम कर रहे हो या अपना?

प०—अपना ही काम समझो। राजका काम हो या अपना हो, मैं हमेशा कुछ-न-कुछ करता रहता हूँ। तुम आज क्यों पूछ रही हो।

म०—मैंने सब सुन लिया है!

प०—क्या सुना है।

म०—यवनके साथ पशुपतिकी बातचीत और शान्तशीलके साथकी बात भी। दरवाजेकी बगलमें खड़ी होकर मैंने सब सुन लिया है।

पशुपतिका मुँह मानो बादलके अन्धकारमें डूब गया। वे बहुत देरतक चिन्तामग्न रहकर बोले—अच्छा ही हुआ। ये सब बातें तो तुमसे कहता ही—तुमने पहले ही सुन लिया। नहीं तो तुम पीछे सुन लेती। तुमने कौन-कौन बात नहीं सुनी है।

म०—पशुपति! तुमने मेरा त्याग कर दिया।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

प०—मनोरमा ! तुम्हारे ही लिये मैंने यह सलाह की है। मैं इस समय राजाका नौकर हूँ। अपनी इच्छासे काम नहीं कर सकता। इस समय विधवा विवाह करनेपर मैं समाजसे निकाल दिया जाऊंगा। पर जब मैं स्वयं राजसिंहासनपर बैठूंगा तब मुझे कौन निकाल सकता है ? जैसे बल्लालसेनने कुलीनताकी नई पद्धति चलाई थी वैसेही मैं "विधवा-विवाह" की नई प्रथा चलाऊंगा।

मनोरमाने दीर्घ निःश्वास लेकर कहा—पशुपति ! वे सब मेरे लिये स्वप्नवत हैं। राजा बननेपर तुम मेरे साथ यह प्रेम नहीं रखोगे। मैं कभी तुम्हारी रानी नहीं हो सकती।

प०—क्यों मनोरमा !

म०—क्यों ? राज्यभार लेनेके बाद क्या तुम मुझसे प्रेम करोगे ? उस समय तो राज्य ही तुम्हारे हृदयमें स्थान पायेगा। तुम मेरा आदर नहीं करोगे। यदि तुम मुझे प्यार नहीं करोगे, तो मैं क्यों तुम्हारी स्त्री बननेकी लालसामें पड़ी रहूँ।

प०—तुम यह बात क्यों कह रही हो ? पहले तुम हो, इसके बाद राज्य है। मेरी यह धारणा बहुत दिनोंतक रहेगी।

म०—यदि राजा होकर तुम राज्यसे अधिक रानीको प्यार करोगे, तो राज्य नहीं चला सकेंते। तुम राज्यसे हटा दिये जाओगे। स्त्रीमें आसक्त राजाका राज्य नहीं रहता।

पशुपति स्नेह दृष्टिसे मनोरमाका मुंह देखने लगे और बोले—जिसकी बाईं ओर ऐसी सरस्वती है, उसे क्या डर है ! नहीं तो तुम्हारे लिये राज्य भी छोड़ सकता हूं।

म०—तब राज्य क्यों लेते हो ? त्याग देनेके लिये ही राज्य लेनेसे क्या लाभ है।

प०—तुम्हारा पाणि-ग्रहण।

म०—उसकी आशा छोड़ दो। तुम राज्य लोगे, तो मैं कभी भी तुम्हारी स्त्री नहीं बनूंगी।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

प०—क्यों मनोरमा ! मैंने क्या अपराध किया है ?

म०—तुम विश्वासघातक हो। मैं विश्वासघातकसे कैसे भक्ति करूंगी ? किस प्रकार विश्वासघातकको प्यार करूंगी

म०—तुम अपने पालन करनेवाले स्वामीको राज्यसे च्युत करनेका विचार करते हो। शरणमें आए हुए राजपुत्रको मारनेका संकल्प करते हो। क्या यह विश्वासघात नहीं है ? जिसने स्वामीका विश्वास नहीं किया, क्या वह स्त्रीके साथ विश्वासघात नहीं करेगा ?

पशुपति चुप रहे। मनोरमा फिर कहने लगी—पशुपति विनय करती हूँ, इस कुविचारको छोड़ दो।

पशुपतिने पहलेकी तरह फिर सिर नीचा कर लिया। राजा बनने और मनोरमासे प्रेम करनेका उनकी दोनों ही इच्छाएं बहुत बड़ी थीं। राज्य पानेका उद्योग करनेसे मनोरमाका प्रेम नष्ट हो जायगा, वह भी छोड़ने लायक नहीं है। इन दोनों संकटोंमें पड़कर उनके हृदयमें बड़ा उद्वेग उत्पन्न हुआ। उनकी बुद्धिकी स्थिरता दूर होने लगी।

मनोरमाको पाकर भीख मांगना भी अच्छा है, राज्यसे क्या काम ? इसी प्रकार बारम्बार मनमें भावनाएं उत्पन्न होने लगीं। फिर उसी समय विचारने लगे—पर ऐसा करनेसे संसारमें निंदा होगी; जन-समाजमें कलंक लगेगा; जाति भ्रष्ट होगी; सब लोग घृणा करेंगे। इसे मैं कैसे सहन करूंगा ? पशुपति चुप रहे। कुछ उत्तर न दे सके।

मनोरमा उत्तर न पाकर कहने लगी—पशुपति। तुमने मेरी बातका उत्तर नहीं दिया। मैं जाती हूं। पर यह पतिज्ञा करती हूं कि विश्वासघातकके साथ इस जन्ममें भेंट न करूंगी।

यह कहकर मनोरमा चली गई। पशुपति रोने लगे। तुरत ही मनोरमा फिर आई। आकर उसने पशुपतिका हाथ पकड़ लिया। पशुपति उसका मुंह चाहसे देखने लगे। उन्होंने देखा कि तेज

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

तथा गर्वसे भरी हुई टेढ़ी लहरोंको उछालनेवाली अब सरस्वती नहीं है। वह प्रतिभा देवी कहीं अन्तर्ध्यान हो गई। फूलोंके समान सुकुमारी बालिका उनके साथ रो रही है।

मनोरमाने कहा—पशुपति! रोते क्यों हो?

पशुपतिने आंखोंके आंसू पोंछकर कहा—तुम्हारी बातपर।

म०—क्यों? मैंने क्या कहा है?

प०—तुम मुझे छोड़कर जाए ही हो।

म०—अब मैं ऐसा न करूंगी।

प०—तुम मेरी रानी बनोगी?

म०—बनूंगी।

पशपतिका आनन्द-सागर फिर उछलने लगा। दोनोंकी आंखोंमें आंसू भर गये हैं। दोनों टकटकी लगाये एक दूसरेका मुंह देखने लगे। अचानक ही मनोरमा उठकर शीघ्रतासे चली गई।

षटदश परिच्छेद

फंदा

पहले ही कहा जा चुका है कि बावलीके तीरपरसे ही हेमचंद्र मनोरमाके साथ होकर यवनको ढूंढ़नेके लिये चले। मनोरमाने धर्माधिकारी पशुपतिके घरसे कुछ दूर इधर ही हेमचंद्रसे कहा—सामने यह महल देखते हो?

हे०—देखता हूँ।

म०—इसीमें यवन गया है।

हे०—क्यों?

इसका उत्तर बिना दिये ही मनोरमाने कहा—तुम इसी जगह पेड़की आड़में खड़े रहो। यवन इसी रास्तेसे लौटेगा।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हे०—तुम कहाँ जाओगी।

म०—मैं इसी घरमें जाऊँगी।

हेमचन्द्रने मनोरमाकी उस बातको मान लिया। उसकी चाल देखकर वे कुछ आश्चर्यमें पड़ गये। उसके कहनेके अनुसार रास्तेकी बगलमें पेड़की आड़में छिपकर खड़े हो गये। मनोरमा गुप्त राहसे उस घरमें चली गई।

उसी समय शान्तिशील पशुपतिके घर आया। उसने देखा कि एक आदमी पेड़की आड़में छिपा है। शान्तशील सन्देहसे उस पेड़के नीचे गया। वहाँ जाकर चोरके धोखेमें कहा—तुम कौन हो और यहाँ क्या करते हो? फिर हेमचन्द्रके हीरोंसे सुशोभित वीर भेषको देखकर कहा—आप कौन हैं?

हेमचन्द्रने कहा—कोई होऊँ, इससे क्या?

शा०—आप यहां क्या कर रहे हैं।

हे०—मैं एक मुसलमानको ढूंढ़ता हूँ?

शान्तशीलने आश्चर्यसे कहा—मुसलमान कहां है?

हे०—इसी घरमें गया है।

शान्तशीलने डरते हुए कहा—इस घरमें क्यों?

हे०—यह तो मैं नहीं जानता।

शा०—तब आपने कैसे जाना कि इस घरमें मुसलमान गया है?

हे०—यह जानकर तुम क्या करोगे?

शा०—यह घर मेरा है। यदि मुसलमान इस घरमें गया है तो वह किसी बुरी नीयतसे गया होगा। आप वीर और यवनोंके शत्रु जान पड़ते हैं। इच्छा हो तो मेरे साथ आइये। हम दोनों चोरको पकड़ेंगे।

हेमचन्द्र उसकी बात मानकर उसके साथ चले। शान्तशील, सिंह-द्वारकी राहसे पशुपतिके घरमें हेमचन्द्रको लेकर चला गया और एक चौकके भीतर जाकर उसने कहा—इसी घरमें मेरी सभी

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

चीजें हैं। आप यहां रखवाली कीजिये। मैं तबतक ढूंढ़ूं कि,मुसलमान कहाँ छिपा हुआ है।

यह कहकर शान्तशील चौकसे बाहर निकल आया और हेमचन्द्रके कुछ कहनेके पहले ही उसने बाहरसे दरवाजा बन्द कर दिया। हेमचन्द्र फन्देमें पड़कर कैदी हो गये।

सप्तदस परिच्छेद

—०❀०—

मुक्त

मनोरमा पशुपतिके यहाँसे लौटकर जल्दी-जल्दी पैर बढ़ाती हुई चित्रगृहमें आई। पशुपति और शान्तशीलकी बातचीतमें मनोरमाने सुन लिया था कि इस घरमें हेमचन्द्र कैद हैं। आकर उसने चित्रगृहका दरवाजा खोलकर हेमचन्द्रसे कहा—हेमचंद्र! बाहर आओ।

हेमचन्द्र बाहर निकल आये। मनोरमा उनके साथ-साथ आई। हेमचन्द्रने मनोरमासे पूछा—मैं क्यों रोक लिया गया था?

म०—यह पीछे बताऊँगी।

हे०—मुझे कैद करनेवाला कौन है?

म०—शान्तशील।

हे०—शान्तशील कौन है?

म०—चोर पकड़नेवाला।

हे०—क्या यही उसका घर है?

म०—नहीं।

हे०—यह किसका घर है?

म०—पीछे बताऊँगी।

हे०—मुसलमान कहां गया?

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

म०—फौजमें चला गया।

हे०—वहाँ कितने मुसलमान हैं ?

म०—पच्चीस हज़ार।

हे०—उनकी फौज कहाँ है ?

म०—महाबनमें।

हे०—महाबन कहाँ है ?

म०—इस नगरसे उत्तर कुछ दूर।

हेमचन्द्र गालोंपर हाथ रखकर सोचने लगे।

मनोरमाने कहा—क्या सोचते हो ? क्या उन लोगोंके साथ लड़ाई करोगे।

हे०—क्या पच्चीस हजार आदमियोंके साथ एक आदमीका लड़ना सम्भव है।

म०—तब क्या घर लौट जाओगे ?

हे०—इस समय घर नहीं जाऊँगा।

म०—तब कहां जाओगे ?

हे०—महाबन।

म०—जब लड़ाई ही नहीं करनी है तब महाबन क्यों जाओगे ?

हे०—मुसलमानोंको देखनेके लिये।

म०—जब तुम्हें लड़ाई नहीं करनी है तो उनको देखनेसे क्या लाभ ?

हे०—देखनेसे जान लूँगा कि किस-किस उपायसे उन्हें मारना चाहिये।

मनोरमा चौंक उठी और बोली—पच्चीस हजार सिपाहियोंको मारोगे। छिः ! छिः !!

हे०—मनोरमा ! तुम्हें ये समाचार कहां मिले।

म०—और भी समाचार हैं। आज रातको तुम्हारा सिर काटनेके लिये तुम्हारे घर डाकू आयेंगे। आज घर मत जाओ।

यह कहकर मनोरमा बड़े जोरसे भाग गयी।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अष्टादश परिच्छेद

—०:०—

अतिथि-सत्कार

हेमचन्द्र घर लौटकर एक सुन्दर सजे हुए घोड़ेपर सवार हुए। उसे तेजीसे हांककर वे महाबनकी ओर चले। नगरसे बाहर निकलकर वे मैदानमें आये। मैदानसे कुछ आगे निकल जानेपर अचानक ही उनके कंधेपर बहुत गहरी चोट लगी। उन्होंने देखा कि उनके कंधेमें एक तीर आ लगा है। पीछे घोड़ेकी टाप भी सुन पड़ी। फिरकर देखा कि तीन घुड़सवार आ रहे हैं।

हेमचन्द्र घोड़ेका मुँह घुमाकर उन लोगोंकी राह देखने लगे। फिरकर उन्होंने देखा कि घुड़सवारोंने तीर तानकर उन्हें निशाना बना लिया है। हेमचन्द्रने बड़ी सफाईसे बरछा घुमाकर तीनों तीरोंसे एक ही समय अपनेको बचा लिया।

घुड़सवारोंने फिर एक बार तीरोंको धनुषपर चढ़ाया और हेमचन्द्रके रोकते ही और तीन तीर चलाये।

इसी तरह वे हेमचन्द्रपर तीर छोड़ने लगे। तब हेमचन्द्रने रत्नोंसे जड़ा हुआ ढाल हाथमें लिया और उसे चारों ओर घुमा फिराकर उस तीर-वर्षाको रोकने लगे। दो एक तीर घोड़ेको लगे। पर आप बेदाग बच गये।

घुड़सवारोंको बड़ा अचम्भा हुआ। वे आपसमें कुछ सलाह करने लगे। हेमचन्द्रने उसी समय एक आदमीपर तीर छोड़ा। निशाना अचूक था। तीर एक घुड़सवारके सिरमें जा लगा। वह उसी समय घोड़ेकी पीठसे गिरकर जमीनपर जा पड़ा।

इसके बाद दोनों घुड़सवार घोड़ेको चाबुक मारकर दो बरछे लिये हेमचन्द्रकी ओर दौड़े और पास पहुँचकर उन्होंने बरछे चलाये। यदि वे हेमचन्द्रको निशाना बना बरछे चलाते,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
तो हेमचन्द्र अपनी सफाईसे अपनेको बचा लेते। पर उन लोगों-ने ऐसा न कर हेमचन्द्रके घोड़ेको निशाना बना बरछे चलाये थे। उतनी दूर नीचे हाथ ले जानेमें हेमचन्द्रको देर हो गई। वे एकका बरछा तो हटा सके पर दूसरेका बरछा घोड़ेको लग गया। बरछा घोड़ेकी गरदनमें घुस गया। चोटके लगते ही वह सुन्दर घोड़ा छटपटाकर जमीनपर गिर पड़ा।

सीखे हुए सिपाहीकी तरह उस गिरते हुए घोड़ेसे कूदकर हेमचन्द्र जमीनपर खड़े हो गये और बड़ी जल्दीसे अपने तीखे बरछेको उठाकर बोले—'मेरे पिताका दिया हुआ बरछा शत्रुका रक्तपात किये बिना कभी नहीं लौटता।' उनकी बातके समाप्त होते ही होते बरछेकी चोट खाकर घुड़सवार जमीनपर गिर पड़ा।

यह देखकर तीसरा घुड़सवार घोड़ेको मोड़कर बड़े जोरसे भागा। वही शान्तशील था।

हेमचन्द्रने फुरसत पा अपने कंधेसे तीर निकाला। वह तीर मांसके भीतर दूरतक घुस गया था। उसके खींचनेपर बहुत खून बहने लगा। हेमचन्द्र अपने कपड़ेसे बांधकर खून रोकनेकी चेष्टा करने लगे, पर वह व्यर्थ हुई। खूनके निकलनेसे हेमचन्द्र निर्बल होने लगे। तब उन्होंने विचार किया कि आज मुसल-मानोंकी फौजमें नहीं जा सकता। घोड़ा घायल हो गया था और आप भी कमजोर हो गये थे, इसीलिये उदास हो धीरे धीरे नगरकी ओर लौट चले।

हेमचन्द्र जिस समय उस मैदानके पार हो गये, उस समय उनका शरीर अपने काबूमें न था। खूनकी धारसे सारा शरीर भींग गया था। चलनेकी ताकत न थी। बड़े कष्टसे नगरमें पहुँचे। थक-कर वे एक झोंपड़ीके पास बरगदके पेड़के नीचे बैठ गये। उस समय रात बीत चुकी थी। सवेरा हो रहा था। रातको जागने, सारी रात मेहनत करने और खूनके गिरनेसे कमजोरीके कारण

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
हेमचन्द्रकी आँखोंके सामने जमीन नाचने लगी। उन्होंने पेड़के धड़में पीठ टेक ली। आँखें बन्द होगईं, नींद सताने लगी। बेहोशी बढ़ गई। नींदमें झुकते-झुकते उन्होंने सुना कि, कोई गा रहा है।

"निर्विवेक विधिने मृणालको काँटोंसे बिंधवाया है।"

———

उनविंश परिच्छेद

—❀:❀—

वे तुम्हारे कौन हैं ?

जिस झोपड़ीके पास पेड़के नीचे हेमचन्द्र विश्राम ले रहे थे उस झोपड़ीमें, एक मल्लाह रहता था। झोपड़ीमें तीन घर थे। एक घरमें मल्लाहकी रसोई बनती थी। दूसरे घरमें उसकी स्त्री अपने बाल बच्चोंको लेकर सोती थी। तीसरे घरमें मल्लाहकी युवती कन्या रत्नमयी और दूसरी दो स्त्रियाँ रहती थीं। उन दोनों स्त्रियोंको पाठक पहचानते हैं। मृणालिनी और गिरिजाया नवद्वीपमें आश्रय न पाकर यहीं रहती थीं।

सवेरा होते ही तीनों स्त्रियाँ जागीं। पहले रत्नमयी जागी। उसने गिरिजायाको पुकारा—सखी!

गि०—क्या सखी ?

र०—तुम कहाँ हो, सखी ?

गि०—बिछौनेपर, सखी!

र०—उठो न, सखी!

गि०—नहीं सखी!

र०—बदनपर पानी छिड़कूंगी, सखी!

गि०—पानी सखी ? अच्छा डालो।

र०—नहीं, कहो तो तुम्हें छोड़ दूं ?

गि०—क्यों छोड़ोगी सखी ? तुम मेरी प्राण-प्यारी सखी हो।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

तुम्हारी जैसी कौन है ? तुम बड़ी रसमयी हो। यदि तुम्हीं ऐसा न करोगी तो दूसरी कौन करेगी ?

र०—सखी ! बात बनानेमें तो तुम बड़ी पक्की हो। मैं तुम्हारे सामने बच्ची हूं, मैं तुमसे बातें नहीं बना सकती।

गि०—क्या और बनाना चाहती हो ?

र०—तुम्हारे मुँहमें कालिख। और बातें बनाने वा मिलाने की जरूरत नहीं है। मैं अपना काम करने जाती हूं।

यह कहकर रत्नमयी घरके काम-काज करनेके लिये चली गई। मृणालिनीने अब तक कुछ नहीं कहा। गिरिजायाने मृणालिनीको पुकार कर कहा—ठकुरानी ! जगी हो ?

मृणालिनीने कहा—जगी ही हूँ और सदा जगी ही रहती हूँ।

गि०—क्या सोच रही थी ?

मृ०—जो ही हो।

गिरिजायाने गंभीर होकर कहा—क्या करूं ? मेरा दोष नहीं है। मुझे मालूम हुआ है कि वे इसी नगरमें हैं पर अब तक उनका पता न चला। हम लोग तो यहाँ दो तीन दिन रहेंगी ही! अब बहुत जल्दी उन्हें खोज लाऊँगी।

मृ०—गिरिजाया ! यदि इस नगरमें उनका पता न लगेगा तो इसीके घरमें मरते दम तक रहूँगी, क्योंकि मेरे जानेके लिये कोई दूसरा स्थान नहीं है।

मृणालिनीने तकियेमें मुँह छिपा लिया। गिरिजायाके गालों पर भी धीरे-धीरे आँसुओंकी धारा बहने लगी।

इसी समय दौड़ी हुई घरमें आकर रत्नमयीने कहा—सखी ! सखी ! देखो, मेरे बरगदके नीचे कौन सोया है। वह एक विचित्र पुरुष है।

गिरिजाया झोपड़ीके दरवाजेपर देखने आई। मृणालिनीने झोपड़ीके दरवाजे ही तक आकर देखा। देखते ही दोनोंने उन्हें पहचान लिया।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अचानक ही मानो समुद्र उमड़ पड़ा। मृणालिनी गिरिजायाके गलेसे लिपट गई। गिरिजाया गाने लगी--

"निर्विवेक विधिने मृणालको कांटोंसे विंधवाया है।"

वह ध्वनि हेमचन्द्रके कानोंमें स्वप्नवत् जा पहुँची। मृणालनीने गिरिजायाके गलेकी खुजली देखकर कहा--चुप राक्षसी! हम लोगोंसे भेंट न होगी। वह जाग रहे हैं। भीतरसे देखो कि वे क्या करते हैं। वे जहां जावें वहां छिपकर दूरही दूर उनके साथ जाओ। यह क्या? उनका शरीर खूनसे सराबोर है? चलो, तब मैं भी साथ चलूंगी।

हेमचन्द्र सोकर उठे। सवेरा होते देख वे बरछेके सहारे किसी तरह उठकर धीरे-धीरे घरकी ओर चले।

हेमचन्द्रके कुछ दूर चले जानेपर मृणालिनी और गिरिजाया उन्हें खोजनेके लिये घरसे निकलीं। उस समय रत्नमयीने पूछा--ठकुरानी! ये तुम्हारे कौन हैं।

मृणालिनीने कहा-- ईश्वर जानें।

विंश परिच्छेद

—:o:—

प्रतिज्ञा

आराम करनेके बाद हेमचन्द्रमें कुछ बल आ गया था। खूनका गिरना भी कुछ कम हो चला था। बरछेके सहारे हेमचन्द्र घर लौट आये। घर आकर उन्होंने देखा कि मनोरमा दरवाजेपर खड़ी है?

मृणालिनी और गिरिजायाने छिपकर मनोरमाको देखा।

मनोरमा पुतलीकी तरह खड़ी थी। उसे देखकर मृणालिनीने अपने मनमें सोचा यदि मेरे स्वामी इसी रूपपर मोहित हो गये होंगे तो मेरी सुखकी रात बीत चुकी। गिरिजायाने सोचा-

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

यदि राजपुत्र इस रूपपर मोहित हो गये होंगे तो मेरी ठकुरानी का भाग्य फूट गया।

हेमचन्द्रने मनोरमाके पास आकर कहा—मनोरमा! इस तरह क्यों खड़ी हो?

मनोरमाने कुछ भी न कहा। हेमचन्द्रने फिर कहा—मनोरमा! मनोरमाने कुछ उत्तर न दिया। हेमचन्द्रने देखा कि वह आकाशकी ओर देख रही है।

हेमचन्द्रने फिर पुकारा—मनोरमा! तुझे क्या हो गया है।

मनोरमाने धीरे-धीरे आकाशकी ओरसे नजर हटाकर हेमचन्द्रके मुँहकी ओर देखा और कुछ देरतक टकटकी लगाकर उन्हींकी ओर देखती रही। फिर हेमचन्द्रके खूनसे रंगे हुए कपड़ोंपर उसकी नजर पड़ी। देखकर मनोरमाने आश्चर्यसे कहा—यह क्या हेमचन्द्र! खून क्यों। तुम्हारा मुँह क्यों सूखा है। क्या तुम घायल हो गये हो।

हेमचन्द्रने उंगलीसे कन्धेकी चोटकी ओर इशारा किया।

तब मनोरमा हेमचन्द्रका हाथ पकड़कर घरके भीतर पलँगपर ले गई और कुछ देर बाद एक झारीमें जल ला उनके सब कपड़े उतारकर शरीरका सब खून धो दिया। फिर गायोंको लुभानेवाली हरी दूबको जमीनसे उखाड़कर दांतोंसे कुचल डाला और उसे जखमपर रखकर कपड़ेसे कांखासूती बाँध दिया। तब बोली—अब क्या करूँ? तुम सारी रात जागे हो, सोओ।

हेमचन्द्रने कहा—न सोनेसे बड़ी थकावट मालूम होती है।

मनोरमाके इस कामको देख हृदयमें चिन्तित होकर मृणालिनी गिरिजायासे बोली—यह कौन है, गिरिजाया?

गि०—इसका नाम मैंने सुना है--मनोरमा।

मृ०--यह क्या हेमचन्द्रकी मनोरमा है?

गि०—तुम क्या समझती हो?

मृ०-मैं समझती हूँ मनोरमा ही भाग्यशालिनी है। हेमचन्द्र-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

की जो सेवा मैं न कर सकी, वह उसने की। जिस कामके लिये मेरा हृदय जल रहा था, मनोरमाने उसे कर दिया। भगवान् इसे दीर्घायु करें। गिरिजाया! मैं घर जाती हूँ, मैं यहां अधिक नहीं ठहर सकती। तुम इसी गांवमें रहो। हेमचन्द्रका समाचार लेकर आना। मनोरमा चाहे जो हो, हेमचन्द्र मेरे ही हैं।

एकविंश परिच्छेद

हेतु धूमात्

मनोरमा और हेमचन्द्रके घरमें चले जानेपर गिरिजाया मृणालिनीको विदाकर उपवनवाले घरके चारों ओर घूमने लगी। जहां कहीं वह खिड़की खुली देखती थी, वहीं बड़ी सावधानीसे सिर उठाकर घरके भीतर देखती जाती थी। उसने एक कमरेमें हेमचंद्र को सोते हुए और उनके बिछौनेपर मनोरमाको बैठे हुए देखा। गिरिजाया उस खिड़कीके नीचे बैठ गई। पहली रातको उसी खिड़कीसे वह मुसलमान हेमचन्द्रको दिखलाई दिया था।

गिरिजायाके खिड़कीके नीचे बैठनेका अभिप्राय यह था कि हेमचन्द्र और मनोरमामें जो बातें हो रही हैं, उसे एकान्तमें चुपचाप बैठकर सुनूं। पर वे सो रहे थे, इससे कुछ भी बातचीत न हुई। अकेले चुपचाप उस खिड़कीके नीचे बैठनेमें गिरिजायाको बड़ा कष्ट हुआ। न वह बोल सकती थी न हंस सकती थी और न किसीको ताना दे सकती थी। न बोलनेसे उसकी जीभ खुजलाने लगी। मनमें सोचने लगी—वह पापी दिग्विजय भी न मालूम कहां है। उसके मिलनेसे भी तो मुँह खुलता। पर दिग्विजय तो मालिकके काममें लगा था। किसीसे भी भेंट न हुई। तब किसी और को न पाकर गिरिजाया आप ही आप बातें

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
करने लगी। उसे सुननेके लिये पाठक अवश्य इच्छुक होंगे। इसलिये प्रश्नोत्तरके बहाने हम उसे बता देते हैं। गिरिजाया ही प्रश्न करने वाली और वही उत्तर देनेवाली थी।

प्र०—अरी! यह कौन बैठी है?

उ०—गिरिजाया।

प्र०—अरी! तुम यहां क्यों बैठी हो?

उ०—मृणालिनीके लिये।

प्र०—अरी! मृणालिनी तुम्हारी कौन है?

उ०—कोई नहीं।

प्र०—तब उसके लिये तुम इतनी परेशानी क्यों उठा रही हो?

उ०—मेरा और काम ही क्या है? बेकार बैठी बैठी क्या करूं?

प्र०—मृणालिनीके लिये यहां क्यों आई?

उ०—यहां उसका एक पक्षी उड़ आया है।

प्र०—क्या पक्षीको पकड़कर ले जाओगी?

उ०—यदि उसने जंजीर काट दी होगी तो पकड़कर क्या करूंगी? और पकड़ूंगी भी कैसे?

प्र०—तब क्यों बैठी हो?

उ०—देख रही हूँ कि उसने जंजीर काट दी है या नहीं।

प्र०—काट दी है या नहीं, इसे जानकर क्या करोगी?

उ०—पक्षीके लिये मृणालिनी रोज रातको छिप-छिपकर रोती है। न मालूम आज कितना रोयेगी। यदि शुभ समाचार लेकर जाऊंगी तो उसका बहुत उपकार होगा।

प्र०—यदि जंजीर कट गई होगी?

उ०—तो मृणालिनीसे कह दूंगी कि—चिड़िया हाथसे निकल गई। राधाकृष्णका नाम सुननेकी इच्छा हो तो बनकी एक चिड़िया पकड़कर ले आओ। पढ़ी-पढ़ाई चिड़ियाकी आशा छोड़ दो। पिंजरा खाली मत रखो।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

प्र०—दूर हो! भिखारिनकी लड़की! तू अपने मनकी ही बात कहती है। यदि मृणालिनी क्रोध करके पिंजरा तोड़कर फेंक दे तो?

उ०—ठीक कहती हो सखी! यह तो वह कर सकती है। इसे कहनेकी जरूरत नहीं है।

प्र०—तब यहाँ बैठी हुई धूपमें जल क्यों रही हो?

उ०—सिरमें बड़ा दर्द है, इसीसे। यह लड़की जो घरके भीतर बैठी है, गूँगी है। नहीं तो अबतक भी क्यों नहीं बोलती? भला लड़कीका मुँह अबतक बन्द रह सकता?

कुछ देरके बाद गिरिजायाकी मनोकामना पूरी हुई। हेमचन्द्रके जगनेपर मनोरमाने उनसे पूछा—क्या तुम सो गये थे।

हे०—हां, खूब सोया।

म०—अब बताओ, तुम घायल कैसे हो गये?

तब हेमचन्द्रने रातकी सब घटना थोड़ेमें कह सुनाई। सुनकर मनोरमा सोचने लगी।

हेमचन्द्रने कहा—तुम जो कुछ पूछना चाहती थी, पूछ चुकी। अब मेरी बातोंका जवाब दो। कल रातको जब तुम मेरा साथ छोड़कर चली गई तबसे जो कुछ हुआ उसे कहो।

मनोरमाने जो कुछ धीरे-धीरे कहा उसे गिरिजाया न सुन सकी। उसने समझा कि चुपकेसे कोई बात हुई है।

गिरिजाया कुछ सुन न सकी, इससे उठ खड़ी हुई। तब फिर उसके मनमें सवाल जवाब छिड़ गया।

प्र०—क्या समझा?

उ०—केवल दो एक लक्षण।

प्र०—कौन कौनसे लक्षण?

गिरिजाया अँगुलियोंपर गिनने लगी। एक बात तो यह है कि लड़की अपूर्व सुन्दरी है। आगके पास क्या घी जमा रह सकता है? दूसरा यह है कि मनोरमा हेमचन्द्रको प्यार करती

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
है। नहीं तो इतना यत्न क्यों करती? तीसरा—एक साथ रहना। चौथा—एक साथ रातमें घूमना। पाँचवाँ—धीरे-धीरे बातें करना।

प्र०—मनोरमा प्यार करती है तो इसमें हेमचंद्रका क्या?

उ०—क्या हवाके न चलनेपर जलमें लहरें उठती हैं? यदि मुझे कोई प्यार करे, तो निःसन्देह मैं उसे प्यार करूँगी।

प्र०—किन्तु मृणालिनी भी तो हेमचन्द्रको प्यार करती है। तब तो हेमचन्द्र भी मृणालिनीको प्यार करते होंगे।

उ०—ठीक है। पर मृणालिनी यहाँ उपस्थित नहीं है और मनोरमा यहाँ मौजूद है।

यह सोचकर गिरिजाया धीरे-धीरे उस घरके दरवाजेपर आ खड़ी हुई। फिर एक गीत गाकर बोली—"भीख दो माँ!"

द्वाविंश परिच्छेद

—:❀❀:—

उपनय—वह्नि व्याप्यो धूमवान्

गिरिजाया गीत गाने लगी—

"कहु सखि जियन मरनको कौन विधान,
व्रजकिशोर सखि, गये कहां, व्रजवासिनको निकसत प्रान।"

गानेका स्वर हेमचन्द्रके कानोंमें पड़ा। वह स्वप्नमें सुने हुए शब्दके समान सुन पड़ा।

गिरिजायाने फिर गाया—

"व्रजकिशोर सखि! गये कहां चलि,
व्रजवासिनको निकसत प्रान।"

हेमचन्द्र कान लगाकर सुनने लगे।

गिरिजायाने फिर गाया—

"मिल गयी नारी, विसारे माधव विहीन कुमारी।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

को जानते सखि रसियाप्रेमी, है इहिरूप भिखारी।"

हेमचन्द्रने कहा—यह क्या, मनोरमा! क्या यह गिरिजाया की आवाज है? मैं जाता हूँ—यह कहकर हेमचन्द्र पलंगसे उतर खड़े हुए।

गिरिजाया गाने लगी—

"पहले तो समझी ही नहीं, बस रूप देख मैं भूल गई।
अब यमुना जलमें डूब मरूँ, इस तनको पियके भेंट करूँ।
युग चरणकमल हिय धारों, सखि पी विष प्राण निकारों॥"

हेमचन्द्र गिरिजायाके पास आकर खड़े हो गये और घबड़ाये हुए बोले—गिरिजाया! यह क्या गिरिजाया! तुम यहाँ कैसे आयी? तुम इस देशमें कब आयी?

गिरिजायाने कहा—मैं यहाँ बहुत दिनोंसे हूँ। यह कहकर वह फिर गाने लगी—

"बनबेलीको गले डालकर, नव तमालको दूंगी फाँसी।"

हेमचन्द्रने कहा—तुम इस देशमें क्यों आई?

गिरिजायाने कहा—भीख ही मेरी रोजी है। यह सोचकर कि राजधानीमें अधिक भीख पाऊंगी, यहाँ आई हूं।

"बनबेलीको गले डालकर नव तमालको दूँगी फाँसी।"

हेमचन्द्रने गीतकी ओर ध्यान न देकर कहा—मृणालिनी कैसे है? तुम देखकर आई हो?

गिरिजाया गाने लगी—

"श्याम श्याम श्याम कहि, श्याम श्याम श्याम कहि।
भसम करब यह शरीर रे।"

हेमचन्द्रने कहा—जरा गाना बन्द करो। मेरी बातका जवाब दो। मृणालिनी कैसी है? उसे देखकर आई हो?

गिरिजायाने कहा—मृणालिनीको देखकर नहीं आई हूं। यदि यह गीत आपको पसन्द नहीं है तो दूसरा गाती हूं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

"क्या इसी जन्ममें पूरी होगी सखी ! हमारी आशा ।
या और जन्ममें पूरेगी, मनकी सारी अभिलाषा ॥"

हेमचन्द्रने कहा—गिरिजाया, मैं हाथ जोड़ता हूं। गाना बन्द करो। मृणालिनीका समाचार सुनाओ।

गि०—क्या सुनाऊँ ?

हे०—मृणालिनीको देखकर क्यों नहीं आई ?

गि०—वह गौड़ नगरमें नहीं है।

हे०—क्यों, कहाँ चली गई ?

गि०—मथुरा।

हे०—मथुरा ? मथुरा किसके साथ गई ? कैसे गई ? क्यों गई ?

गि०—उसके पिताको किसी तरह उसका पता लग गया। वे आदमी भेजकर उसे लिवा ले गये। मैं समझती हूं उसका ब्याह हो रहा है। जान पड़ता है। उसे ब्याह देनेके लिये ही वे लोग लिवा ले गये हैं।

हे०—क्या ? क्या करनेके लिये ?

गि०—मृणालिनीका ब्याह कर देनेके लिये उसके पिता उसे लिवा ले गये हैं।

हेमचन्द्रने मुँह फेर लिया। गिरिजाया उनका मुँह न देख सकी और हेमचन्द्रके कन्धेके जखमके खुल जानेसे जो पट्टीका कपड़ा खूनसे भींग रहा था उसको भी वह न देख सकी। उसने पहले ही की तरह गाया—

"विधिसे विनती है यही, दो फिर नारी देह।
तजि भय लाज जहानको, राखूं पियसों नेह ॥"

हेमचन्द्रने उसकी ओर मुँह करके कहा—गिरिजाया ! तुम्हारा यह समाचार बड़ा शुभ है। अच्छा ही हुआ।

यह कहकर हेमचन्द्र घरमें चले गये। गिरिजायाके सिरपर आसमान टूट पड़ा। गिरिजायाने मनमें सोचा कि मृणालिनीके

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ब्याहकी झूठी बात कहकर हेमचन्द्रका परीक्षा लूँगी। सोचा कि मृणालिनीके ब्याहकी बात सुनकर हेमचन्द्र बहुत घबड़ायेंगे और क्रोध करेंगे। किन्तु यह सब कुछ नहीं हुआ। तब गिरिजायाने सिर पीटकर मनमें कहा—हाय! क्या किया। क्यों बेफायदा यह झूठी बात कही। हेमचन्द्रको तो सुखी देखती हूँ। वह "यह शुभ समाचार है" कहकर चले गये। अब ठकुरानीकी क्या दशा होगी। हेमचन्द्रने गिरिजायासे क्यों कहा कि यह शुभ समाचार है, इस बातको भिखारिन गिरिजाया क्या समझ सकेगी। हेमचन्द्रने जिस क्रोधसे भरकर इसी मृणालिनीके लिये गुरुदेवके ऊपर तीर ताना था, वही प्रचंड क्रोध फिर उठा। अभिमानकी अधिकतासे उस असह्य क्रोधके वेगमें हेमचन्द्रने गिरिजायासे कहा—"तुम्हारा यह समाचार शुभ है।"

गिरिजाया उसे समझ न सकी। उसने मनमें कहा कि यह छठा लक्षण है। किसीने उसे भीख न दी। उसने भी भीखकी परवाह न की। यह निश्चय कर कि जंजीर टूट गई, वह घरकी ओर चली।

त्रयोविंश परिच्छेद

एक और सम्वाद

उसी दिन माधवाचार्यका घूमना शेष हुआ। वे नवद्वीपमें आ पहुँचे। वहां आकर उन्होंने अपने प्रिय शिष्य हेमचन्द्रको अपना दर्शन देकर कृतार्थ किया। फिर आशीर्वाद देकर, कुशल-समाचार पूछनेके बाद, हेमचन्द्रको साथ ले एकान्तमें चले गये। वहाँ अपना काम पूरा करनेके लिये बातचीत होने लगी।

अपने घूमनेका विस्तार पूर्वक समाचार कहनेके बाद माधवाचार्यने कहा—इतनी मिहनतकर अपना कितना काम पूरा

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
किया ? इस देशके अधीन राजाओंमें बहुतसे राजाओंने लड़ाईके मैदानमें सेनाको लेकर सेनराजकी सहायता करना मंजूर कर लिया है। शीघ्र ही वे आकर नवद्वीपमें इकट्ठे हो जायंगे।

हेमचन्द्रने कहा—वे लोग यदि आज न आयेंगे तो सब व्यर्थ हो जायगा। यवनोंकी फौज आ गई है और महावनमें डेरा डाले पड़ी है। वह आजकलमें ही नगरपर हमला करेगी।

माधवाचर्य सुनकर कांप उठे। बोले—गौड़ेश्वरकी ओरसे क्या तैयारी हुई है ?

हे०—कुछ भी नहीं। ज्ञात होता है कि राजाके पास यह खबर अबतक पहुंची ही नहीं। मुझे संयोगवश यह समाचार मिला है।

मा०—यह बात राजासे कहकर तुमने कोई अच्छी सलाह क्यों न दी ?

हे०—समाचार पाते ही राहमें डाकुओंसे घायल हो प्रधान सड़कपर गिर गया। इसी हालतमें घर आकर कुछ आराम किया है। कमजोरीके कारण राजाके पास न जा सका। अभी जा रहा हूं।

मा०—तुम इस समय आराम करो, मैं राजाके पास जाता हूं। पीछे जैसा होगा, तुमसे आकर कहूँगा। यह कहकर माधवाचार्य उठ खड़े हुए।

तब हेमचन्द्रने कहा—प्रभो ! सुना है आप गौड़ गये थे। माधवाचायने उनका आशय समझकर कहा—हां, मैं गया था। तुम मृणालिनीका हाल जानना चाहते हो ? मृणालिनी वहाँ नहीं है।

हे०—कहां चली गई है ?

मा०—यह मुझे मालूम नहीं। कोई कुछ समाचार न दे सका।

हे०—क्यों चली गयी ?

मा०—बेटा ! ये सब बातें युद्धके बाद कहूँगा।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हेमचन्द्रने भौंहें टेढ़ी करके कहा—ठीक बात बता देनेसे मैं घबड़ा जाऊंगा, इसकी शंका मत कीजिये। मैंने भी कुछ सुना है। जो आप जानते हैं उसे निस्संकोच कहिये।

जब माधवाचार्य गौड़नगरमें आये थे, तब हृषीकेशने अपने विचारके अनुसार मृणालिनीका चरित्र जैसा समझा था वैसा कह सुनाया। माधवाचार्यने भी उसे ही सच समाचार समझ लिया था। माधवाचार्यका कभी स्त्री जातिसे प्रेम न था। इस लिये वे स्त्रीका चरित्र नहीं जानते थे। हेमचन्द्रकी बात सुनकर उन्होंने समझा कि हेमचन्द्रने उस समाचारको सुनकर मृणालिनीकी चाह छोड़ दी है। इसलिये मनमें किसी नये दुःखकी सम्भावना न देख आसनपर बैठकर वे हृषीकेशकी कही हुई सब बातें स्पष्टकर हेमचन्द्रको सुनाने लगे।

हेमचन्द्रने सिर नीचा किये हथेलीपर माथा रखकर चुपचाप सब समाचार सुन लिया। माधवाचार्यकी बात खतम हो जानेपर भी हेमचन्द्रने कुछ नहीं कहा—चुपचाप बैठे रहे। माधवाचार्यने सम्बोधन किया—हेमचन्द्र! पर उन्होंने कुछ जवाब नहीं पाया। फिर पुकारा—हेमचन्द्र! इस बार भी कुछ उत्तर नहीं मिला।

माधवाचार्य उठ खड़े हुए और हेमचन्द्रका हाथ पकड़कर बड़े प्रेमसे बोले—बेटा! हेम! सिर उठाओ। मेरे साथ बात करो।

हेमचन्द्रने सिर उठाया। उनके मुखकी कान्ति देखकर माधवाचार्य डर गये। उन्होंने कहा—मुझसे कहो। क्यों क्रोध हुआ है? कुछ भी तो बतलाओ।

हेमचन्द्रने कहा—किसकी बातका विश्वास करूँ? हृषीकेश कुछ और ही कहते हैं और भिखारिन कुछ और ही बात कहती है।

माधवाचार्यने कहा—कौन भिखारिन? उसने क्या कहा है?

हेमचन्द्रने संक्षेपमें ही जवाब दिया।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

माधवाचार्यने सकुचाते हुए कहा—हृषीकेशकी ही बात झूठी जान पड़ती है।

हेमचन्द्रने कहा—नहीं, हृषीकेशकी की बात ठीक है।

वे उठ खड़े हुए। उन्होंने पिताका दिया हुआ बरछा हाथमें उठा लिया। काँपते हुए वे चुपचाप उस घरमें टहलने लगे।

आचार्यने पूछा—किस सोचमें हो ?

हेम०—बरछा दिखाकर कहा—मृणालिनीको इसी बरछेसे छेदूँगा।

माधवाचार्य उनके मुंहकी कान्ति देखकर डरे और वहाँसे हट गये।

सवेरे मृणालिनी यह कहकर चली गई थी कि हेमचन्द्र मेरे ही हैं।

चतुःविंश परिच्छेद

मैं तो पगली हूं

दोपहरके बाद माधवाचार्य लौटे। वे यह खबर ले आये कि धर्माधिकारीने घोषित किया है कि यवनोंकी सेना तो आ गई है, परन्तु जीते हुए राज्यमें विद्रोह फैलनेकी संभावना सुनकर यवन-सेनापतिकी सुलह करनेकी इच्छा है। कल उनका दूत आयेगा, दूतके आनेकी खबरसे कोई लड़ाईकी तैयारी नहीं हो रही है। यह समाचार सुनकर माधवाचार्यने कहा—इस कुल-कलंक राजाका धर्माधिकारीकी बुद्धिसे विनाश होगा।

हेमचन्द्रने उनकी बात सुनी या न सुनी, इसमें सन्देह है। उन्हें उदास देखकर माधवाचार्य चले गये।

शाम होनेके पहले ही मनोरमा हेमचन्द्रके घर आई। हेमचन्द्र को देखकर मनोरमाने कहा— भाई! आज तुम ऐसे क्यों हो ?

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हे०—कैसा हूँ ?

मनो०—तुम्हारा मुँह सावनके आसमानकी तरह अन्धकारसे घिरा हुआ है और भादोंकी गङ्गाकी तरह क्रोधसे भरा है। भौंहें इतनी टेढ़ी क्यों हैं। आंखोंकी पलकें क्यों नहीं गिरतीं ?

हेमचन्द्र मनोरमाकी ओर देखने लगे :फिर उन्होंने आंखें नीची कर लीं। उसके बाद आंखें उठाकर खिड़कीकी ओर देखा, फिर मनोरमाका मुँह देखने लगे। मनोरमाने सोचा कि आँखों की इस दशाका कोई मतलब नहीं जान पड़ता। जबानपर आई हुई बात न कहनेकी इच्छा होती है तब आंखोंकी ऐसी हालत होती है। मनोरमाने कहा—हेमचन्द्र तुम क्यों दुखी हुए हो ? क्या हुआ है। हेमचन्द्रने कहा—कुछ नहीं।

मनोरमा पहले कुछ न बोली, फिर आप ही आप धीरे-धीरे कहने लगी—कुछ नहीं ! मत कहो ! छिः छिः ! हृदयमें बिच्छू पाल रखे हो। कहते-कहते मनोरमाकी आंखोंसे आंसू टपक पड़े। फिर अकस्मात् हेमचन्द्रके मुँहकी ओर देखकर बोली—मुझसे क्यों नहीं बोलते ? मैं तुम्हारी बहिन हूँ।

मनोरमाके मुखके भावोंमें और उसकी शान्त आंखोंसे इतना यत्न, इतनी कोमलता और इतनी सहृदयता प्रकट हुई कि हेमचन्द्रका हृदय पिघल गया—उन्होंने कहा—मुझे जो दुःख है वह बहिनसे कहा नहीं जा सकता।

मनोरमाने कहा—तब मैं तुम्हारी बहिन नहीं हूँ।

हेमचन्द्रने कुछ उत्तर नहीं दिया। तो भी आशासे मनोरमा उनके मुँहकी ओर देखने लगी और बोली—मैं तुम्हारी कोई नहीं।

हे०—मेरा दुःख बहिनके सुननेके लायक नहीं है और न दूसरेके ही सुनने योग्य है।

हेमचन्द्रके गलेकी आवाज करुणासे भरी थी और बहुत ही हृदयकी वेदना प्रकट करनेवाली थी। वह मनोरमाके हृदयके भीतर जाकर टकराई। उसी समय वह आवाज बदल भी गयी।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
आंखोंसे आगकी चिनगारियां निकलने लगीं। ओठ काटकर हेमचन्द्रने कहा—मुझे क्या दुःख है। कुछ दुःख नहीं है। मैंने मणिके धोखेमें काले सांपको गलेमें पहन लिया था। अब उसको निकालकर फेंक दिया है।

मनोरमा अब भी पहलेकी तरह हेमचन्द्रकी ओर एकटक देख रही थी। धीरे-धीरे उसके मुँहपर अत्यन्त मधुर और करुणा पूर्ण हँसी प्रकटित हुई। लड़कपनकी ढिठाई आ पहुँची। सबसे चमकीली सूर्यकी किरणको पहनकर प्रतिभादेवी प्रकट हुई। मनोरमाने कहा—समझती हूं तुम बिना जाने-बूझे प्रेम करते हो, उसीका यह परिणाम है।

हे०—प्रेम करता था। हेमचन्द्रने वर्तमानके बदले भूतकाल-का प्रयोग किया, इसी समय उनका मुख बहते हुए आँसुओंके जलसे सराबोर हो गया।

मनोरमाने उदासीन हो कहा—छिः! छिः!! यह ठगी? जो दूसरेको को ठगता है। वही ठग है। जो आत्माको धोखा देता है उसका सर्वनाश हो जाता है। मनोरमा विरक्त हो अपने बिखरे बालोंको चम्पाके समान अपनी अंगुलियोंसे हटाने लगी।

हेमचन्द्रने आश्चर्यसे कहा—मैंने कौनसी ठगी की है?

मनोरमाने कहा—प्रेम करते थे कि प्रेम करते हो। नहीं तो रोते क्यों। क्या अपनी प्रेमिका को अपराधिनी समझकर तुम्हारा प्रेम घट गया है। किसने तुमको ऐसी बुद्धि दी है। कहते-कहते मनोरमाका मुँह प्रौढ़ा स्त्रीकी तरह गम्भीर हो गया और उसकी शोभा कमलके समान खिल उठी। आंखोंसे अधिक ज्योति निक-लने लगी। गलेकी आवाज और भी स्पष्ट होने लगी।

मनोरमा कहने लगी कि—यह केवल वीरता दम्भी पुरुषोंका अहंकार है। क्या अहङ्कारसे आग बुझती है। सम्भव है बालूके बांधसे वेगवती गङ्गाके प्रवाहको रोक सकी; परन्तु प्रेमिकाको

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पापिष्ठा समझकर कभी प्रेमकी प्रवाहको रोक नहीं सकते। हा कृष्ण ! क्या सभी मनुष्य ठग !

हेमचन्द्र विस्मित हो सोचने लगे—मैंने इसे एक दिन बालिका समझा था।

मनोरमा कहने लगी—तुमने पुराणोंकी कथा सुनी है ? मैंने पण्डितोंसे पुराणोंकी गूढ़ अर्थोंको सुना है। लिखा है, भगीरथ गंगाको लाये थे। एक दंभी मतवाला हाथी उनका वेग रोकनेके लिये लाया गया। वह जाकर गङ्गामें डूब गया। इसका मतलब क्या है ? गङ्गा प्रेम प्रवाह है, यह जगदीश्वरके चरणकमलोंसे निकली हैं। यह संसारमें पवित्र हैं। इनमें स्नानकर मनुष्य पुण्यमय हो जाता है। यह मृत्युञ्जय (शिवजी) की जटामें विहार करने वाली हैं। अतः जो मृत्युपर विजय पा सके, वही प्रेमको अपने सिरपर धारण करे। जो कुछ मैंने सुना है ठीक वैसा ही कहा है, वह घमण्डी हाथी घमण्डका रूप है। वह प्रेमके प्रवाहमें डूब जाता है। पहले प्रेमका एक ही पथ होता है :फिर उपयुक्त समय आनेपर वह कई रास्तोंसे फूट निकलता है। स्वभाव सिद्ध प्रेम कई पात्रोंमें रखा जाता है—अन्तमें समुद्रमें जा मिलता है—संसारके सब जीवोंमें विलीन हो जाता है।

हे०—तुम्हारे उपदेशकने क्या कहा है कि प्रेमके लिये पात्र कुपात्रका विचार नहीं ? क्या पापीसे भी प्रेम करना उचित है ?

म०—हां, पापीसे भी प्रेम करना होगा। प्रेमके लिये पात्र-कुपात्रका कुछ विचार नहीं है। सबसे प्रेम करना होगा। प्रेम उत्पन्न होनेपर बड़े यत्नसे उसे उचित स्थान देना होगा। क्योंकि प्रेम अमूल्य है। भाई ! जो अच्छा है उसे तो सब प्यार करते हैं। जो बुरे हैं उन्हें अपनाकर जो प्रेम करता है, मैं उसीको बहुत प्यार करती हूँ। पर मैं तो पगली हूँ।

हेमचन्द्रने आश्चर्यसे कहा—मनोरमा ! यह सब तुमने

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
किससे सीखा है ? तुम्हारे उपदेशक महाशय तो अलौकि मनुष्य जान पड़ते हैं !

मनोरमाने सिर नीचाकर कहा—वे सर्वज्ञ हैं किन्तु—

हे०—"किन्तु" क्या ?

म०—वे अग्निस्वरूप हैं। वे उजाला भी करते हैं और जलाते भी हैं। मनोरमा सिर झुकाये कुछ देरतक चुप रही।

हेमचंद्रने कहा-मनोरमा! तुम्हारा मुंह देखने और तुम्हारी बात सुननेसे तो जान पड़ता है कि तुम भी प्रेम करती हो। मालूम होता है जिसे तुम अग्निके समान बतलाती हो उसीसे प्रेम करती हो।

मनोरमा अब भी चुप रही। हेमचंद्र फिर कहने लगे—यदि यह सत्य है, तो मेरी एक बात सुनो। सतीत्वसे बढ़कर स्त्रियोंका दूसरा कोई धर्म नहीं है। जिस स्त्रीका धर्म नहीं, जिसका सतीत्व नहीं, वह शूकरीसे भी अधम है। केवल पतिके छोड़ देनेसे ही सतीत्वकी हानि नहीं होती, परपतिकी चिंता करनेसे ही सतीत्व-की हानि होती है। तुम विधवा हो। यदि पतिको छोड़कर किसी दूसरेकी मनमें चिन्ता करो तो भी तुम इस लोक और परलोकमें स्त्रियोंमें पतिता होकर रहोगी। इसीलिये सावधान हो जाओ। यदि किसीके प्रति तुम्हारा चित्त लगा हो तो उसे भूल जाओ।

मनोरमा बड़े जोरसे हँसने लगी। फिर मुंहको आंचलसे ढककर हंसने लगी। हंसी थमी नहीं। हेमचन्द्रने कुछ खिन्न होकर कहा—क्यों हँसती हो ?

मनोरमाने कहा—भाई! गंगाके किनारे जा खड़े हो और गंगा को पुकारकर कहो—गंगा! तुम फिर पर्वतको लौट जाओ ?

हेम०—क्यों ?

म०—स्मृति क्या अपने वशमें है राजपुत्र! कालसर्पको याद करनेसे क्या सुख मिलता है ? तुम उसे भुला क्यों नहीं देते ?

हे०—उसके काटनेकी ज्वालाके भयसे।

म०—और यदि वह न काटे तो उसे भुला दोगे ?

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हेमचन्द्रने उत्तर नहीं दिया। मनोरमा कहने लगी—तुम्हारी फूलकी माला सांपिन हो गई तिसपर भी तुम उसे भूल नहीं जाते। और मैं! मैं तो पगली हूँ। मैं अपनी फूलोंकी माला क्यों छोड़ूं?

हेमचन्द्रने कहा—तुम एक प्रकार अनुचित भी नहीं कहती हो; किन्तु भूल जाना अपने मनकी बात नहीं है। सब लोग अपने बड़प्पनसे अंधे होकर औरोंको जो उपदेश देते हैं उनमें 'भूल जाओ' इस उपदेशसे बढ़कर हँसीकी और कोई बात नहीं है। जब कोई किसीसे यह नहीं कहता कि धनकी चिन्ता छोड़ो, यशकी लालसा छोड़ो, ज्ञानकी प्यास छोड़ो, भूख मिटानेकी इच्छा छोड़ो, प्यास बुझानेकी इच्छा छोड़ो, सोना छोड़ो, तब फिर कोई यह क्यों कहता है कि प्रेम छोड़ो? क्या प्रेम इन सभी कामनाओंसे कम है? प्रेम इन सब कामनाओंसे कभी छोटा नहीं है। किन्तु धर्मसे अवश्य छोटा है। धर्मके लिये प्रेमका त्याग करूँगा। स्त्रीका बड़ा धर्म सतीत्व ही है। इसीलिये तुमसे कहता हूँ कि हो सके तो प्रेमका त्याग करो।

म०—मैं अबला, अज्ञाना और विवशा हूँ। मैं यह नहीं जानती कि धर्म क्या है, अधर्म क्या है। मुझे इतना ही मालूम है कि धर्मके बिना प्रेम उदय नहीं होता।

हे०—सावधान हो जाओ, मनोरमा! वासनासे भ्रम पैदा होता है और भ्रमसे अधर्मका जन्म होता है। तुम्हारा भ्रम पूरा हो गया है। तुम विचार करो, देखो, यदि तुम धर्मसे एककी स्त्री हो और मनसे किसी औरकी पत्नी बनो तो तुम व्यभिचारिणी हुई कि नहीं?

घरमें हेमचन्द्रकी ढाल और तलवार लटक रही थी। मनोरमाने हाथमें ढाल लेकर कहा—भाई हेमचन्द्र! तुम्हारी यह ढाल किसके चमड़ेकी बनी है?

हेमचन्द्र हँसने लगे। मनोरमाके मुखकी ओर देखकर सोचने लगे—क्या यह बालिका है!

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पंचविंश परिच्छेद

गिरिजायाका संवाद

गिरिजाया जिस समय मल्लाहके घर लौटी, उसी समय उसने स्थिर कर लिया था कि मरते दमतक हेमचन्द्रके नये प्रेम-की बात मृणालिनीसे न कहूंगी। मृणालिनी उसकी प्रतीक्षामें पिंजरेमें बन्द चिड़ियाकी तरह छटपटा रही थी। गिरिजायाको देखते ही उसने कहा—कहो गिरिजाया! क्या देखा? हेमचन्द्र कैसे हैं?

गिरिजायाने कहा अच्छे हैं।

मृ०—क्यों? इस तरह क्यों कह रही हो? जान पड़ता है तुम्हारी बातोंमें उत्साह नहीं है, जिससे इतना दुःखित होकर बोल रही हो।

गि०—वह क्या?

मृ०—गिरजाया! मुझे धोखा मत दो। क्या हेमचन्द्र अच्छे नहीं हैं? यदि ऐसी बात हो तो मुझसे साफ साफ कहो। संदेह-से दृढ़ विश्वास ही अच्छा है।

अब गिरिजाया हँसकर बोली—तुम व्यर्थ क्यों परेशान हो रही हो? मैं सच कहती हूँ उनके शरीरमें कुछ पीड़ा नहीं है। वे उठकर टहल रहे थे।

मृणालिनीने कुछ देर सोचकर कहा—मनोरमाके साथ उनकी कोई बातचीत सुनी?

गि०—हां, सुनी है?

तब गिरिजायाने, हेमचन्द्रसे जो-जो बातें कही थीं, सब कह सुनाई, केवल मनोरमाके साथ रातको घूमनेकी बात तथा उसने हेमचन्द्रके कानमें जो कुछ कहा था इन्हीं दो बातोंको छिपाया। मृणालिनीने पूछा—तुमने हेमचन्द्रसे भेंट की है?

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गिरिजायाने कुछ आनाकानी करनेके बाद कहा—की है।

मृ०—उन्होंने क्या कहा ?

गि०—तुम्हारा हाल पूछा।

मृ०—तुमने क्या कहा ?

गि०—मैंने कहा "वह अच्छी है।"

मृ०—मेरे यहां आनेकी भी बात तुमने कही ?

गि०—नहीं।

मृ०—गिरिजाया ! तुम इधर-उधरकी बातें कर रही हो। तुम्हारा मुँह सूखा हुआ है। तुम मेरी ओर नजर नहीं मिला सकती। इसमें मैं निश्चय समझती हूँ कि तुम कोई अशुभ समाचार मुझसे छिपा रही हो। मैं तुम्हारी बातका विश्वास नहीं कर सकती। भाग्यमें जो लिखा है वह हो। मैं आप ही हेमचन्द्र-को देखने जाऊँगी। हो सके तो तुम मेरे साथ चलना। नहीं तो मैं अकेली जाऊँगी। यह कहकर मृणालिनी अंचलसे मुँह ढककर बड़ी तेजीसे सड़कको पार करके चली गई।

गिरिजाया उसके पीछे-पीछे दौड़ी। कुछ दूर जाकर उसका हाथ पकड़कर कहा—ठकुरानी ! लौटो। मैंने जो तुमसे छिपाया था उसे कहे देती हूं।

मृणालिनी गिरिजायाके साथ-साथ घर चली आई। तब गिरिजायाने जो कुछ छिपाया था, वह कह सुनाया।

गिरिजायाने हेमचन्द्रको धोखा दिया था, पर वह मृणालि-नीको धोखा न दे सकी।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

षडविंश परिच्छेद

—:※:—

मृणालिनीकी चिट्ठी

मृणालिनीने कहा—गिरिजाया! क्या है उन्होंने क्रोधमें कहा "अच्छा हुआ है?" भला यह सुनकर उन्हें क्यों न क्रोध आवे?

गिरिजायाको भी उस समय सन्देह हुआ। उसने कहा—हाँ यह सम्भव है।

तब मृणालिनीने कहा—तुमने यह बात कहकर अच्छा नहीं किया। इसका उपाय करना चाहिये। जाओ तुम भोजन कर आओ, तबतक मैं चिट्ठी लिख रखती हूँ। तुम भोजन करनेके बाद उसे लेकर उनके यहाँ जाना।

गिरिजाया उसकी बात मानकर भोजन करने चली गई। मृणालिनीने एक छोटा-सा पत्र लिखा। उसमें लिखा—

"गिरिजाया झूठी है। जिसलिये उसने तुमसे मेरे सम्बन्धमें झूठी बात कही है, पूछनेपर उसका कारण वह आप ही बतला देगी। मैं मथुरा नहीं गई। जिस रातको तुम्हारी अंगूठी देख यमुनाके तटपर आई थी उसी रातसे मेरे लिये मथुराका रास्ता बन्द हो गया। मैं मथुरा न जाकर तुम्हें देखनेके लिये नवद्वीपमें आई हूँ। नवद्वीप आकर भी आजतक तुमसे मुलाकात न हुई। उसका कारण यही है कि ऐसा करनेसे तुम्हारी प्रतिज्ञा भंग हो जायगी। मैं तुमको देखना चाहती हूँ। क्या उस प्रतिज्ञाके पूरा हो जानेपर तुमसे भेंट करनेकी आवश्यकता है।"

गिरिजाया उस चिट्ठीको लेकर हेमचन्द्रके घरकी ओर चली। शामको मनोरमाके साथ बातचीत होनेके बाद हेमचन्द्र गंगाजीके

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)
दर्शन करने जा रहे थें। राहमें ही गिरिजायासे भेंट हो गयी। गिरिजायाने उनके हाथमें चिट्ठी दे दी।

हेमचन्द्रने कहा—फिर तुम क्यों आई?

गि०—चिट्ठी लेकर आई हूँ।

हे०—किसकी चिट्ठी?

गि०—मृणालिनीकी।

हेमचन्द्र आश्चर्यसे बोले—यह चिट्ठी तुम्हें कैसे मिली?

गि०—मृणालिनी नवद्वीपमें ही है। मैंने उसके मथुरा जानेकी बात आपसे झूठ कही थी।

हे०—क्या यह चिट्ठी उसीकी है?

गि०—हां, उसीके हाथकी लिखी है।

हेमचन्द्र बिना चिट्ठीके पढ़े ही टुकड़े-टुकड़े करके चीर-फाड़ डाला। सब टुकड़ोंको फेंककर कहा—तुम्हारे झूठी होनेकी बात पहले ही सुन चुका हूं। तुम जिस दुष्टाकी चिट्ठी लेकर आई हो वह विवाह करनेके लिये नहीं गई है यह तो पहले ही सुन चुका हूं कि हृषीकेशने उसे घरसे निकाल दिया है। मैं कुलटाकी चिट्ठी नहीं पढ़ सकता। तुम मेरे सामनेसे हट जाओ।

गिरिजाया कुछ उत्तर न देकर हेमचन्द्रके मुँहकी ओर देखने लगी।

हेमचन्द्र रास्तेके किनारेके एक छोटे पेड़की पतली डाल तोड़ उसे हाथमें लेकर बोले—हट जा, नहीं तो बेंतसे तुम्हारी खबर लूँगा।

गिरिजाया अब सह न सकी। उसने धीरे-धीरे कहा—वीर पुरुष हो! ऐसी ही वीरता दिखानेके लिये नवद्वीपमें आये हो यहां आनेकी कोई आवश्यकता न थी। यह वीरता तो मगधमें बैठे दिखला सकते थे। वहीं मुसलमानोंके जूते ढोते और गरीब-लड़कियोंको बेंतसे मारते।

हेमचन्द्रने शरमाकर वह पतली डाल फेंक दी। तिसपर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
भी गिरिजायाका क्रोध नहीं उतरा। उसने कहा—तुम मृणालिनीके साथ ब्याह करोगे? मृणालिनी तो दूर रहे, तुममें मेरे वर होनेकी भी योग्यता नहीं है।

यह कहकर गिरिजाया मद-मत्त हस्तिनीके समान चली गई। हेमचन्द्र भिखारिनका अहङ्कार देखकर चुप हो रहे।

गिरिजायाने लौट आकर हेमचन्द्रकी सभी बातें मृणालिनीको सुनाईं। इस बार उसने कुछ भी न छिपाया। मृणालिनीने सुनकर कुछ उत्तर नहीं दिया। रोई भी नहीं। जिस दशामें उसने यह बात सुनी, उसी हालतमें ज्यों-की-त्यों वह बैठी रह गयी। यह देखकर गिरिजायाको बड़ी शंका हुई। उस समय मृणालिनी से बातचीत करना उचित न समझ वह वहांसे चली गई।

मल्लाहकी झोपड़ीके पास ही सीढ़ीवाली जो एक पोखरी थी गिरिजाया उसकी एक सीढ़ीपर जाकर बैठ गई।

(शरद पूर्णिमाकी उज्ज्वल चांदनीमें पोखरीका निर्मल नीला जल और भी स्वच्छ होकर चमक रहा है। अधखिले फूलोंकी छाया उस नीले जलमें पड़ रही है। चारों ओर वृक्षोंकी मालाएँ आपसमें मिलकर आकाशकी सीमा बतला रही हैं। वे हिलती-डुलती भी नहीं हैं। कहीं-कहीं दो एक लम्बी डालियाँ ऊपर उठकर आकाश पटऊपर चित्रित हो रही हैं। नीचेकी अन्धकार राशिसे नव-विकसित फूलोंकी सुगन्धि आ रही है। गिरिजाया सीढ़पर जाकर बैठ गई।)

वह पहले धीरे-धीरे मीठे-मीठे गीत गाने लगी जैसे नई सिखलाई चिड़िया पहले स्पष्ट नहीं बोल सकती। गिरिजायाका स्वर क्रमशः स्पष्ट होने लगा। फिर कुछ कुछ ऊंचा भी होने लगा। अन्तमें पूरे तान-लयके साथ उसका वह स्वर पोखरी, उपवन और आकाशमें फैलकर स्वर्गसे निकली हुई स्वर-नदीकी तरङ्गके सदृश मृणालिनीके कानोंमें जाकर पड़ने लगा।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गिरिजायाने गाया—

सखि ! मम निकसि गयो नहिं प्रान ।
जा दिन देख्यों जमुनातटपर सुन्दर श्याम सुजान ॥
गावत नाचत मुरली टेरत मन्द-मन्द मुसुकान ।
जमुना जलमें बह न गई मैं सुन मुरलीकी तान ॥
आइ भवन कछु बोल सकी नहिं बहत चले अँसुआन ।
आँचल दियो भिगाय हमारो, तऊ न निकस्यो प्रान ॥

गिरिजायाने गाते-गाते देखा कि उसके सामने चाँदनीमें किसी आदमीकी परिछायीं पड़ रही है। उसने पीछे फिरकर देखा मृणालिनी खड़ी थी। उसके मुँहकी ओर अच्छी तरह देखा मृणालिनी रो रही थी।

गिरिजाया देखकर खुश हुई। उसने समझा कि जब मृणालिनीकी आँखोंसे आँसू निकल चुके हैं तब उसका दुःख कुछ घट गया है। इस गूढ़ बातको सब नहीं समझते। सब सोचते हैं, इसकी आँखोंमें कभी आँसू तो नहीं देखा है, तो इसे किस बातका क्लेश है। यदि इसे सब समझते तो न जाने संसारकी कितनी मर्मपीड़ा दूर हो जाती।

थोड़ी देरतक दोनों चुप रहीं। मृणालिनी कुछ न बोल सकी, गिरिजाया भी कुछ न पूछ सकी। फिर मृणालिनीने कहा—गिरिजाया ! एक बार और तुम उनके यहाँ जाओ।

गि०—अब उस नीचके पास नहीं जाऊँगी।

मृ०—नीच मत कहो। हेमचन्द्र भ्रममें हैं। इस संसारमें कौन है जिसे भ्रम पैदा नहीं होता। किन्तु हेमचन्द्र नीच नहीं हैं। मैं स्वयं अभी उनके पास जाऊँगी। तुम मेरे साथ चलो, तुम मुझे बहिनसे भी अधिक प्यार करती हो। तुम मेरे लिये सब कुछ करती हो। तुम कभी बिना प्रयोजन मेरे मनको दुःख न देती। मुझसे तुमने उनकी बातें झूठी नहीं कही हैं। यह मैं अच्छी तरह जानती हूँ। परन्तु जबतक हेमचन्द्रके मुखसे अपने अकारण

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

छोड़ दिये जानेकी बात सुन नहीं लेती तबतक मेरे हृदयको शांति नहीं मिल सकती। जब उनके मुंहसे सुनूंगी कि मुझे कुलटा समझकर छोड़ दिया है, तब प्राणत्याग कर दूंगी।

गि०—प्राणत्याग! यह क्या मृणालिनी?

मृणालिनीने कुछ उत्तर नहीं दिया। गिरिजायाके कन्धेपर हाथ रखकर रोने लगी। गिरिजाया भी रोने लगी।

सप्तविंश परिच्छेद

अमृतमें विष विषमें अमृत

हेमचन्द्रने आचार्यकी बातका विश्वास कर मृणालिनीको कुलटा समझ लिया था। मृणालिनीके पत्रको बिना पढ़े ही टुकड़े-टुकड़े कर डाला था। उसकी दूतीको बेत मारने उठे थे। पर इसका मतलब यह नहीं था कि वह मृणालिनीको प्यार नहीं करते थे। मृणालिनीके लिये वे राजपाट छोड़ मराथुरामें वास करते थे। उसी मृणालिनीके लिये उन्होंने गुरुपर धनुष-बाण उठाया था। और उसीके लिये भिखारिनी गिरिजायाको सब तरहसे खुश रखते थे। किन्तु अब हेमचन्द्रने माधवाचार्यको बरछा दिखलाते हुए कहा कि मृणालिनीको इसी बरछेसे घायल करूंगा। पर क्या इससे उनका प्रेम एकदम हट गया है? क्या एक ही दिनमें प्रेम विनष्ट हो सकता है। पहाड़का पानी बहुत दिनोंतक पृथ्वीपर विचरण करनेके बाद अपने रास्तेपर गढ़ा बना देता है। क्या एक दिनकी सूर्यकी गर्मीसे वह गढ़ा सूख सकता है? जलके जिस मार्गपर गढ़ा बना रहता है उसी रास्तेसे जल बहता है। यदि उसका मार्ग रोक दिया जाय तो पृथ्वी डूब जाय। हेमचन्द्र उस रातको अपने सोनेके कमरेमें बिछौनेपर सोकर खुली हुई खिड़कीके पास सिर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रखकर सामनेकी ओर देख रहे थे। क्या वे रातकी सुन्दरता देख रहे थे ? यदि उस समय उनसे कोई पूछता कि अन्धेरी रात है या उजेली, तो वे जल्दी नहीं बता सकते। उनके हृदयमें जो रात हुई है उसे ही वे देख रहे हैं। वह रात तो इस समय भी उजेली है नहीं तो उनका तकिया भींग क्यों गया है। केवल बादल छाये हैं। जिसके हृदय-आकाशमें अन्धकार घिरा है वह कभी नहीं रोता।

जो कभी नहीं रोता वह नीच है। उसका कभी विश्वास न करो। सच जानो उसने संसारका आनन्द कभी उपभोग नहीं किया। दूसरेका सुख उसे कभी नहीं अच्छा लगता। हो सकता है, कोई-कोई आत्म-विजयी महात्मा बिना आंसू बहाये ही मनकी कठिन से कठिन पीड़ाको सहन करते हों और कर चुके हों, किन्तु यदि उन्होंने कभी एक दिन एकान्तमें एक बूंद आंसूसे पृथ्वीको तर नहीं किया है तो वे चित्त-विजयी महात्मा हो सकते हैं। मैं चोरके साथ प्रीति करूंगा, परन्तु उनके साथ प्रीति नहीं करूंगा।

हेमचन्द्र रो रहे थे। जिसे कुलटा समझकर हृदयमें स्थान देनेके लिये अयोग्य समझते थे, उसीके लिये रोते थे। क्या वे मृणालिनीके दोषोंकी छानबीन करते थे ? नहीं, केवल वही नहीं करते थे, वरन् एक-एक करके, मृणालिनीके प्रेम भरे मुखमंडल, रसीली बातों और प्रेमसे पूर्ण उसके कामोंको याद कर रोते थे। वही मृणालिनी क्या अविश्वासके योग्य है ? एक दिन मथुरामें हेमचन्द्र मृणालिनीके यहां पत्र भेजनेके लिये व्यस्त थे, पर कोई विश्वासी पत्र ले जानेवाला न मिला। उस समय वे मृणालिनीको खिड़कीकी राह किसी तरह देख सके। हेमचन्द्रने एक आमके फलपर जरूरी बातें लिखकर मृणालिनीकी गोदको निशाना बना उसे खिड़कीकी राह फेंक दिया। उसे पकड़नेके लिये मृणालिनी कुछ आगे झुकी। आम मृणालिनीकी गोदमें न पड़कर उसके

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कानमें लगा। उसकी चोटसे कानमें लटकनेवाला रत्नका कुण्डल कानको काटकर गिर पड़ा। कानसे टपकनेवाले खूनसे उसका गला रंग गया। मृणालिनीने भौंहें भी टेढ़ी न कीं और कान-पर हाथ भी न रखा। हंसते हुए आम उठा लिया और उसे पढ़-कर उसी समय उसकी पीठपर उत्तर लिखकर लौटा दिया। और जबतक हेमचन्द्र आंखोंके सामने रहे तबतक खिड़कीपर खड़ी होकर हँसती देखती रही। हेमचन्द्रको वह बात भी याद आई। वही मृणालिनी क्या कुलटा है? यह हो नहीं सकता। एक दिन मृणालिनीको बिच्छूने डंक मारा था। उसकी पीड़ासे मृणालिनी मरने-मरने हो गई थी। उसकी एक दासी अच्छी दवा जानती थी। उसके लगाते ही पीड़ा एकदम छूट जाती थी। दासी जल्दी से दवा लेने गई। इसी समय हेमचन्द्रकी दूती ने कहा— "हेमचन्द्र उपवनमें तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं।" एक ही पलमें दवा आ जाती, पर मृणालिनीने उसकी राह न देखी। उसी समय मरनेसे भी अधिक पीड़ाको भूलकर वह उपवनमें पहुंची। फिर दवा न लगी। हेमचन्द्रको वह बात भी याद आई। वही मृणालिनी, ब्राह्मण-कुल-कलंक व्योमकेशके लिये हेमचन्द्रसे छल करेगी? नहीं, यह कभी नहीं हो सकता। हेमचन्द्र एक दिन गुरुके दर्शन करनेके लिये मथुरासे चले। एक पहरका रास्ता चलनेके बाद हेमचन्द्रको पीड़ा पैदा हुई। वे एक धर्मशालामें पड़े रहे। किसी प्रकार यह समाचार रनिवासमें मृणालिनीके कानों-तक पहुँचा। मृणालिनी उसी रातको सिर्फ एक ही धायको साथ लेकर रातके ही समय उस एक योजन रास्तेको पैदल पार करके हेमचंद्रको देखनेके लिये आ पहुँची। जब मृणालिनी धर्मशालामें पहुंची तब वह थककर चूर-चूर हो गई थी और उसके पैर ऐसे कट गये थे कि खून बह रहा था। उसी रातको मृणालिनी पिताके डरसे घर लौट आयी। घर आकर वह खुद बीमार पड़ी। हेमचन्द्रको वह भी याद आया। वही मृणालिनी नीच व्योमकेशके

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

लिये हेमचन्द्रको छोड़ देगी ? क्या वह अविश्वासिनी हो सकती है ? जो ऐसी बातपर विश्वास करे वह महामूर्ख है । वही अविश्वासी है, वही पतित मनुष्य है, वही महामूर्ख है । हेमचन्द्रने सैकड़ों बार सोचा—मृणालिनीका पत्र क्यों नहीं पढ़ लिया ? नवद्वीपमें क्यों आई है, यह भी क्यों न मालूम कर लिया ? मैंने जिस पत्रको टुकड़े-टुकड़े करके वनमें फेंक दिया वे टुकड़े यदि वहाँ मिल जायँ, तो उन्हें जोड़कर जहाँतक हो सके उतनी दूरतकका समाचार जान जाऊँ । इस आशामें एक बार वह उस वनमें गये थे, पर वहाँ अन्धकारमें कुछ भी न देख सके । हवा उन सब टुकड़ोंको उड़ा ले गयी थी । हेमचन्द्र यदि उस समय अपने दाहिने हाथके काट देनेसे भी उन टुकड़ोंको पा जाते, तो वे उसे भी काट डालते ।

अब सोचने लगे—आचार्य झूठी बात क्यों कहेंगे ? आचार्य बड़े सच्चे हैं । वे कभी झूठी बात न कहेंगे । मुझको पुत्रसे भी अधिक प्यार करते हैं और जानते हैं कि इस समाचारसे मुझे मरणसे भी अधिक दुःख होगा । वे क्यों झूठी बात कहकर मुझको इतना दुःख देंगे ? और उन्होंने भी अपनी इच्छासे यह बात नहीं कही है । मैंने घमंडसे इस बातको उनके सामने छेड़ा है । जब मैंने कहा कि मैं सभी बातें जानता हूं, तभी उन्होंने यह बात कही । यदि झूठी बात कहनेकी जरूरत होती तो वे उदासीनतासे बिना इच्छाके क्यों कहते ? तब हो सकता है कि हृषीकेशने ही उनसे झूठी बात कह दी है । पर हृषीकेश बिना कारण ही गुरुसे झूठी बात क्यों कहेंगे ? और मृणालिनी उनका घर छोड़कर नवद्वीपमें क्यों आई ?

जब हेमचन्द्र ऐसा सोचते थे तब उनका मुँह काला हो जाता था । ललाटपर पसीना आ जाता था । वे बिछौना छोड़ उठ बैठते थे और दाँतोंसे ओठ काटने लगते थे । आँखें लम्बी और बड़ी हो जाती थीं । बरछा उठानेके लिये हाथमें मुट्ठी बाँध लेते

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

थे। जब मृणालिनीका प्रेम भरा मुँह याद आ जाता था तब जड़से कटे हुए पेड़के समान बिछौनेपर गिर जाते थे और तकिये में मुँह छिपाकर बालकके समान रोने लगते थे। हेमचन्द्र इसी प्रकार रो ही रहे थे कि उनके शयन गृहका दरवाजा खोलकर गिरिजाया घुस आई।

हेमचन्द्रने पहले समझा कि मनोरमा है। उस समय उन्होंने देखा कि वह फूलोंसे भरी मूर्त्ति नहीं है। पीछे पहचाना कि गिरिजाया है। पहले तो आश्चर्यमें पड़ गये, पर पीछे प्रसन्न हुए। बड़े कौतूहलसे वे बोले—फिर तुम क्यों आई?

गिरिजायाने कहा—मैं मृणालिनीकी दासी हूँ। आपने मृणालिनीको छोड़ दिया है; पर मृणालिनीने आपको नहीं छोड़ा है। इसीलिये मैं यहाँ आई हूं। मुझे बेत मारना चाहते हों, तो मारिये। ठकुरानीके लिये इस समय सब बरदाश्त कर लूंगी। मैंने अपने मनमें यही स्थिर कर लिया है।

इस तिरस्कारसे हेमचन्द्र बहुत झेंप गये। फिर बोले—तुम डरो मत। मैं स्त्रीको नहीं मारूंगा। फिर तुम्हारा आना कैसे हुआ? मृणालिनी कहाँ है? शामको तुमने कहा था कि वह नवद्वीपमें आई है। वह क्यों नवद्वीपमें आई है? मैंने उसका पत्र न पढ़कर अच्छा नहीं किया।

गि०—मृणालिनी आपको देखनेकी इच्छासे नवद्वीपमें आई है।

हेमचन्द्रके शरीरके रोयें खड़े हो गये। जिन्होंने मृणालिनीको कुलटा कहकर तिरस्कार किया था, उन्होंने फिर गिरिजायासे पूछा—मृणालिनी कहाँ है?

गि०—वे आपके यहाँ जीवनभरके लिये अन्तिम विदा लेनेके लिये आई हैं। सरोवरके तीरपर खड़ी हैं। आप वहाँ चलिये।

कहकर गिरिजाया वहाँसे चली गई। हेमचन्द्र उसके पीछे-पीछे दौड़े गये।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गिरिजाया बावलीके तीर पहले जहां सीढ़ीपर बैठी थी वहाँ आ पहुँची। हेमचन्द्र भी वहीं आ गये। गिरिजायाने कहा— ठकुरानी ! देखो, राजपुत्र आये हैं।

मृणालिनी उठ खड़ी हुई। दोनोंने दोनोंकी ओर देखा। मृणालिनीकी नजर झेंप गई। आँखोंमें आंसू भर आये। डाल टूट जानेसे जैसे डालपर लिपटी हुई लता जमीनपर गिर जाती है उसी तरह मृणालिनी हेमचन्द्रके पांवोंपर गिर पड़ी। गिरिजाया वहाँसे हट गई।

———

अष्टाविंश परिच्छेद

इतने दिनोंके बाद

हेमचन्द्रने मृणालिनीको हाथसे पकड़कर उठाया। दोनों एक दूसरेके सामने खडे हुए। इतने दिनोंके बाद वे आपसमें मिले। जिस दिन शामको यमुनाके किनारे ग्रीष्म ऋतुकी हवासे हिलते हुए मौलसरीके नीचे खड़े होकर श्याम जलसे भरी हुई यमुनाकी लहरपर तारोंकी परछाईं देखते-देखते दोनों आँखोंमें आँसू भरकर बिदा हुए थे, उसके बाद आज ही देखा-देखी हुई है। गरमीके बाद वर्षाऋतु बीत गई है। वर्षाके बाद शरदका आगमन होगा। किन्तु इनके हृदयमें कितनी ऋतुएं बीत गई हैं, उनकी गिनती नहीं हो सकती है।

उसी आधी रातको विमल जलसे भरी बावलीके तीरपर दोनों आमने-सामने खड़े हुए। चारों ओर वही घना वन था। सघन बेलोंसे लिपटे हुए बड़े-बड़े वृक्ष आंखोंका मार्ग रोककर खड़े थे। सामने नील बादलके टुकड़ेकी तरह बावली, सेवार, कुमुद और कमलोंके साथ फैली थी। ऊपर चन्द्रमा, तारा और

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
बादलोंके साथ आकाश उस चाँदनीमें विहँस रहा था। वह चाँदनी आकाशमें, पेड़ोंकी चोटियोंपर, लताके पत्तोंपर, बावली-की सीढ़ियोंपर और नील:जलपर सर्वत्र विहँस रही थी। प्रकृति निस्तब्ध और शान्त थी। उसी शान्त प्रकृतिकी अटारीपर मृणा-लिनी और हेमचन्द्र एक दूसरेके सामने खड़े हुए।

क्या बोलनेके लिये शब्द नहीं थे? क्या उन दोनोंके मनमें कहनेके लिये कोई बात न थी? यदि मनमें कहनेकी बात थी और कहनेके लिये शब्द थे, तो बातें क्यों नहीं करते थे? उस समय चार आंखें होते ही मन मतवाला बन गया, तो बात कैसे करें? इस समय केवल प्रेमीके पास रहने हीसे इतना सुख है कि हृदयमें और सुखके रहनेकी जगह ही नहीं है। जो उस सुखका अनुभव करता है वह दूसरे सुखकी इच्छा नहीं करता।

इस समय कहनेके लिये इतनी बातें हैं कि इसका निर्णय करना कठिन है कि पहले कौन बात कहें। मानव भाषामें ऐसा कौन शब्द है जो इस समय उपयुक्त हो सकता?

दोनों एक दूसरेका मुंह देखने लगे। हेमचन्द्रने मृणालिनी-का वही प्रेम-पूर्ण मुख देखा। हृषीकेशकी बातका विश्वास हटने लगा। हेमचन्द्र उसकी आंखोंकी ओर देखने लगे। आँखें सुन्दर और बड़ी-बड़ी हैं। वे नील कमलकी निन्दा करनेवाली और हृदयके दर्पणकी तरह स्वच्छ हैं। उन आँखोंसे केवल प्रेमके आंसू बह रहे थे। जिसकी ऐसी आँखें हैं क्या वह अविश्वास करने योग्य है?

हेमचन्द्र पहले बोले। उन्होंने पूछा—मृणालिनी! कैसी हो?

मृणालिनी उत्तर न दे सकी। इस समय उसका चित्त शान्त नहीं था। उसने कुछ कहना चाहा, पर आँखें आंसुओंसे भर गईं, गला रुंध गया और मुंहसे बात न निकली।

हेमचन्द्रने फिर पूछा—तुम कैसी हो?

मृणालिनी फिर भी कुछ कह न सकी। हेमचन्द्रने उसका हाथ

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पकड़कर सीढ़ीपर बैठाया। आप भी उसके पास जा बैठे। मृणालिनीके चित्तमें जो कुछ शांति थी वह भी इस आदरसे चली गई। धीरे-धीरे उसका सिर आप-ही-आप हेमचन्द्रके कंधे-पर आ लगा। मृणालिनी जानते हुए भी न जान सकी। अब मृणालिनी रोने लगी। उसके आंसुओंसे हेमचन्द्रका कंधा और छाती भींग गई। संसारमें मृणालिनीने जितने सुख भोग किये हैं उनमें कोई सुख इस रोनेके सुखकी बराबरी नहीं कर सकता।

अब हेमचन्द्रने कहा—मृणालिनी! मैंने बहुत बड़ा अपराध किया है। तुम मेरे अपराधको क्षमा करो। मैंने तुम्हारे प्रति कलङ्ककी बात सुनकर विश्वास कर लिया था। विश्वास करनेके कई कारण भी थे, तुम उन्हें दूर कर सकती हो। जो मैं पूछता हूँ उसका ठीक-ठीक उत्तर दो।

मृणालिनी हेमचन्द्रके कन्धेके ऊपर सिर रखे हुए ही बोली-क्या?

हेमचन्द्रने कहा—तुमने हृषीकेशका घर किस लिये छोड़ दिया?

हृषीकेशका नाम सुन क्रोधित सर्पिणीकी तरह मृणालिनीने अपना सिर उठाकर कहा—हृषीकेशने मुझे अपने घरसे बाहर निकाल दिया।

हेमचन्द्र सुनकर दुखी हुए। मनमें कुछ सन्देह भी किया और कुछ चिन्ता भी हुई। इसी अवसरपर मृणालिनीने अपना सिर हेमचन्द्रके कन्धेपर फिर रख दिया। उस सुखके आसनपर सिर रखनेसे उसे इतना आनन्द मिलता था कि मृणालिनी उसे छोड़ना नहीं चाहती थी।

हेमचन्द्रने पूछा—हृषीकेशने तुमको घरसे क्यों निकाल दिया?

मृणालिनीने हेमचन्द्रकी छातीमें अपना मुंह छिपा लिया। और बड़े ही मृदुल स्वरमें कहा—तुमसे क्या कहूँ? हृषीकेशने मुझे दुश्चरित्रा कहकर घरसे बाहर कर दिया।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सुनते ही हेमचन्द्र तीरकी तरह खड़े हो गये। मृणालिनीका सिर उनकी छातीसे फिसलकर सीढ़ीपर गिर गया।

पापिष्ठा! तुमने अपने ही मुंहसे अपना पाप स्वीकार कर लिया --दांत पीसकर कहते हुए हेमचन्द्र बड़ी तेजीसे चले गये। राहमें गिरिजाया मिली। गिरिजाया सजल मेघके समान भयानक उनकी मूर्त्ति देख डरकर खड़ी हो गई। लिखते लज्जा आती हैं, पर बिना लिखे बनता भी नहीं। हेमचन्द्रने लात मारकर गिरिजायाको रास्तेसे हटा दिया। और कहा--तू जिसकी दूती है उसे लात मारनेसे मेरा पैर कलुषित हो जायगा। यह कहकर हेमचन्द्र चले गये।

जिसमें धीरज नहीं है वह जन्मांध है। वह संसारका कोई सुख नहीं पा सकता। कवियोंका कहना है कि केवल अधीरजके ही कारण वीरश्रेष्ठ द्रोणाचार्य मारे गये।

केवल "अश्वत्थामा हतः।" कोही सुनकर उन्होंने धनुषबाण छोड़ दिया। किसीसे पूछकर उन्होंने उसका ठीक-ठीक पता नहीं लगाया। हेमचन्द्रमें केवल अधैर्य्य ही नहीं है, वरन् इसके अतिरिक्त, उनमें अभिमान और क्रोध भी है।

ठंढी हवा बहने लगी। ऊषाकी सुनहली ज्योति बावलीके तीरपर उदित हुई। उस समय भी मृणालिनी घायल सिर लिये सीढ़ीपर बैठी हुई थी। गिरिजायाने पूछा--ठकुरानी! क्या अधिक चोट लगी है?

मृणालिनीने कहा--किसकी चोट?

गि०--सिरकी।

मृ०--सिरकी चोट? मुझे मालूम नहीं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

उनत्रिंश परिच्छेद

मकड़ी

जिस समय मृणालिनीके सुखका तारा डूब रहा था उसी समय गौड़ देशका सौभग्य-चन्द्र भी उसी पथका अनुगामी हो रहा था। जिस मनुष्यके देखनेसे गौड़ देशकी रक्षा हो सकती थी वह मकड़ीकी तरह दूर बैठ अभागिनी जन्म-भूमिको फंसानेके लिये जाल तैयार कर रहा था। आधी रातको एकान्तमें धर्माधिकारी पशुपति अपने दाहिने हाथ शान्तशीलको डांट रहे थे—शान्तशील ! सवेरे जो तुमने खबर दी थी वह केवल तुम्हारी ही गलती थी। तुमपर और किसी कामके भार देनेकी मेरी इच्छा नहीं।

शान्तशीलने कहा—जो मेरे लिये दुःसाध्य है, मैं उसे नहीं पूरा कर सकता। किसी और काममें मेरी परीक्षा लीजिये ?

प०—क्या सिपाहियोंको बतला दिया गया है ?

शा०--यही न कि हमारी आज्ञाके बिना कोई लड़ाईका साज-सामान न करे ?

प०—क्या सीमा-रक्षकों और बन-रक्षकोंको सिखला दिया गया है।

शा०—यही कह दिया है कि बहुत शीघ्र ही मुसलमान बादशाहके दो-चार मुसलमान दूत आवेंगे, उन्हें मत रोकना।

प०—दामोदर शर्माने हम लोगोंके कहे मुताबिक काम किया है या नहीं ?

शा०—उन्होंने बड़ी चतुराईसे अपना काम किया है।

प०—वह कैसे ?

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

शा०—उन्होंने एक पुरानी पुस्तकका एक पृष्ठ बदलकर उसमें आपकी रचित कविता रख दी थी। उसे आज शामको राजाको सुनाया है और माधवाचार्यकी बड़ी शिकायत की है।

प०—कवितामें गौड़ देश विजयी राजाके रूपका वर्णन खूब बढ़ा-चढ़ाकर लिखा गया है। क्या उसके बारेमें महाराजने आपसे कुछ पूछा था।

शा०—हाँ, मदनसेनका इस समय काशीधामसे आना महाराजने सुन लिया था। महाराजने कवितामें गौड़ विजय करनेवाले राजाके रूपका वर्णन सुनकर उन्हें पूछनेके लिये बुला भेजा। मदनसेनके आनेपर महाराजने पूछा, "क्या तुम मगधमें जाकर यवनराजके प्रतिनिधिको देख आये हो? उसने कहा—"हां! देख आया हूं।" तब महाराजने पूछा कि वह देखनेमें कैसा है? बताओ तो। उस समय मदनसेनने जैसा बख्तियार खिलजीका रूप-रंग देखा था वैसा ही विस्तारसे कहा। कवितामें भी उसी रूपका वर्णन किया गया था। इसलिये राजाने गौड़की हार और उसका निश्चय विनाश समझ लिया।

प०—इसके बाद?

शा०-तब राजा रोने लगे और कहने लगे कि मैं अब बुढ़ापे में क्या कर सकता हूं। परिवारके साथ मुझे यवनोंके हाथ मरना होगा, ऐसा जान पड़ता है। तब दामोदरने उपदेशके रूपमें कहा "महाराज! इसका उत्तम उपाय यही है कि समयसे पहले ही आप परिवारके साथ तीर्थाटन करें और राजका भार धर्माधिकारीको सौंप दें। ऐसा करनेसे आप बच सकते हैं। यदि शास्त्रमें सचाई नहीं है, तो फिर आपका राज्य मिल जायगा।" राजाने इस परामर्शसे प्रसन्न होकर नाव तैयार करनेका हुक्म दिया है। वे शीघ्र ही परिवारके साथ तीर्थ भ्रमण करने जायेंगे।

प०—दामोदर अच्छा आदमी है। तुम भी अच्छे ही हो। इस समय मेरे मनकी अभिलाषा पूरी होनेकी उम्मीद दीख पड़ती है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

इतना तो एक तरहसे तय है ही कि यदि मैं स्वाधीन राजा न होऊँगा, तो यवन-राजका प्रतिनिधि तो अवश्य ही होऊँगा। काम पूरा हो जानेपर मैं तुम लोगोंको काफी इनाम देनेमें कुछभी उठा न रखूँगा, यह तो तुम अच्छी तरह जानते हो। अच्छा, अब जाओ। कल सवेरे ही तीर्थयात्राके लिये नाव ठीक रखना।

शान्तशील चला गया।

त्रिंश परिच्छेद

—०❀०—

बिना सूतकी माला

पशुपति ऊँचे महलपर बहुत नौकरोंके साथ रहते हैं; पर उनका महल घनघोर जंगलसे भी अँधेरा है। घरमें जिनसे उजाला होता है वह—स्त्री, पुत्र और परिवार—कोई नहीं है।

आज शान्तशीलसे बातचात होनेके बाद पशुपतिको वे सभी बातें स्मरण हो आयीं। उन्होंने मनमें सोचा कि इतने दिनोंके बाद मालूम होता है कि इस अंधेरे महलमें उजाला हुआ—यदि जगदम्बा अनुकूल होंगी, तो मनोरमा इस घरको उजाला कर देगी।

इसी तरह सोचते-सोचते पशुपति सोनेके पहले अष्टभुजीको नियमानुकूल दंड प्रणाम करनेके लिये देवीके मन्दिरमें गये। जाकर उन्होंने देखा कि वहाँ मनोरमा बैठी हुई है।

पशुपतिने कहा—मनोरमा! कब आई?

मनोरमा पूजासे बचे हुए फूलोंको लेकर बिना डोरीको माला बना रही थी। उसने कुछ उत्तर नहीं दिया। पशुपतिने कहा—मुझसे बोलो मनोरमा। जितनी देरतक तुम यहाँ हो उतनी देर-तक सब दुःख भूल गया हूँ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मनोरम सिर उठाकर पशुपतिके मुखकी ओर देखनेलगी। कुछ देरके बाद कहा—मुझे याद नहीं कि तुमसे क्या कहने आयी हूं।

पशुपतिने कहा—याद करो। मैं तुम्हारी राह देखता हूं।

पशुपति बैठ गये। मनोरमा माला गूँथने लगी। बहुत देरके बाद पशुपतिने कहा—मैं भी कुछ कहना चाहता हूँ। ध्यान देकर सुनो। मैंने इस उमरतक केवल विद्या ही पढ़ी है। बहुत विषयोंकी आलोचना की है। धन भी पैदा किया है, लेकिन आजतक विवाह नहीं किया है। जिस काममें लगन है उसे ही करता हूं। विवाह करना नहीं चाहता था। इसलिये आजतक विवाहका नाम भी न लिया। पर जिस दिनसे तुम्हें देखा है उसी दिनसे तुमको पानेकी लालसामें मेरा ध्यान लगा रहता है। तुमको पानेके लिये इस कठिन व्रतका अवलम्बन किया है। यदि जगदीश्वरका अनुग्रह होगा, तो दो-चार ही दिनमें मुझे राज्य मिल जायगा और तुमसे विवाह करूंगा। तब इस रास्तेमें तुम्हारा विधवा होना:जो एक बाधा है, उसे शास्त्रोंके प्रमाणसे खंडन कर दूंगा। लेकिन इसके सिवा दूसरा विघ्न यह है कि तुम कुलीन कन्या हो, जनार्दनशर्म्मा कुलीन हैं और मैं श्रोत्रिय हूँ।

मनोरमा इन बातोंको ध्यानसे सुनती थी या नहीं इसमें सन्देह है। पशुपतिने देखा कि मनोरमाका चित्त किसी दूसरी ओर है। पशुपति भोली-भाली,विकार-रहित बालिका मनोरमाको तो प्यार करते थे, किन्तु युवती तथा तीक्ष्ण बुद्धिवाली मनोरमासे भय करते थे। आज उसके इस भाव परिवर्तनसे वे प्रसन्न न हुए। तो भी साहस करके पशुपतिने कहा—पर कुलरीति तो शास्त्रोय नहीं है। कुलके नाश होनेपर धर्म या जाति नष्ट नहीं होती। तुम्हारे दादाको जनाये बिना यदि तुमसे विवाह कर सकूं, तो बुराई क्या है? तुम्हारी इच्छा होनेसे मैं विवाह कर सकता हूं। फिर यदि तुम्हारे दादाको मालूम भी हो जाय तो विवाह लौट नहीं सकता?

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मनोरमाने कुछ उत्तर नहीं दिया। उसने पशुपतिकी ये बातें सुनीं या नहीं, इसमें सन्देह है। उसके पास ही एक काले रङ्गका बिलाव बैठा था। मनोरमा उस बिना सूतकी मालाको बिलावके गलेमें पहना रही थी। पहनाते ही माला खुल गयी। तब मनोरमा अपने सिरका जूड़ा खोल उसीके सूतसे माला गूंथने लगी।

पशुपति कुछ जवाब न पाकर चुपचाप मालाके फूलोंमें मनोरमाकी अनुपम अंगुलियोंकी सुन्दर गतिको मुग्ध नेत्रोंसे देखने लगे।

एकत्रिंश परिच्छेद

पिञ्जरेमें चिड़िया

पशुपति मनोरमाके बुद्धिरूपी दीपकको जलानेके लिये बहुत यत्न करने लगे, पर उनका सफल होना कठिन हो गया। अन्तमें कहा—मनोरमा! रात बहुत चली गई, मैं सोने जा रहा हूँ।

मनोरमाने प्रसन्नतासे कहा—जाओ।

पशुपति सोने नहीं गये। बैठकर माला गूंथना देखते रहे। अब उन्होंने दूसरा उपाय सोचा कि मनोरमाको डर दिखानेसे काम पूरा होगा। यह सोचकर मनोरमाको भय दिखानेके लिये पशुपतिने कहा—मनोरमा! यदि अभी यवन आ जायं, तो तुम कहां जाओगी?

मनोरमा मालाकी ही ओर आँख किये हुए बोली—घरमें रहूंगी।

पशुपतिने कहा—घरमें तुम्हें कौन बचावेगा?

मनोरमाने पहलेकी ही तरह अनमने भावसे कहा—मैं नहीं जानती, इसका कोई उपाय नहीं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पशुपतिने फिर पूछा—तुम मुझसे क्या कहने मन्दिरमें आई हो?

मनोरमा—देवीको प्रणाम करनेके लिये आई हूं।

पशुपतिने कुछ विरक्त होकर कहा—हाथ जोड़ता हूं, मनोरमा! मेरा कहना जरा ध्यानसे सुनो। कहो मेरे साथ विवाह करोगी या नहीं?

मनोरमाकी माला पूरी हो चुकी थी। वह उसे काले बिलावके गलेमें पहना रही थी। पशुपतिको बात उसने न सुनी। बिलाव माला पहनना नहीं चाहता था, मनोरमा जितनी बार उसके गलेमें माला डालती थी, वह उतनी बार अपने सिरसे उस मालाको बाहर निकाल देता था। मनोरमा कुन्द-विनिन्दित दांतोंसे होठको दबाकर मुस्कुरा रही थी और बार-बार बिलावके गलेमें माला पहनाती थी। पशुपतिने क्रोध करके उस बिलावको एक थप्पड़ लगा दिया। बिलाव पूंछ उठाकर भाग गया। मनोरमाने उसी तरह दाँतोंसे होंठ दबाये हंसते-हंसते हाथकी मालाको पशुपतिके ही गलेमें पहना दिया।

बिलावका प्रसाद गलेमें पहनकर राज-प्रसाद भोगनेवाले पशुपति हत-बुद्धि हो गये। कुछ क्रोध हुआ, पर दांतोंसे होठको दबाये मुस्कुराती हुई मनोरमाकी उस समयकी अनुपम रूप-माधुरी देखकर उनका सिर घूम गया। उन्होंने मनोरमाको आलिङ्गन करनेके लिये दोनों बाहें फैलाईं। उस समय मनोरमा छटककर दूर जा खड़ी हुई—(रास्तेमें फन फैलाये हुए काला सर्पको देखकर जैसे राहगीर भाग खड़ा होता है, उसी तरह मनोरमा भाग कर अलग खड़ी हो गई।)

पशुपति अवाक् हो गये। थोड़ी देरतक मनोरमाके मुखकी ओर आँख उठा न सके। फिर उन्होंने चाहभरी दृष्टिसे देखा कि मनोरमाका मुख यौवनावस्थासे खिल उठा है।

पशुपतिने कहा—मेरा यह अपराध मनमें न लाना। तुम मेरी स्त्री हो, मेरे साथ व्याह करो।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मनोरमाने पशुपतिके मुंहकी ओर तीव्र दृष्टिसे देखकर कहा—पशुपति ! केशवकी लड़की है कहां ?

पशुपतिने कहा—केशवकी लड़की कहां है, यह तो मैं नहीं जानता और जाननेकी भी इच्छा नहीं है। केवल तुम्हींको मैं अपनी स्त्री समझता हूँ।

मनोरमा—मैं जानती हूँ। कहो तो बताऊं, केशवकी लड़की कहाँ है ?

पशुपति चुप हो मनोरमाकी ओर देखने लगे। मनोरमा कहने लगी—एक ज्योतिषीने गणना करके कहा था कि केशवकी लड़की छोटी उमरमें ही विधवा होकर सती हो जायगी। केशव इस बातको सुनकर बहुत ही दुखी हुए। उन्होंने धर्म-नाशके भयसे लड़कीका ब्याह कर दिया, पर भाग्यकी रेखा मिटानेकी गरजसे ब्याहकी ही रातको उसे लेकर वे प्रयाग चले गये। उनका आशय यही था कि मेरी लड़की अपने स्वामीकी मृत्युकी बात कभी न सुनने पावे। संयोगसे कुछ दिनोंके बाद केशवकी मृत्यु हो गई। उनकी लड़की पहले ही मातृहीना हो चुकी थी। मरनेके समय केशव हेमवतीको आचार्यके हाथमें सौंप गये और यह आदेश दे गये कि इस अनाथा बालिकाको अपने यहां रखकर इसका पालन-पोषण कीजियेगा। इसका स्वामी पशुपति है। ज्योतिषियोंने कहा है कि यह छोटी ही उमरमें पतिके मरनेके बाद शीघ्र ही मर जायगी। इसलिये आप मुझे वचन दीजिये कि इस लड़कीसे कभी न कहेंगे कि पशुपति तुम्हारा स्वामी है और पशुपतिसे भी न कहेंगे कि यह तुम्हारी स्त्री है।

आचार्यने वैसा करना स्वीकार कर लिया। उसी दिनसे उन्होंने उसे अपने घर रखकर पाला-पोसा है और अबतक तुमसे ब्याहकी बातको गुप्त रखा है।

प०—अब वह लड़की कहां है ?

म०—मैं ही केशवकी लड़की हूँ, जनार्दन शर्मा उनके आचार्य हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पशुपति आश्चर्यमें पड़ गये। उनका सिर चक्कर खाने लगा। उन्होंने बिना कुछ कहे अष्टभुजाकी मूर्तिके पास जाकर साष्टांग प्रणाम किया। फिर उठकर मनोरमाको आलिङ्गन करने चले। मनोरमा पहलेकी ही तरह हटकर खड़ी हो गई और बोली—अभी नहीं। मुझे और कुछ कहना है।

प०—मनोरमा! राक्षसी!! इतने दिनोंतक तुमने मुझे इस अन्धकारमें रखा था?

म०—क्यों? क्या तुम मेरी बातका विश्वास करते हो?

प०—मनोरमा! कब मैंने तुम्हारी बातका विश्वास नहीं किया है? और यदि मुझे विश्वास न होता, तो मैं जनार्दन शर्मासे भी पूछ सकता था।

म०—क्या जनार्दन इस बातको कभी कह सकते हैं। वे शिष्यसे प्रतिज्ञा-वद्ध हो चुके हैं।

प०—तब तुमसे उन्होंने क्यों कहा?

म०—उन्होंने मुझसे नहीं कहा। वे इस बातको एक दिन ब्राह्मणीसे एकान्तमें कह रहे थे। संयोगसे मैंने छिपकर सुन लिया। मुझे सब लोग विधवा ही जानते हैं। यदि तुम मेरा विश्वासकर भी लेते, तो और लोग कभी विश्वास नहीं करते? तुम लोग निन्दासे बचकर कैसे मुझे अपने घरमें रख लेते?

प०—मैं सब लोगोंको समझा-बुझा देता।

म०—अच्छा! यही सही। फिर ज्योतिषीको गणनाका क्या होता?

प०—मैं ग्रहशान्ति कराता। अच्छा जो होना था वह तो हो गया। अब यदि मुझे रत्न मिल गया है, तो उसे गलेसे नहीं उतारूंगा। तुम अब मेरा घर छोड़कर नहीं जा सकती।

मनोरमाने कहा—तुम्हें इस घरको छोड़ देना होगा। पशुपति! मैं आज जो कहने आई हूं उसे कहती हूं, सुनो। तुम इस घरको छोड़ दो। राज्य पानेकी नीच लालसाको छोड़ दो;

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

स्वामीकी बुराई करनेकी इच्छा छोड़ दो और इस देशको छोड़कर चलो काशीधाम चलें। वहीं मैं तुम्हारे चरणोंकी सेवा कर जन्म सार्थक करूंगी। जिस दिन हम दोनोंकी आयु पूरी होगी उस दिन एक ही साथ दोनों स्वर्ग चलेंगे। यदि इस बातको मान लो तब मेरी भक्ति अटूट होगी। नहीं तो--

प०--नहीं तो क्या?

मनोरमा तब सिर उठा आंखोंमें आंसू भरकर देवीकी प्रतिमाके सामने खड़ी होकर हाथ जोड़ गद्गद् स्वरसे बोली--नहीं तो देवीके सम्मुख शपथ करती हूँ कि तुमसे मेरी यह अन्तिम भेंट है। इस जीवनमें फिर मुलाकात न होगी।

पशुपति भी देवीके सामने हाथ जोड़कर खड़े हो गये और बोले—मनोरमा! मैं भी शपथ करता हूँ कि मेरे जीते जी तुम मेरे घरको छोड़कर जा नहीं सकती। मनोरमा! मैंने जिस मार्गमें पैर रखा है उस मार्गसे लौटनेका उपाय यदि होता तो मैं लौट जाता। तुमको लेकर सबको छोड़-छाड़ काशीकी यात्रा करता। पर मैं बहुत दूर आगे निकल आया हूं। अब लौटनेका कोई उपाय नहीं है। जो गांठ बांध दी है, अब वह खुल नहीं सकती। धारामें बहती हुई चीज फिर लौट नहीं सकती। जो होना है वह होगा। इसीसे क्या मैं अपना यह अपार सुख छोड़ दूंगा? तुम मेरी स्त्री हो। मेरे भाग्यमें चाहे जो लिखा हो, मैं तो तुम्हें अपनी स्त्री बनाऊंगा। तुम कुछ देर और ठहरो। मैं अभी आ रहा हूं

यह कहकर पशुपति मन्दिरसे बाहर चले गये। मनोरमाके मनमें शङ्का हुई। वह सोचती हुई कुछ देर तक मन्दिरमें खड़ी रही। पशुपतिसे विना बिदा मांगे नहीं जा सकती थी।

कुछ देर बाद पशुपति लौट आये। बोले–प्राणाधिके! आज तुम मुझे छोड़कर नहीं जा सकती। मैंने सब दरवाजे बंद कर दिये हैं।

मनोरमा-चिड़िया पिंजरेमें बन्द हो गई!

———

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

द्वात्रिंश परिच्छेद

यवनदूत या यमदूत

एक पहर रात बीत जानेपर नगरके लोगोंने आश्चर्यसे देखा कि किसी अपरिचित जातिके सत्रह घुड़सवार मुख्य रास्तेसे राज-महलकी ओर जा रहे हैं। उनकी वेश-भूषा देखकर नवद्वीपके लोग प्रशंसा करने लगे। उनके शरीर लम्बे, चौड़े और पुष्ट थे। उनका रङ्ग चमकते सोनेकी तरह गोरा था। उनके मुंह चौड़े और काली कथा सघन दाढ़ियोंसे सुन्दर देख पड़ते थे। आंखें बड़ी और चमकीली थीं। उनके वस्त्र बिना बनावटी चमक-दमक-के थे। उनका पहनावा सिपाहियाना था। सारा शरीर हथियारों-से सज्जित था। आंखोंमें दृढ़ प्रतिज्ञा झलकती थी। जिन समुद्र पार करनेवाले घोड़ोंपर वे सवार थे, वे घोड़े भी बड़े सुन्दर थे। पर्वतकी चट्टानकी तरह उनके लम्बे कद, साफ-सुथरी देह और टेढ़ी गरदन थी। बाग रोकना वे घोड़े सह नहीं सकते थे। तेजीके घमंडसे नाचना उनकी आदत थी। घुड़सवार भी उनके चलानेमें बड़े निपुण थे। वे घोड़ोंकी वायुवेगवत् चालको अपने कौशलसे जहां चाहते हैं रोक लेते हैं—यह देखकर सब गौड़वा-सियोंने उनकी बड़ी प्रशंसा की।

सत्रहो घुड़सवार दृढ़-प्रतिज्ञ हो चुपचाप राजमहलकी ओर चले जा रहे थे। कौतूहलवश यदि कोई नगरनिवासी पूछता था, तो उनमेंसे एक आदमी जो वहांकी भाषा समझता था, कह देता था कि ये लोग यवन-राज्यके दूत हैं। यही कहकर उन्होंने सीमा-रक्षकों और दुर्ग-रक्षकोंसे अपना परिचय दिया। पशुपतिके आज्ञानुसार उसी परिचयसे बिना रोक-टोक वे नगरमें घुस गये।

सत्रहो घुड़सवार राजद्वारपर पहुँच गये। बूढ़े राजाकी

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सुस्ती और पशुपतिकी चालाकीसे राजधानीमें कोई रखवाली करनेवाला नहीं था। राजाकी सभा समाप्त हो चुकी थी। राजमहलमें केवल पहरेवाले थे। थोड़ेसे दरवान ड्योढ़ीकी रखवाली कर रहे थे। एक दरवानने पूछा-तुम लोग यहां क्यों आये हो ?

मुसलमानोंने उत्तर दिया—हम लोग मुसलमान बादशाहके प्रतिनिधिके दूत हैं। हम गौड़-राजसे मुलाकात करना चाहते हैं।

दरवानने कहा-महाराजाधिराज गौड़ेश्वर इस समय रनिवासमें चले गये हैं, इस समय मुलाकात नहीं हो सकती।

मुसलमानोंने उनकी कुछ न सुनी। खुले दरवाजेसे घुसनेके लिये वे उद्यत हो गये। सबके आगे एक नाटा, लम्बी बांहवाला कुरूप मुसलमान था। दुर्भाग्यवश दरवान उसे रोकनेके लिये हाथमें बरछा ले आगे आकर खड़ा हो गया और बोला—लौट जाओ, नहीं तो अभी मार डालूँगा।

तब ले तूही मर—यह कहकर उस नाटे मुसलमानने दरवानपर अपनी तलवारका वार किया। चोट खाते ही दरवान मर गया। तब उस मुसलमानने अपने साथियोंसे कहा—अब अपना काम करो। उसी समय उन सोलहों चुप घुड़सवारोंने भीषण जयध्वनि की। उन्होंने कमरसे सोलह तलवारें निकालीं और वज्रपातकी तरह दरवानोंपर टूट पड़े। दरवान लड़नेके लिये तैयार न थे। अचानक इस हमलेसे बचनेका कोई उपाय वे न कर सके। एक ही क्षणमें सभी मारे गये।

नाटे मुसलमानने कहा-इस समय जहां जिसे पाओ, मारो, राजभवनमें कोई रक्षा करनेवाला नहीं है। बूढ़े राजाको मार डालो।

जिस समय मुसलमान राजमहलमें बिजलीकी तरह घुसकर बाल, वृद्ध, स्त्री आदि सब पहरेवालोंको जहां जिसे पाते थे वहीं उसका सिर काट देते थे या बरछेसे छेद डालते थे, उस समय वे हाहाकार कर इधर-उधर भागने लगे। उनका वह आर्तनाद बूढ़े राजाके कानोंमें जा सुनाई पड़ा। राजा उस समय भोजन

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कर रहे थे। सुनकर उनका मुँह सूख गया। उन्होंने पूछा—क्या हुआ ? क्या मुसलमान आ गये ?

भागनेके लिये व्यग्र पुरजनोंने जाकर कहा-मुसलमान सब नगर-निवासियोंको मारकर आपको मारनेके लिये आ रहे हैं।

मुंहमें डाला अन्नका ग्रास राजाके मुँहसे गिर पड़ा। उनका सूखा शरीर,जलकी धारासे हिलते हुए बेतके समान कांपने लगा। पास ही रानी थीं। रानीने यह देखकर कि राजा थालीपर गिर जायँगे, उनका हाथ पकड़कर कहा—किसी बातकी चिन्ता मत कीजिये, उठिये। यह कह रानीने राजाका हाथ पकड़कर उठा लिया। राजा कठपुतलीकी तरह उठ खड़े हुए।

रानीने कहा—किस बातकी चिन्ता है ? नावपर सब सामान रख दिया गया है। चलिये हम लोग खिड़कीकी राहसे सोनगांव भाग चलें।

यह कहकर रानी राजाका जूठा हाथ पकड़े खिड़कीके रास्ते सोनगांव चली गयीं। उसी राजकुल-कलंक शक्तिहीन राजाके साथ गौड़की राजलक्ष्मी भी विदा हो गयी।

सोलह आदमियोंको साथ लेकर बन्दरकी तरह रूप रङ्गवाले बख्तियार खिलजीने गौड़ेश्वरकी राजधानीपर अपना अधिकार जमा लिया।

साठ बरसके बाद यवन-इतिहास-लेखक मिनहाजउद्दीनने ऐसा लिखा था। इसका कितना अंश सच है,और कितना झूठ, उसे कौन जानता है ? जब मनुष्य द्वारा अंकित चित्रमें सिंहकी हार और मनुष्य द्वारा सिंहके अपमानका भाव दिखलाया गया तब सिंहके हाथ तख्ता दे देनेपर कैसा चित्र लिखा जाता। उस चित्रके तख्तेपर आदमी चूहेकी तरह दिखाया जाता, इसमें संदेह नहीं। मन्दभागिनी बङ्गभूमि स्वभावसेही दुर्बला है। तिसपर चित्र खींचनेका तख्ता शत्रुओंके हाथमें है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

त्रयत्रिंश परिच्छेद

—:०:—

जाल फैला दिया

गौड़ेश्वरके नगरको अपने अधिकारमें कर लेनेके बाद बख्तियार खिलजीने धर्माधिकारी पशुपतिके यहाँ दूत भेजकर उनसे मिलनेकी अभिलाषा प्रकट की। उनके साथ मुसलमानोंकी जो सन्धि हुई थी उसके पूरा होनेका समय आ पहुंचा।

पशुपति इष्ट देवीको प्रणाम कर क्रोधित मनोरमासे विदा ले कभी प्रसन्न और कभी शंकित चित्तसे उस मुसलमानके यहां गये। बख्तियार खिलजीने उठकर उनको प्रणाम किया और कुशल-समाचार पूछा। पशुपति राज्य-सेवकोंके रक्तकी नदीमें पैर धोकर आये थे, इसलिये शीघ्र ही उनसे कोई उत्तर देते न बना। बख्तियार खिलजीने उनके चित्तका भाव समझकर कहा—पण्डितवर ! राजसिंहासनपर बैठनेके मार्गमें फूल नहीं बिछे होते। इस रास्तेसे आनेमें भाई-बन्धुओंकी खोपड़ियां पैरोंमें गड़ेंगी।

पशुपतिने कहा—ठीक है। पर जो विरोधी हैं उन्हींको मारना उचित है। ये तो विरोधी नहीं हैं।

बख्तियारने कहा—क्या आप खूनकी नदी देख अपनी मंजूर की हुई बातको याद कर दुखी हो रहे हैं ?

पशुपतिने कहा—जो मंजूर कर लिया है, उसे अवश्य पूरा करूंगा और इसमें सन्देह नहीं कि आप भी वैसा ही करेंगे।

बख्ति०—हां, हां कुछ सन्देह नहीं, केवल मेरी एक प्रार्थना है।

पशु०—कहिये।

बख्ति०—कुतुबुद्दीनने गौड़पर राज्य करनेका भार आपके ऊपर रख दिया है। आजसे आप बंगालमें बादशाहके प्रतिनिधि मुकर्रर हुए। पर मुसलमान बादशाहकी यही मन्शा है कि इस

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
लाम धर्मावलम्बियोंके सिवा दूसरा कोई राजकाजमें भाग नहीं ले सकता। इसलिये आपको इसलाम धर्म स्वीकार करना होगा।

पशुपतिका मुंह सूख गया। उन्होंने कहा—संधिके समय ऐसी कोई शर्त तो पेश नहीं की गयी थी।

बख्ति०—यदि ऐसी बात न हुई थी तो भूल हुई। और यदि यह बात आपसे नहीं कही गई, तो भी आप जैसे बुद्धिमानको बिना कहे ही इससे सहमत हो जाना चाहिये, क्योंकि यह कभी मुमकिन नहीं कि मुसलमान बङ्गालको जीतकर फिर उसे हिन्दुओंको वापस लौटा देंगे।

प०—मैं नहीं समझ सका कि मैं आपके सामने बुद्धिमान कैसे हूं।

बख्ति०—नहीं समझ सके तो अब समझिये। आप इसलामधर्म ग्रहण करनेके लिये अपना विचार निश्चित कर लीजिये।

प०—(गर्वसे) मैंने निश्चय कर लिया है कि मुसलमान बादशाहकी सारी हुकूमत मिल जानेपर भी सनातन धर्मको छोड़कर नरकगामी न बनूंगा।

बख्ति०—यह आपका भ्रम है। जिसे आप सनातन धर्म कहते हैं वह केवल भूतोंकी पूजा है। कुरानमें ही लिखा हुआ धर्म सच्चा धर्म है। मुहम्मदका नाम जप करके इहलोक और परलोकमें भी अपना मंगल साधन कीजिये।

पशुपति मुसलमानोंकी शरारत समझ गये। मुसलमानोंका मतलब यह था कि काम पूरा होनेपर तय हुई सन्धिको छलसे तोड़ देंगे। छलसे न होगा तो बलसे तोड़ देंगे। पशुपतिने कुछ देर सोचकर कहा—जो आज्ञा। मैं आपका कहना मानूंगा।

बख्तियार भी उनके मनका भाव समझ गया। यदि वह पशुपतिसे अधिक चालाक न होता, तो इतनी आसानीसे गौड़को न जीत सकता। वंगभूमिके भाग्यमें यही बदा था कि यह

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

भूमि युद्धमें नहीं जीती जायगी, वरन् चालाकीसे हड़प ली जायगी। चालाक क्लाइव साहबसे इसका दूसरा परिचय मिला है।

बख्तियारने कहा--बहुत अच्छा! आज हमारा शुभ दिन है। ऐसे कामोंमें विलम्ब करना उचित नहीं। हमारे पुरोहित यहाँ उपस्थित हैं, वे इसी समय आपको इसलाम धर्ममें दीक्षित करेंगे।

पशुपतिने सोचा कि सर्वनाश हुआ चाहता है। फिर कहा–कुछ समय दीजिये ताकि परिवारके लोगोंको ले आऊँ। सब परिवारके साथ ही इसलाम धर्म ग्रहण करूँगा।

बख्तियारने कहा—मैं उन लोगोंको अपना आदमी भेजकर बुला लेता हूं। आप इसी पहरेवालेके साथ चलकर विश्राम कीजिये।

पहरेवालेने आकर पशुपतिको पकड़ लिया। पशुपतिने क्रोध करके कहा—यह क्या! क्या मैं कैदी हुआ?

बख्तियारने कहा—अच्छा, इस समय यही सही।

पशुपति राजभवनमें कैदी हुए।

मकड़ोने जाल फैला दिया था, उसमें आप ही फँस गयी। हमने पशुपतिको पाठकोंके सामने बुद्धिमान् कहा है। पाठक महाशय कहेंगे कि जिसने शत्रुका इतना विश्वास कर अकेले उसके जीते हुए भवनमें प्रवेश किया, वह कितना बुद्धिमान् है? लेकिन विश्वास न करे तो क्या करे? विश्वास न करनेसे लड़ाई करनी पड़ती। मकड़ी जालमें फँस जानेपर लड़ाई नहीं करती।

उसी दिन रातको महावनसे बीस हजार मुसलमान आकर नवद्वीपमें भर गये। नवद्वीपपर अधिकार कर लिया गया। जो सूर्य उस दिन अस्त हुआ वह फिर कभी उदय नहीं हुआ! क्या वह अब उदय न होगा? उदय और अस्त—दोनों ही प्राकृतिक नियम हैं।

———

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

चतुस्त्रिंश परिच्छेद

—:o:—

पिंजरा टूटा

जितनी देरतक पशुपति घरपर रहे उतनी देरतक तो उन्होंने मनोरमाको अपनी आखोंसे दूर नहीं किया। पर जब वे मुसलमानसे भेंट करने गये तब घरके सब दरवाजे बन्द कर शान्तशीलको घरकी निगरानी करनेके लिये छोड़ दिया।

पशुपतिके जाते ही मनोरमा भागनेका प्रयत्न करने लगी। उस घरका कोना-कोना ढूंढ़ डाला, भागनेके लिये कोई खुला रास्ता न मिला। बहुत ऊँचेपर खिड़कियां थीं, जहाँतक पहुँचना कठिन था। उन खिड़कियोंसे आदमीके शरीरका निकल जाना असम्भव था और वे इतनी ऊंची थीं कि उनपरसे कूदकर नीचे आनेमें हड्डियोंके चूर चूर हो जानेकी पूरी सम्भावना थी। मनोरमा पगली थी, उसने उसी खिड़कीकी राहसे निकलनेका इरादा किया।

पशुपतिके चले जानेपर मनोरमा उनके सोनेके कमरेमें पलंगपर चढ़ गई। पलंगपरसे खिड़कीपर चढ़ना सहल हो गया। पलंगपर चढ़कर मनोरमाने खिड़कीसे पहले दोनों हाथ, फिर सिर, इसके बाद छाती भी बाहर निकाल दी। खिड़कीके पास बागमें एक आमकी पतली डाली दिखाई दी। मनोरमाने उसे पकड़ लिया, फिर शरीरका पिछला भाग खिड़कीसे बाहर निकालके डालको पकड़कर झूलने लगी। कोमल डाली उसके भारसे झुक गई। अब उसके पैर जमीनके पास आ गये। मनोरमा डाली छोड़कर खेलमें ही जमीनपर आ गयी और एक क्षण भी न ठहरकर जनार्दनके घरकी ओर चली गयी।

———

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पंचत्रिंश परिच्छेद

—०※०—

यवन-विप्लव

उसी अर्द्धरात्रिको नवद्वीप नगर विजयोन्मत्त मुसलमानों की सेनाके अत्याचारसे आंधीके झोंकेसे उथल-पुथल हुए समुद्र की तरह चंचल हो उठा। राजमार्ग घुड़सवारों, पैदलों और तलवार, धनुष तथा बरछेसे सुसज्जित सिपाहियोंसे भर गये। राजधानीकी रक्षा करनेके लिये सेना नहीं थी। नगर-निवासी अपने-अपने घरोंमें भयभीत हो घुस गये और दरवाजे बन्दकर अपने-अपने इष्ट देवताके नाम जपने लगे।

मुसलमानोंने सड़कपर जिन आश्रयहीन तथा हतभागोंको पाया, उन्हें बरछेसे छेद डाला और उन मकानोंपर धावा किया जिनके दरवाजे बन्द थे। कहीं दरवाजे तोड़कर, कहीं दीवार लांघकर, कहीं नीचतासे गृहस्थोंको जीते छोड़ देनेका प्रलोभन देकर वे घरमें घुसने लगे। घरमें घुसकर सब कुछ लूटपाटकर पीछे स्त्री, पुरुष, बूढ़े, और लड़के—सभीको मारने लगे। केवल युवती स्त्रियोंके लिये अलग नियम था।

गृहस्थोंके घरोंमें खूनकी धारा बह चली, सड़कपर कीच हो गया। मुसलमानोंके कपड़े खूनसे रंग गये। घोड़ोंकी पीठ और आदमियोंके कन्धे लूटके मालके भारसे दुखने लगे। बरछोंसे छेदे हुए सिर भयंकर देख पड़ते थे। ब्राह्मणोंके जनेऊ घोड़ोंकी गर्दनमें लटकने लगे। सिंहासनके शालिग्रामकी मूर्त्तियाँ पैरोंसे ठुकराई जाने लगीं।

उस रातको आसमान भयावने शब्दसे गूँज उठा। घोड़ोंकी टाप, सिपाहियोंके शोरगुल, हाथियोंकी चिंघाड़, मुसलमानोंका जयनाद और उसपर दुःखियोंके आर्तनाद थे। माताओंका

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
रोना, लड़कोंका चिल्लाना, बूढ़ोंका करुण विलाप और युवतियों-की चिल्लाहटने उस रातको और भी भयंकर बना दिया।

जिस वीर पुरुषको माधवाचार्य इतनी कोशिशसे मुसल-मानोंका दमन करनेके लिये नवद्वीप ले आये थे, इस समय वह कहाँ हैं?

मुसलमानोंकी इस भयंकर खून-खराबीमें हेमचन्द्र दिखाई नहीं देते हैं—अकेले लड़ाईमें आकर वे क्या कर सकते हैं?

उस समय हेमचन्द्र अपने सोनेके कमरेमें पलंगपर सो रहे थे। शहरमें लूट-पाटकी आवाज उनके कानों तक पहुँची। उन्होंने दिग्विजयसे पूछा—यह कैसा शोरगुल है?

दिग्विजयने कहा—मुसलमानोंकी फौजने शहरपर धावा बोल दिया है।

हेमचन्द्रको आश्चर्य हुआ। उन्होंने अब तक बख्तियार खिलजीके नगरपर अधिकार कर लेनें और शहरके लोगोंके भाग जानेकी खबर नहीं सुनी थी। दिग्विजयने हेमचन्द्रको सब हाल कह सुनाया।

हेमचन्द्रने कहा—नगरनिवासी क्या करते हैं?

दि०—जो भाग सकते हैं, वे भाग रहे हैं। जो नहीं भाग सकते हैं, वे अपनी जान दे रहे हैं।

हे०—और गौड़की फौज?

दि०—वह किसके लिये लड़ेगी? राजा तो महल छोड़कर भाग गये हैं। इसलिये सब लोग अपना रास्ता देख रहे हैं।

हे०—अच्छा, मेरा घोड़ा तैयार करो।

दिग्विजय विस्मित हुआ, उसने पूछा—कहाँ जाइयेगा?

हे०—शहरमें।

दि०—अकेले?

हेमचन्द्रने भौंहें टेढ़ी कीं। भौंहें देखते ही भयभीत हो दिग्विजय घोड़ा कसने चला गया।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हेमचन्द्र बहुमूल्य गहने और कपड़े पहनकर सुन्दर घोड़ेपर सवार हुए और तेज बरछेको हाथमें लेकर नदीकी तीव्र धाराकी तरह उस अथाह यवन-सेना रूपी समुद्रमें कूद पड़े।

हेमचन्द्रने देखा कि मुसलमान लड़ाई नहीं करते हैं, बल्कि लूट-पाट मचा रहे हैं। लड़नेके लिये कोई उनके सामने नहीं आ रहा है। इससे उन मुसलमानोंका जी भी लड़नेमें नहीं लगता था। जिन्हें वे लूट रहे थे उन्हींको लूटनेके समय मार भी रहे थे। इसलिये मुसलमानोंने दलबद्ध होकर हेमचन्द्रको मारनेकी चेष्टा नहीं की। यदि किसी मुसलमानपर हेमचन्द्र आक्रमण करते तो वह उसी क्षण मारा जाता।

हेमचन्द्र विरक्त हो गये। वे लड़नेकी इच्छासे आये थे, पर मुसलमानोंने पहले ही विजय लाभ कर लिया था। धन लूटना छोड़कर उन्होंने नियमानुसार लड़ाई नहीं की। हेमचन्द्रने मनमें सोचा—एक-एक पत्ता काटनेसे क्या वन बिना पत्तोंके हो सकता है? एक-एक मुसलमानको मारकर क्या हो सकता है। यदि मुसलमान मुझसे लड़ाई नहीं करते हैं तो मुसलमानोंके मारनेसे क्या सुख मिलेगा? अब तो नगरनिवासियोंकी रक्षामें मदद करना ही अच्छा है। हेमचन्द्रने वही किया। पर उन्हें विशेष सफलता न मिली। दो मुसलमान उनके साथ लड़ रहे थे और दूसरे मुसलमान उसी समय गृहस्थोंका धन लूट रहे थे। जो हो, हेमचन्द्र यथासाध्य दुःखियोंकी सहायता कर रहे थे। रास्तेके किनारे एक झोपड़ीमेंसे रोनेका शब्द सुन पड़ा। मुसलमानोंके द्वारा सताये हुए व्यक्तिका आर्तनाद समझकर हेमचन्द्र उस झोपड़ीमें गये।

उन्होंने देखा, घरमें कोई मुसलमान नहीं है! किन्तु मुसलमानोंके किये गये अत्याचारके सब चिह्न मौजूद हैं। माल-मता कुछ नहीं है, जो चीजें हैं वे सब टूटी-फूटी हैं और एक ब्राह्मण घायल होकर जमीनपर पड़ा-पड़ा चिल्ला रहा है। उसे ऐसी गहरी

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

चोट लगी थी कि वह मरने-मरने हो रहा था। वह हेमचन्द्रको देख मुसलमानके धोखेसे कहने लगा, आया—मारो, जल्द मरूंगा। मारो मेरा शिर लेकर उसी राक्षसीको दे देना। ओह! जान निकल रही है !! पानी ! पानी कोई पिलाओ ?

हेमचन्द्रने कहा—तुम्हारे घरमें पानी है ?

ब्राह्मण कातर स्वरमें कहने लगा—नहीं जानता, मुझे मालूम नहीं। पानी ! पानी !! पिशाचिनी ! इसी पिशाचिनीके लिये मेरे प्राण गये।

हेमचन्द्रने झोपड़ीमें ढूंढ़ा तो एक घड़ेमें जल मिल गया। और कोई दूसरा बरतन नहीं था इसलिये पत्तेका दोना बनाकर उसीमें पीनेके लिये पानी दिया। ब्राह्मणने कहा—नहीं, नहीं, पानी नहीं पीऊंगा। मुसलमानका छुआ पानी नहीं पीऊंगा। हेमचन्द्रने कहा—मैं मुसलमान नहीं हूं, मैं हिन्दू हूं, मेरे हाथका पानी पी सकते हो, क्या मेरी बात समझते नहीं ?

ब्राह्मणने जल पी लिया। हेमचन्द्रने कहा—तुम्हारे लिये और क्या उपाय करूं ?

ब्राह्मणने कहा—और मेरे लिये क्या करोगे ? और है क्या ? मैं मर रहा हूँ, जो मर रहा है उसका क्या करोगे ?

हेमचन्द्रने कहा—तुम्हारा कोई अपना सगा सम्बन्धी है ? उसे तुम्हारे पास बुला लाऊंगा।

ब्राह्मणने कहा—कौन ? कौन है ? बहुत हैं, उनमें वही राक्षसी ! वही राक्षसी है। उससे कहना—मेरे पापका फल मिल गया।

हे०—वह कौन है ? किससे कहूँगा ?

ब्राह्मण कहने लगा—कौन ? वही पिशाचिनी ! पिशाचिनी-को क्या नहीं जानते ? पिशाचिनी मृणालिनी। मृणालिनी ! मृणालिनी पिशाचिनी !!

ब्राह्मण और भी जोरसे रोने लगा। हेमचन्द्र मृणालिनीका

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

नाम सुनते ही चौंक पड़े। फिर पूछा—मृणालिनी तुम्हारी कौन है?

ब्राह्मणने कहा—मृणालिनी कौन है? कोई नहीं। मेरा यम है।

हे०—मृणालिनीने तुम्हारे साथ क्या किया है?

ब्रा०—क्या किया है? कुछ नहीं। मैं—मैंने उसकी दुर्दशा की थी! उसका फल मुझे मिल गया।

हे०—क्या दुर्दशा की थी?

ब्रा०—अब बोल नहीं सकता! पानी दो!

हेमचन्द्रने फिर उसे पानी पिलाया। पानी पीकर ब्राह्मणको होश हुआ। हेमचन्द्रने उससे पूछा—तुम्हारा नाम क्या है?

ब्रा०—व्योमकेश।

हेमचन्द्रकी आंखोंसे आगकी चिनगारियाँ निकलने लगीं। दांतोंसे होठ काटने लगे। हाथका बरछा भली-भांति सम्हाल लिया। फिर उसी समय शान्त होकर कहा—तुम्हारा निवास-स्थान कहां है?

ब्रा०—गौड़, गौड़, क्या नहीं जानते? मृणालिनी मेरे घरमें रहती थी।

हे०—उसके बाद क्या हुआ?

ब्रा०—उसके बाद? उसके बाद और क्या? उसके बाद यही मेरी गति हुई। मृणालिनी पापिष्ठा है, बड़ी निर्दयी है। मेरी ओर फिरकर भी उसने न देखा। क्रोधमें मैंने व्यर्थ ही उसे बदनाम किया। पिताने निरपराध ही उसे अपने घरसे बाहर निकाल दिया। राक्षसी! राक्षसी मुझको छोड़कर चली गई?

हे०—तब तुम उसको गाली क्यों दे रहे हो?

ब्रा०—क्यों? क्यों गाली देता हूँ? मृणालिनी मेरी ओर फिरकर भी कभी न देखती थी, और मैं—मैं उसे देखकर जीता

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
था। वह चली गई, उसी—उसी दिनसे मैंने सब कुछ त्याग दिया है। उसके लिये मैं किन-किन देशोंमें नहीं घूमा? कहां कहां उस राक्षसीको न ढूंढ़ा? गिरिजाया भिखारिनकी लड़की है। उसने आकर कहा—"मृणालिनी नवद्वीपमें है।" मैं नवद्वीप आया, पर यहां भी उसका पता न पाया। यहां मुसलमान—मुसलमानके हाथों मर रहा हूँ। राक्षसीके लिये मर रहा हूँ। उससे भेंट होनेपर कहना—मेरे पापका फल मिल गया।

व्योमकेश और कुछ बोल न सका। इतने ही परिश्रमसे वह बहुत कमजोर हो गया था। टिमटिमाता दीप बुझ गया—एक मुहूर्त्तके बाद विकराल मुँह बनाकर व्योमकेश मर गया।

हेमचन्द्र फिर न तो ठहरे और न मुसलमानोंको मारा। वे घरकी ओर चले गये।

षष्ठत्रिंश परिच्छेद

—:❀❀:—

मृणालिनीको क्या सुख है

जिस जगह हेमचन्द्र मृणालिनीको सीढ़ीके पत्थरपर गिराकर छोड़ गये थे वह अब भी उसी जगहपर थी। उसके लिये इस दुनियामें जानेके लिये कोई जगह नहीं। सभी जगहें बराबर थीं। रात बीत चली थी, सवेरा हो रहा था। गिरिजायाने जो कुछ पूछा, उसका मृणालिनीने कुछ उत्तर नहीं दिया। सिर नीचा किये बैठी रही। नहाने, खानेका समय हो गया। गिरिजायाने उसे बावलीमें ले जाकर स्नान कराया। नहाकर मृणालिनी उसी गीले कपड़ेको पहिने जलमें बैठी रही। गिरिजायाको भूख लगी पर वह मृणालिनीको उठा न सकी। साहस कर बार-बार बोल भी न सकी। अन्तमें पासके बनसे कुछ फल-मूल लाकर खानेके लिये मृणालिनीको दिया, मृणालिनीने उन्हें छू भर दिया। गिरि-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जायाने प्रसाद खा लिया, भूखके कारण मृणालिनीको छोड़ा नहीं।

इसी प्रकार पूर्व दिशाका सूर्य मध्य आकाशमें और मध्य आकाशका सूर्य पश्चिमकी ओर चला गया। शाम हुई। गिरिजायाने देखा कि मृणालिनी अब भी घर जानेका नाम नहीं लेती। गिरिजाया बहुत चिन्तित हुई। पहिली रात जगनेमें ही बीत गयी, आजकी रात भी जगनेकी नौबत दिखाई दे रही है। गिरिजाया कुछ न बोली, पेड़ोंके पत्ते चुनकर सीढ़ीपर अपने सोनेके लिये बिछायी। मृणालिनी उसका आशय समझकर बोली—तुम घर जाकर सो रहो।

गिरिजाया मृणालिनीकी बात सुनकर खुश हुई और बोली—एक ही साथ चलूंगी।

मृणालिनी बोली—मैं भी चलती हूं।

गि०—मैं तबतक ठहरती हूँ। भिखारिनीके दो घड़ी पत्ते बिछाकर सोनेमें हर्ज ही क्या है? पर साहस पाऊं तो कहूँ—इस जन्ममें राजपुत्रसे नाता तो टूट ही गया, अब कातिकके जाड़ेमें हम लोग क्यों दुःख सहें?

मृ०—गिरिजाया! हेमचन्द्रके साथ मेरा सम्बन्ध इस जन्ममें न हटेगा। मैं कल भी हेमचन्द्रकी दासी थी, आज भी उन्हींकी दासी हूँ।

गिरिजायाको बड़ा क्रोध हुआ। वह उठकर बैठ गयी। फिर बोली—क्यों ठकुरानी! तुम अब भी ऐसा कह रही हो? तुम उसी धूर्तकी दासी हो, तो लो मैं जाती हूं। यहाँ अब मेरे रहनेकी जरूरत नहीं है।

मृ०—गिरिजाया! यदि हेमचन्द्रने तुम्हें सताया है, तो तुम दूसरी जगह उनकी निन्दा करना। हेमचन्द्रने मेरे ऊपर कोई अत्याचार नहीं किया है। मैं क्यों उनकी निंदा सुनूँगी? वह राजपुत्र मेरे स्वामी हैं, मैं उनसे फिर बोलूंगी।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गिरिजायाने और भी क्रोध किया। बड़े यत्नसे बनाये हुए पत्तोंके बिस्तरेको तितर-बितरकर फेंक दिया। फिर बोली—उन्हें धूर्त नहीं कहूँगी? एक बार कहूंगी। (कहते-कहते बहुतसे पत्तों-को अभिमानसे पानीमें फेंक दिया) एक बार कहूंगी, नहीं, दस बार कहूँगी। (फिर पत्ते फेंकने लगी) सौ बार कहूंगी (फिर पत्ते फेंकने लगी), हजार बार कहूँगी। इसी तरह सब पत्ते फेंककर वह कहने लगी—पाखण्डी नहीं कहूँगी? किस अपराध से उन्होंने तुम्हारा इस तरह तिरस्कार किया है?

मृ०—वह मेरा ही दोष है। मैं उन्हें सब बातें अच्छी तरह समझा न सकी। क्या कहना चाहिये था और क्या कह दिया?

गि०—ठकुरानी! अपना माथा तो टटोलकर देखो।

मृणालिनीने अपना सिर टटोला।

गि०—कुछ देखा?

मृ०—चोट लगी है।

गि०—कैसे चोट लगी है?

मृ०—मालूम नहीं है।

गि०—तुमने हेमचन्द्रके कंधेपर सिर रखा था। वे उसे फेंककर चले गये और पत्थरपर गिर जानेसे तुम्हारे सिरमें चोट लग गई है। मृणालिनी कुछ देरतक सोचती रही, पर कुछ याद नहीं आया। फिर बोली—मुझे तो कुछ याद नहीं है। जान पड़ता है मैं आप ही गिर गई थी।

गिरिजायाने विस्मृत होकर कहा—ठकुरानी, इस संसारमें तुम्हीं सुखी हो।

मृ०—क्यों?

गि०—तुम क्रोध नहीं करती।

मृ०—मैं ही सुखी हूं—पर उनके लिये नहीं।

गि०—तब किस लिये सुखी हो?

मृ०—मेरी हेमचन्द्रसे भेंट हुई है, इसीलिये।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सप्तत्रिंश परिच्छेद

—❀:❀—

स्वप्न

गिरिजायाने कहा—घर चलो।

मृणालिनीने कहा—नगरमें यह शोर-गुल क्यों हो रहा है? उस समय मुसलमानोंकी सेना नगरमें लूट-मार मचा रही थी। भयानक शब्द सुनकर दोनों डर गयीं। गिरिजायाने कहा—चलो, इस समय जरा सावधान होकर चलें। दोनोंने मुख्य राजमार्गके पास जाकर देखा, जानेका कोई उपाय नहीं। लाचार लौटकर उसी बावलीकी सीढ़ीपर दोनों बैठ गयीं। गिरिजायाने कहा—यदि वे सब यहां आ जायँ तो?

मृणालिनी चुप रही। गिरिजाया आप ही बोल उठी—बनकी झाड़ीमें ऐसी छिप जाऊंगी कि कोई देख भी न सकेगा।

दोनों आकर सीढ़ीपर बैठ गईं।

मृणालिनीका मुंह कुम्हला गया। उसने गिरिजायासे कहा—गिरिजाया! जान पड़ता है सचमुच ही मेरा सर्वनाश हो जायगा।

गि०—क्यों?

मृ०—अभी एक घुड़सवार गया है। वह हेमचन्द्र ही हैं। सखी! नगरमें भयङ्कर युद्ध हो रहा है। यदि मेरे स्वामी अकेले लड़ने गये हैं, तो न जाने कि कौन-सी विपत्ति आ पड़ेगी।

गिरिजाया कुछ जवाब न दे सकी। उसे नींद आ रही थी। थोड़ी देरके बाद मृणालिनीने देखा कि गिरिजाया सो रही है। उसने भी कुछ भोजन नहीं किया था, और सोई भी न थी, इससे कमजोर हो रही थी। दूसरे सारे दिन मानसिक यन्त्रणा भोग कर रही थी, नींदके मारे देह भारी हो रही थी, उसे भी आलस्य

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

आ गया। नींदमें वह स्वप्न देखने लगी। उसने देखा, हेमचन्द्रने अकेले ही सारी सेनाको हरा दिया है। और मृणालिनी उस विजयी वीरको देखनेके लिये राजपथ पर खड़ी है। हेमचन्द्रके आगे-पीछे कितने ही हाथी, कितने ही घोड़े और कितने ही पैदल सिपाही जा रहे हैं। मानो वही सेना तरंग मृणालिनीको रौंदती चली गई। इस समय हेमचन्द्रने अपनी समुद्री घोड़ीसे उतरकर उसका हाथ पकड़ उठा लिया। मानो मृणालिनीने हेमचन्द्रसे कहा, "प्रभु! बहुत दुःख भोग रही हूं। दासीको अब मत छोड़ो। मानो हेमचन्द्रने कहा, .अब कभी तुम्हें न छोड़ूंगा" मानो उसी कंठकी आवाजसे उसकी आँखें खुल गइं। "अब कभी तुमको न छोड़ूंगा।" यही आवाज जगनेपर भी उसे सुन पड़ी। आँखोंको मींचकर क्या देखा? जो देखा, उसपर विश्वास नहीं हुआ। फिर उसने देखा—हेमचन्द्र सामने खड़े हैं। हेमचन्द्रने कहा—और एक बार क्षमा करो। अब कभी तुम्हें न छोड़ूंगा।

अभिमानरहित भोलीभाली, निलज्जा मृणालिनी उनके गले-से लिपटकर उनके कंधेपर सिर रख दिया।

अष्टत्रिंश परिच्छेद

प्रेम कई प्रकारका होता है

मृणालिनीकी आँखें आनन्दके आँसुओंसे भर आयी थीं। उसका हाथ पकड़कर हेमचन्द्र उसे उपवन-भवनकी ओर ले चले। हेमचन्द्रने एक बार मृणालिनीको अपमानिता, तिरस्कृता और दुःखिता करके छोड़ दिया था। आज उन्होंने आकर उसे छाती-से लगा लिया। यह देखकर गिरिजायाको आश्चर्य हुआ। पर मृणालिनीने न कुछ पूछा और न कुछ कहा ही। आनन्दमें डूब

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कर अपने आँचलसे आँखोंको ढककर चली। गिरिजायाको पुकारना न पड़ा, वह भी कुछ दूर पीछे-पीछे उनके साथ ही चली।

उपवन-भवनमें आनेपर दोनों अपने-अपने हृदयकी बातें कहने लगे। हेमचन्द्रने वे सब बातें कह सुनाईं जिनसे उनके हृदयमें मृणालिनीके प्रति क्रोध हुआ और फिर किस प्रकार उनका क्रोध दूर हुआ। उसके बाद मृणालिनीने भी जिस तरह हृषीकेशका घर छोड़कर नवद्वीप आई थी, वह कह सुनाया। दोनों ही अपने-अपने हृदयमें बहुत दिनोंकी रखी हुई बातें एक दूसरेसे कहने लगे। उस समय वे दोनों अपने भविष्यके सम्बन्धमें तरह-तरहकी कल्पना करने लगे, नई-नई प्रतिज्ञाएं करने लगे, कितनी बेमतलबकी बातें भी बड़े आग्रह और चावसे करने लगे। दोनोंने बार गिरते हुए आंसुओंको बरबस रोका। और फिर एक दूसरेकी ओर देखकर अकारण ही मन्द-मन्द हँसने लगे। उस हँसीका आशय यही था कि मैं इस समय परम सुखी हूँ। इसके बाद जब प्रातःकालकी सूचना देनेवाले पक्षी चहचहाने लगे, तो दोनोंने आश्चर्यसे कहा—आज रात इतनी जल्दी क्यों बीत गई? उसी नगरमें मुसलमानोंके उपद्रवसे जो उमड़ते हुए समुद्रकी भयंकर लहरोंकी तरह कोलाहल हो रहा था वह आज इन दोनोंके हृदय-सिन्धुकी तरंगोंके कोलाहलमें निमग्न हो गया।

उपवन-भवनके दूसरी ओर एक कांड हो गया। दिग्विजय स्वामीके आदेशानुसार रातमें जगकर घरकी रखवाली कर रहा था। जब मृणालिनीको लेकर हेमचन्द्र वहां आये तो उसने देखकर पहचान लिया। मृणालिनीको उसने पहले पहचाना नहीं था। मृणालिनीको देखकर उसे विस्मय हुआ पर पूछनेका साहस नहीं होता था। बेचारा करे क्या? फिर पीछे पहचाना। कुछ देरके बाद गिरिजाया भी वहीं आ गयी। उसे देखकर उसने मनमें सोचा—मालूम होता है ये दोनों जनी गौड़ देशसे हम

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
दोनोंको देखने आई हैं। ठकुरानी युवराजको देखने आई हैं और यह मुझे देखने आई हैं। यह सोचकर दिग्विजयने एक बार अपनी मूंछ-दाढ़ी संवार ली और सोचा—क्यों न होगा ? फिर सोचा लेकिन यह बड़ी पाजी है। एक दिन भी इसने मुझसे मीठी बातें न कीं, केवल मुझे गाली सुनाती है। तो भी यह मुझसे मिलने आ रही है, इसका क्या मतलब है ? खैर जो हो, जरा परीक्षा तो ले लूं। रात तो खतम हो चली। स्वामी भी लौट आये। अब मैं छिपकर सो जाता हूँ। देखें प्यारी मुझे ढूंढ़ लेती है या नहीं ? यह सोचकर दिग्विजय एक एकान्त जगहमें जाकर सो रहा। गिरिजायाने उसे देख लिया।

गिरिजाया मनमें सोचने लगी—मैं तो मृणालिनीकी दासी हूं। मृणालिनी इस घरकी मालकिन हुईं या होंगी तो घरका सब काम-काज करनेका मेरा ही अधिकार रहेगा। इस प्रकार मनको समझा-बुझाकर गिरिजायाने एक झाड़ू उठा लिया और जिस घरमें दिग्विजय सो रहा था उसी घरमें चली गयी। दिग्विजयने आंखें बन्द कर ली थीं। पैरोंकी आहटसे उसने जान लिया, गिरिजाया आ गई। मनमें बड़ा खुश हुआ और कहा--तब तो गिरिजाया मुझसे प्रेम करती है। देखूं वह क्या कहती है ? यह सोचकर दिग्विजय आंखें बन्द किये ही पड़ा रहा। अकस्मात् उसकी पीठपर झाड़ूकी मार धमाधम पड़ने लगी। गिरिजाया गला फाड़कर कहने लगी—ओह ! घरमें कितने कूड़े-कर्कटका ढेर लगा है। यह क्या ! यह तो आदमी है ! क्या चोर है ! वाह ! राजाके घर चोरी ! यह कहकर लगी झाड़ू मारने। दिग्विजयकी पीठ छिल गई।

"ओ ! गिरिजाया ! मैं हूं, मैं हूँ।"

"मैं ! हां हां, तुम्हींको जानकर ही तो झाड़ूसे पीट रही हूँ" यह कहकर वह बयासी सिक्केकी वजनसे झाड़ू मारने लगा।

"दुहाई ! दुहाई ! गिरिजाया, मैं दिग्विजय हूँ।"

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

"यहाँ चोरी करने आया है और कहता है मैं दिग्विजय हूं. दिग्विजय कौन है रे ? झाड़ू की मार अब नहीं रुक सकती।"

इस बार दिग्विजयने गिड़गिड़ाकर कहा—गिरिजाया ! क्या मुझे भूल गई ?

गिरिजायाने कहा—तुझसे मेरी कब बातचीत हुई, रे निगोड़े ?

दिग्विजयने देखा कि छुटकारा पाना कठिन है, इस युद्धका अन्त ही कर देना अच्छा है। तब कोई उपाय न देखकर वह हाँफते-हाँफते घरसे निकल भागा। गिरिजायाने हाथमें झाड़ू लिये ही उसका पीछा किया।

उनचत्वारिंश परिच्छेद

पूर्व परिचय

सवेरा होते ही हेमचन्द्र माधवाचार्यकी खोजमें निकले। गिरिजाया आकर मृणालिनीके पास बैठी। मृणालिनीके हृदयकी साथी होकर गिरिजायाने विपत्तिके समय उसके दुःखकी कहानी सुनी थी। आज सुखके दिन वह सुखकी भागिनी क्यों न बनेगी ? आज उसी सहृदयताके साथ सुखकी कहानी क्यों न सुनेगी ? गिरिजाया भिखारिनी है और मृणालिनी धनवानकी लड़की। दोनोंमें इतना सामाजिक भेद था पर दुःखके दिनोंमें गिरिजाया ही मृणालिनीकी एकमात्र संगिनी थी। उस समय भिखारिनी और राजवधूमें कोई अन्तर नहीं था। आज उसीके बलपर गिरिजाया मृणालिनीके हृदयके सुखकी भागीदार बनी है।

जो बातचीत हो रही थी उससे गिरिजायाको आश्चर्य और आनन्द दोनों होता था। उसने मृणालिनीसे पूछा—तो अबतक तुमने ऐसी बात किसलिये नहीं कही थी ?

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मृ०—इतने दिनोंतक राजपुत्रने मना किया था, इसीलिये प्रकट नहीं किया। अब उन्होंने प्रकट कर देनेकी अनुमति दी है, इसलिये कह रही हूं।

गि०—ठकुरानी! सब बातें कहो न! सुनकर मुझे बड़ा आनन्द मिलेगा।

तब मृणालिनी कहने लगी—मेरे पिता एक बौद्ध मतावलम्बी सेठ थे। वे धनवान और मथुराके राजाके प्रियपात्र थे। मथुराकी राजपुत्री मेरी सखी थी। मैं एक दिन मथुरामें राजपुत्रीके साथ नावपर सवार हो यमुनामें जल विहार करने गई थी। उसी समय अकस्मात् आंधी-पानी आनेसे नाव पानीमें डूब गई। राजकन्या तो रक्षकों और मल्लाहोंकी मददसे बच गई, मैं डूब गई। दैवात् एक राजपुत्र उसी समय नावमें बैठकर कहीं जा रहे थे। तब उन्हें मैं पहचानती न थी—वही हेमचन्द्र थे। वे भी आँधीके डरसे नावको किनारेकी ओर ला रहे थे। जलमें मेरे बाल देखकर वे नावसे कूद पड़े और मुझे निकाल लाये। उस समय मुझे कुछ होश न था। हेमचन्द्र मेरा परिचय जानते नहीं थे। उस समय वे तीर्थाटनके उद्देश्यसे मथुरा आये थे। अपने निवासस्थानपर ले जाकर उन्होंने मेरी बड़ी सुश्रूषा की। जब मुझे होश हुआ तो मेरा परिचय जानकर वे मुझे मेरे पिताके घर पहुँचानेका यत्न करने लगे, पर तीन दिनोंतक आँधी-पानी न रुका। इतना खराब दिन हुआ कि कोई घरसे बाहर न निकल सका। लाचार हो तीन दिनोंतक हम दोनों एक ही घरमें रहे। इसी बीच दोनोंने एक-दूसरेको भली-भाँति पहचान लिया, केवल कुलका परिचय नहीं मिला-पर दोनोंने एक दूसरेके हृदयका पूरा परिचय पा लिया। उस समय मैं पन्द्रह बरसकी थी। लेकिन उसी उम्रमें मैं उनकी दासी बन गई। उस छोटी उम्रमें सब बातें मेरी समझमें नहीं आती थीं। हेमचन्द्र मुझे देवताके समान प्रतीत होने लगे। जो वे कहते थे मैं उसे शास्त्रपुराण ही समझती थी। उन्होंने

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कहा—व्याह करो, इसलिये मुझे जान पड़ा कि यह अवश्य करना चाहिये। चौथे दिन आंधी शांत हुई देखकर मैंने उपवास किया। दिग्विजयने सब सामान एकत्र कर दिया। तीर्थयात्रामें राजपुत्रके कुल-पुरोहित भी साथ ही थे। उन्होंने हम दोनोंका व्याह करा दिया।

गि०—कन्यादान किसने दिया ?

मृ०—मेरे पुराने घरानेकी अरुन्धती नामकी एक स्त्री थी। वह नातेमें मेरी मौसी लगती थी। मुझको उसने बचपनहीसे पाला-पोसा था। वह मुझे बहुत प्यार करती थी। मेरी सभी शरारतें बरदाश्त कर लेती थी। मैंने उसका नाम बताया। दिग्विजय किसी बहाने नगरसे उसे हेमचन्द्रके घर ले आया। अरुन्धतीका ख्याल था—मैं यमुनामें डूब गई हूँ। वहां मुझे जीती देखकर इतनी खुश हुई कि और किसी बातपर उसने ध्यान ही नहीं दिया और न किसी बातसे असन्तुष्ट ही हुई। मैंने जो कुछ कहा उसने मान लिया। उसीने कन्यादान दिया। व्याहके बाद मौसीके साथ पिताके घर गई। वहां सब बातें तो मैंने सच-सच कह दीं, पर व्याहकी बात मैंने छिपा रखी। हेमचन्द्र, दिग्विजय, कुलपुरोहित, अरुन्धती और मेरे सिवा व्याहकी बात किसी और को मालूम न थी। आज तुमसे मैंने कहा है।

गि०—क्या माधवाचार्यको भी मालूम नहीं है ?

मृ०—नहीं, उनके जान लेनेपर मेरा सर्वनाश हो जाता। उनके जाननेपर मगध-राजको भी यह बात जरूर मालूम हो जाती। मेरे पिता बौद्ध हैं और मगधके राजा बौद्धोंके जानी दुश्मन हैं।

गि०—अच्छा, यदि तुम्हारे पिता तुम्हें आजतक क्वांरी जानते हैं, तो इस उम्रमें भी तुम्हारा व्याह क्यों न कर दिया ?

मृ०—यह उनका दोष नहीं है। उन्होंने बड़ी दौड़-धूप की, पर अबतक कहीं बौद्ध सुपात्र न मिला। क्योंकि बौद्धधर्म अब एक तरह लोप-सा हो रहा है। मेरे पिता बौद्ध-दामाद चाहते हैं

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
और साथ ही-साथ वह सुपात्र भी हो। ऐसा एक वर मिला भी था तो मेरे विवाहके बाद। ब्याहका दिन भी नियत हो चुका था, सब तैयारी भी हो गयी थी, किन्तु ठीक उसी समय मुझे बड़े जोरका ज्वर आ गया। वरने दूसरी जगह अपना विवाह कर लिया।

गि०—क्या तुमने अपनी इच्छासे ज्वर बुला लिया था ?

मृ०—हां, मेरे बागमें एक कुंआ है जिसका जल कोई छूता तक नहीं। उसका जल पीनेसे या उसमें नहानेसे जरूर ज्वर आ जाता है। मैंने रातको छिपकर उसीके जलसे स्नान कर लिया था।

गि०—उसके बाद यदि फिर तुम्हारा ब्याह होता तो तुम ऐसा ही करती ?

मृ०—इसमें क्या सन्देह है ? नहीं तो मैं हेमचन्द्रके यहां भाग जाती।

गि०—मथुरासे मगध तो एक महीनेका रास्ता है, तुम स्त्री होकर किसकी सहायतासे भाग जाती।

मृ०—मुझसे मिलनेके लिये हेमचन्द्रने मथुरामें एक दूकान खोलकर अपना नाम "रतनदास" बनिया रखा था। सालमें एक बार दूकानकी देख-रेख करनेके लिये वहां चले जाते थे। जब वे मथुराके बाहर रहते थे तब दिग्विजय वहां उनकी दूकान चलाता था। दिग्विजयसे उन्होंने कह रखा था कि मृणालिनी जब जो कहे उसे उसी समय पूरा करना। इसलिये मैं निःसहाय न थी।

बात खतम होनेपर गिरिजायाने कहा—ठकुरानी! मुझसे एक बहुत बड़ा अपराध हो गया है उसे तुम्हें क्षमा करना होगा। मैं उसका समुचित प्रायश्चित्त करनेके लिये तैयार हूँ।

मृ०—कौन-सा ऐसा बड़ा अपराध तुमने किया है ?

गि०—मैं नहीं जानती थी कि दिग्विजय तुम्हारा भलाई करनेवाला है। मैं तो जानती थी कि वह बहुत ही तुच्छ आदमी है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

इसलिये आज सवेरे मैंने उसे झाड़ू से खूब पीटा है, यह मैंने अच्छा नहीं किया है।

मृणालिनीने हँसकर कहा—तो क्या प्रायश्चित्त करनेके लिये तैयार हो?

गि०—क्या भिखारिनकी लड़कीका व्याह होता है?

मृ०—(हँसकर) करना ही होगा।

गि०—तब तो मैं उस तुच्छ आदमीसे व्याह करूँगी?

मृणालिनीने फिर हँसकर कहा—तब मैं तुम्हारी देहमें हल्दी लगाऊँगी।

चत्वारिंश परिच्छेद

—०※०—

परामर्श

हेमचन्द्रने माधवाचार्यके वास-स्थानपर आकर देखा कि आचार्य जपमें लीन हैं। हेमचन्द्रने प्रणाम करके कहा—हम लोगोंका सब किया कराया व्यर्थ हो गया। अब इस दासको क्या आदेश देते हैं? मुसलमानोंने गौड़को अपने अधिकारमें कर लिया। मालूम होता है कि ब्रह्माने भारतभूमिके भाग्यमें मुसलमानोंकी गुलामी ही लिखी है, नहीं तो बिना लड़ाईके ही मुसलमानोंने गौड़पर क्यों अधिकार कर लिया? यदि इस समय शरीर बलिदान देनेपर भी जन्मभूमि डाकुओंके पञ्जेसे एक दिनके लिये भी मुक्त हो जाती तो मैं ऐसा करनेके लिये तैयार हूं। इसी अभिप्रायसे रातको लड़नेकी अभिलाषासे नगरमें गया था, पर वहाँ युद्ध तो नहीं देखा। केवल यही देखा कि एक दल हमला करता है और दूसरा दल भागा जा रहा है।

माधवाचार्यने कहा—बेटा! दुःखी मत हो, ज्योतिषकी गणना

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
कभी विफल नहीं होती। मैंने पहले ही गणना करके देखा है कि मुसलमानोंकी पराजय होगी, तब विश्वास रखा, अवश्य ही मुसलमान हारेंगे। मुसलमानोंने नवद्वीपको जीत लिया है, पर नवद्वीप ही तो गौड़में नहीं है। प्रधान राजा राज्य छोड़कर भाग गये हैं, पर गौड़ राज्यमें तो बहुत करद राजा हैं। उन्होंने अब-तक भी हार नहीं मानी है यदि ये सब राजा संघ-बद्ध हो जी-जानसे लड़ेंगे, तो कौन नहीं जानता कि मुसलमानोंको भागनेके लिये जगह न मिलेगी।

हेमचन्द्रने कहा—उसकी कम सम्भावना है।

माधवाचार्यने कहा—ज्योतिषकी गणना कभी झूठी नहीं हो सकती, अवश्य फलित होगी। तो भी मुझे एक सन्देह है—पूर्व देशमें मुसलमानोंके हारनेका अर्थ मैंने उनका नवद्वीपमें पराजित होना लगाया था। पर गौड़ राज्य तो वास्तवमें पूर्व नहीं है। वास्तविक पूर्व तो कामरूप ही है। जान पड़ता है वहीं हमारी आशा पूर्ण होगी।

हे०—पर इस समय तो मुसलमानोंके कामरूप जानेकी कोई सम्भावना नहीं दीख पड़ती।

मा०—ये मुसलमान एक क्षण भी स्थिर नहीं रह सकते। गौड़में अपना राज्य अच्छी तरह जमा लेनेके बाद वे कामरूपपर धावा करेंगे।

हे०—अच्छा, इसे भी मान लिया और यह भी मान लिया कि कामरूपपर आक्रमण करते ही वे हार जायंगे, पर यह सब कुछ होनेपर भी मेरे पिताके राज्यके उद्धार होनेका तो कोई उपाय न हुआ।

मा०—ये मुसलमान अबतक हर बार विजयी होकर राजाओंमें अजेय कहलाते हैं। डरसे कोई उनका विरोध करना नहीं चाहता। यदि ये एक बार भी पराजित हो जायँगे, तो उनकी वह शान फिर न रहेगी। उस समय भारतवर्षके सभी हिन्दू

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

राजा हथियार लेकर उठ खड़े होंगे। सबके एक होकर हथियार उठा लेनेपर मुसलमान कितने दिन तक ठहर सकते हैं?

हे०—गुरुदेव! आपको केवल आशाका सहारा है। मैं भी आप हीका अनुसरण करूंगा। कहिये इस समय मैं क्या करूं?

मा०—मैं भी यही सोच रहा हूं—अब यहाँ तुम्हारा रहना उचित नहीं है, क्योंकि मुसलमानोंने तुम्हें मार डालनेका संकल्प कर लिया है। इसलिये आज ही तुम इस नगरको छोड़ दो।

हे०—तो फिर कहाँ जाऊँ?

मा०—मेरे साथ कामरूप चलो।

हेमचन्द्रने सिर नीचाकर कुछ अप्रतिभ हो कहा—मृणालिनीको कहाँ रख छोड़ूं?

माधवाचार्यने विस्मित होकर कहा—यह क्या! तुम्हारी कलकी बातसे तो मैं समझता था कि तुमने मृणालिनीको अपने चित्तसे भुला दिया है।

हेमचन्द्रने पहलेकी ही तरह धीरे स्वरमें कहा—मृणालिनी भुला देनेके योग्य नहीं है, वह मेरी विवाहिता स्त्री है।

माधवाचार्य चौंक पड़े और बोले—मैं यह सब कुछ नहीं जानता था।

तब हेमचन्द्रने अपने विवाहकी सारी बातें कह सुनाई। सुनकर माधवाचार्य थोड़ी देरतक मौन रहे, फिर बोले—जिस स्त्रीका आचरण ठीक नहीं है, वह शास्त्रानुसार त्याज्य है। मृणालिनीके चरित्रके सम्बन्धमें जो सन्देह था उसे मैंने कल ही कह दिया था।

तब हेमचन्द्रने व्योमकेशका सारा वृत्तान्त साफ-साफ कह सुनाया। सुनकर माधवाचार्यने बड़ा हर्ष प्रगट किया और कहा—बेटा! मैं बहुत प्रसन्न हुआ। मैंने तुम्हारी प्रियतमा और

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
गुणवती स्त्रीको तुमसे जुदा कर तुम्हें बहुत कष्ट दिया है। अब आशीर्वाद देता हूँ कि तुम दोनों दीर्घजीवी होओ, बहुत दिनोंतक एक साथ रहकर धर्माचरण करो। यदि इस समय अपनी स्त्रीके साथ हो तो मैं तुमको अपने साथ कामरूप चलनेके लिये अनुरोध नहीं करता। मैं पहले जाता हूँ। जब उचित समय देखेंगे तब तुम्हारे यहां कामरूपके राजा अपना दूत भेजेंगे। इस समय तुम मथुरा या अपने मनोनुकूल किसी और जगहमें जाकर रहो।

इसके बाद हेमचन्द्र माधवाचार्यसे विदा हुए। माधवाचार्यने आशीर्वाद दे डबडबायी आँखोंसे हेमचन्द्रको छातीसे लगाकर विदा किया।

एकचत्वारिंश परिच्छेद

महम्मद अलीका प्रायश्चित्त

जिस रातको राजधानीमें मुसलमानोंकी सेना लूटपाट मचा रही थी उसी रातको पशुपति अकेले जेलमें कैद थे। प्रातःकाल होते ही लड़ाई खतम हुई। तब महम्मद अली उनसे भेंट करने आया। पशुपतिने कहा—मुसलमान! चिकनी-चुपड़ी बातें करनेकी अब जरूरत नहीं है। एक बार तुम्हारी मीठी बातोंमें आकर मेरी यह दशा हुई है। विधर्मी मुसलमानोंका विश्वास कर जो फल मिलना चाहिये वह मुझे मिल गया। इस समय मैंने मृत्युको अच्छी समझकर दूसरी अभिलाषाओंको छोड़ दिया है। अब तुम्हारी कोई मीठी बात सुनना नहीं चाहता।

महम्मद अलीने कहा—मैं अपने मालिकका हुक्म मानता हूँ। और मालिकका हुक्म पूरा करने आया हूँ। आपको मुसलमानी पोशाक पहनना होगा।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पशुपतिने कहा—उसके लिये धीरज धरो। मैंने अब मरनाही निश्चित कर लिया है। मैं मृत्युका आलिंगन करनेके लिये तैयार हूँ, पर मुसलमानी धर्म कभी स्वीकार न करूंगा।

म०—इस समय आपको मुसलमान होनेके लिये नहीं कहता। केवल राज प्रतिनिधिको प्रसन्न करनेके लिये मुसलमानी पोशाक पहननेके लिये कहता हूँ।

प०—मैं ब्राह्मण होकर किसलिये म्लेच्छोंकी पोशाक पहनूंगा ?

म०—अगर आप अपनी इच्छासे नहीं पहनेंगे, तो आपको जबर्दस्ती पहनाऊंगा। न मानेंगे तो आपको अपमानित होना पड़ेगा।

पशुपतिने जवाब नहीं दिया। महम्मद अलीने अपने हाथोंसे उनको मुसलमानी पोशाक पहना दी। फिर कहा—मेरे साथ आइये।

प०—कहां चलूं ?

म०—आप कैदी हैं, पूछनेका क्या मतलब ?

महम्मदअली उनको सिंहद्वारसे ले चला। जो आदमी पशुपतिकी रखवालीके लिये नियत था वह भी साथ-साथ चला।

दरवाजेपर पहरेवालोंके पूछनेपर महम्मद अलीने एक संकेत द्वारा अपना परिचय दिया। पहरेवालोंने उसे जाने दिया। सिंहद्वारसे निकलकर तीनों आदमी सड़कपर कुछ दूर चले गये। उस समय मुसलमानोंकी सेना लूटपाट समाप्त कर विश्राम कर रही थी, इसलिये सड़कपर कोई शोर-गुल न था। महम्मद अलीने कहा—धर्माधिकारी ! आपने व्यर्थ ही मेरा तिरस्कार किया है। बख्तियार खिलजीका यह अभिप्राय मुझे मालूम नहीं था। यदि मैं जानता तो उस कपटीका दूत बनकर आपके यहां कभी नहीं जाता। खैर, आप मेरी बातपर विश्वास कर इस मुसीबतमें पड़े हैं, इसके लिये मैंने यथाशक्ति प्रायश्चित्त किया है। गङ्गाके

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
किनारे नाव तैयार है अब आपकी जहां जानेकी इच्छा हो चले जायें। मैं यहींसे विदा लेता हूं।

पशुपति विस्मित होकर चुप रहे। महम्मद अली फिर कहने लगा—आप आज ही इस नगरको छोड़ दीजिये; नहीं तो कल सवेरे मुसलमानोंसे मुलाकात होते हो बड़ी मुसीबतमें पड़ जायंगे। मैं खिलजीकी आज्ञाके विरुद्ध यह काम कर रहा हूँ, इसका साक्षी यही पहरेवाला है। इसलिये अपनी रक्षाके लिये इसे भी दूसरे देशमें भेज देता हूँ। इसे भी अपने साथ लेते जाइये।

यह कहकर महम्मद अली चला गया। पशुपति कुछ देरतक विस्मित हो ठहरनेके बाद गंगाकी ओर चले।

द्विचत्वारिंश परिच्छेद

मूर्त्तिका विसर्जन

पशुपति महम्मद अलीसे विदा हो सड़कको पारकर धीरे-धीरे जा रहे थे। मुसलमानोंकी कैदसे छूटनेपर भी जल्दी-जल्दी चलनेकी इच्छा न हुई। सड़कोंपर जो उन्होंने देखा उससे वे मन-ही-मन मर गये। पग-पगपर नगर-निवासियोंकी मृत देह पैरों तले आ जाती थीं, खूनसे सने हुए कीचमें उनके पैर धस जाते थे, रास्तेके दोनों ओर सब घर निर्जन पड़े थे। बहुतसे घर जलकर राख हो गये थे। कहीं-कहीं आगके अंगारे अब तक भी जल रहे थे। किसी किसीके घरके दरवाजे टूटे थे, खिड़कियां टूटी थीं, छतें छिन्न-भिन्न हो गिर गयी थीं और उनपर मुर्दे पड़े थे। कहीं-कहीं कितने अभागे मृत्युकी वेदनासे कराह रहे थे। इन सबके मूल कारण वही थे। लोभके वशीभूत होकर उन्होंने ही इस राजधानीको श्मशान बना दिया है। पशुपतिने अपने मनमें स्वीकार किया-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मैं प्राणदण्ड पानेके योग्य हूँ, महम्मद अलीको कलंकित कर जेलखानेसे क्यों निकल भागा। मुसलमान मुझे पकड़कर अपने इच्छानुसार सजा दें, मैं लौट चलता हूँ। फिर मनमें उन्होंने इष्ट देवीको स्मरण किया, पर किस कामनासे? अब तो किसी बात की इच्छा नहीं है। उन्होंने आकाशकी ओर देखा। ताराओं और चन्द्रमासे आलोकित आकाशकी निर्मल शोभाके सामने उनकी आँखें न ठहर सकीं। उन्होंने उसकी तीव्र ज्योतिसे घबड़ाकर आँखें बन्द कर लीं। अकस्मात् उनके हृदयमें अस्वाभाविक भय-का संचार हुआ। भयसे वे अपने पैर आगेकी ओर न बढ़ा सके, सहसा बलहीन हो गये। विश्राम करनेके लिये बीच राहमें ही बैठने लगे तो देखा कि नीचे एक मुर्देपर बैठ रहे हैं। मुर्देसे निकला हुआ रक्त उनके कपड़े और शरीरमें लग गया, रोंगटे खड़े हो गये। वे उठ खड़े हुए, वहाँ ठहर न सके। जल्दी-जल्दी पैर बढ़ाकर चले। अकस्मात् उन्हें अपने घरकी याद आ गयी—क्या वह मुसलमानोंके हाथसे बच गया है! उस घरमें जिस फूल जैसी कोमल प्राण पुतलीको छिपा रखा था वह कहाँ है! मनो-रमाकी क्या दशा हुई है! मेरी प्राणप्यारीने मुझे पापके मार्गसे बार-बार हटाया था, मालूम होता है कि वह भी मेरे पाप-सागर-की लहरमें डूब गई। न जाने यवन सेनाकी प्रबल धारामें वह कुसुम कली बहकर कहाँ चली गयी?

पशुपति मतवालेकी तरह अपने घरकी ओर चले। जब अपने घरके सामने आये तो जिसकी कल्पना की थी वही देखा। ज्वालामुखी पार्वतकी तरह उनका ऊँचा महल धधक रहा था। देखते ही अभागे पशुपतिने समझा कि मुसलमान मेरे नौकर-चाकरोंके साथ मनोरमाको भी मार मेरे घरमें आग लगाकर चले गये हैं। मनोरमाके भाग जानेकी बात उनके ध्यानमें न आई। नजदीक कोई था भी नहीं जिसके द्वारा वे उसके यहाँ खबर भेज सकते। अपने व्याकुल चित्तकी कल्पनाको ही उन्होंने सत्य

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मान लिया। विषका घड़ा भर गया। हृदयकी अन्तिम तन्त्री बज उठी, वे कुछ देरतक विस्फारित नेत्रोंसे जलते हुए महलको देखते रहे। मरणोन्मुखी पतिंगेकी तरह व्याकुल हो थोड़ी देर एक जगह बैठ गये। अन्तमें बड़े वेगसे उसी प्रज्ज्वलित आगकी लहरमें कूद पड़े। संगका पहरेवाला अवाक् हो खड़ा रहा।

पशुपति बड़ी जल्दीसे जलते हुए दरवाजेसे घरमें घुसे। उनके पैर और सारा शरीर झुलस गया, पर वे वहाँसे मुड़े नहीं। अग्निकुण्ड पार कर वे अपने सोनेके कमरेमें आये। पर वहाँ किसीको न देखा। कोठरी-कोठरी ढूंढ़ डाला। उनके हृदयके अन्दर जो प्रचंड आग जल रही थी, उससे उन्होंने बाहरकी आगकी जलनकी कुछ परवाह न की।

क्रमशः घरका एक-एक हिस्सा आगसे जल रहा था। जलते हुए घरकी प्रचण्ड ज्वाला आकाशमें उठकर भयंकर गर्जन करती थी। जलते हुए घरके हिस्से बिजलीकी तरह कड़क-कड़क कर जमीनपर गिर रहे थे। धुएँ और राखके साथ आगकी अगनित चिनगारियोंसे आसमान घिर गया था।

दावानलसे घिरे हुए जंगली हाथीकी तरह पशुपति आगमें इधर-उधर नौकर-चाकर, अपने कुटुम्ब और मनोरमाको ढूँढ़ने लगे—कहीं किसीका नामोनिशान भी न मिला। अन्तमें जब वे हताश हो गये तब देवीके मन्दिरकी ओर उनकी नजर पड़ी। उन्होंने देखा कि अष्टभुजा देवीका मन्दिर आगसे जल रहा है। पशुपति पतिंगेकी तरह उसमें घुस गये। वहाँ देखा कि आगकी लहरोंमें पड़कर भी वह स्वर्णमूर्त्ति ज्यों-की-त्यों चमक रही है। पशुपतिने पागलकी तरह कहा—माँ! जगदम्बा! अब तुम्हें जगदम्बा नहीं कहूँगा, न तुम्हारी पूजा करूँगा और न तुम्हें प्रणाम करूँगा। बचपनसे ही मैंने तन, मन, धनसे तुम्हारी सेवा की थी, तुम्हारे चरणोंके ध्यानको अपने जीवनका मुख्य कर्त्तव्य समझा था। आज मा! केवल एक दिनके पापसे सब नष्ट-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

भ्रष्ट कर दिया, तो कहो किसलिये तुम्हारी पूजा की थी ? क्यों नहीं तुमने मेरी पाप बुद्धिका विनाश कर दिया ?

मन्दिरको जलानेवाली आग अधिक प्रचण्ड होकर धधक उठी, तो भी पशुपति उस मूर्तिको सम्बोधन करके कहने लगे— यह देखो ! धातुमूर्ति ! तुम केवल धातुकी मूर्ति ही हो, देवी नहीं हो। यह देखो ! आग धधक रही है। जिस राहसे मेरी प्राण प्यारी गई है यह अग्नि उसी रास्तेसे तुम्हें भी ले जायगी। पर मैं आगको इस कीर्तिका भागी न बनने दूँगा। मैंने तुम्हारी स्थापना की थी, मैं ही तुम्हारा विसर्जन भी करूँगा। इष्टदेवी ! चलो, तुम्हें गंगामें विसर्जन कर दूँ।

यह कहकर पशुपतिने उस मूर्तिको उठानेकी गरजसे दोनों हाथोंसे पकड़ लिया। उसी समय आग फिर धधक उठी। पर्वत फटनेके समान बहुत बड़ा शब्द हुआ। जलता हुआ मन्दिर, आकाशमें धूलि, धुआं और राखके साथ आगकी चिनगारियोंको उड़ाकर आप भी टुकड़े-टुकड़े होकर गिर पड़ा। उसीमें मूर्तिके साथ ही पशुपतिकी भी जीवित समाधि हो गई।

त्रिचत्वारिंश परिच्छेद

अन्तिम काल

यद्यपि पशुपति अष्टभुजाकी पूजा स्वयं करते थे, तो भी देवीकी नित्य सेवाके लिये उन्होंने दुर्गादास नामक एक ब्राह्मणको पुजारी रखा था। नगरके लूटे जानेके दूसरे रोज दुर्गादासने सुना कि पशुपतिका घर जलकर राख हो गया है। तब उस ब्राह्मणने अष्टभुजाकी मूर्तिको राखमेंसे निकालकर अपने घरमें स्थापित करनेका विचार किया। जब मुसलमान नगर लूटकर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सन्तुष्ट हो गये तब बख्तियार खिलजीने नगरनिवासियोंको व्यर्थ तकलीफ देना बन्द कर दिया। इसलिये अब बंगाली लोग हिम्मत करके सड़कपर बाहर निकलने लगे। यह देख दुर्गादास दिनमें दोपहरके बाद अष्टभुजा देवीको उस जलते हुए पशुपतिके घरसे निकालनेके लिये चले। वहां जाकर वे देवीके मन्दिरमें गये। उन्होंने देखा कि ईंट-पत्थरोंके हटाये बिना देवीका मूर्ति नहीं निकाली जा सकती। यह सोचकर अपने लड़केको बुला लाये। ईंटें पिघल-पिघलकर आपसमें जुट गईं थीं और अब भी जल रही थीं। बाप-बेटे दोनोंने एक बावलीसे पानी लाकर जलती ईंटोंको ठंडा किया और बड़े परिश्रमसे ईंटोंकी ढेरीमें अष्टभुजा की मूर्ति ढूँढ़ने लगे। ईंटोंको हटा देनेपर देवीकी मूर्त्ति बाहर निकली। पर मूर्तिके चरणोंके पास यह क्या! डरते-डरते पिता-पुत्र दोनोंने देखा कि किसी आदमीका मृतक शरीर है। दोनोंने मृतकको उठाकर देखा तो वह पशुपतिकी मृत देह थी।

विस्मित होकर दुर्गादासने कहा—चाहे जिस किसी कारणसे स्वामीकी यह दशा क्यों न हुई हो, पर ब्राह्मण तथा उनके आश्रितोंका जो कर्त्तव्य है वह हमलोगोंको अवश्य करना चाहिये। चलो, इस मृत देहको गङ्गा किनारे ले चलें और स्वामीका अन्तिम संस्कार करें।

यह कहकर दोनों आदमी पशुपतिकी मृत देहको कंधेपर रख गङ्गा किनारे ले आये। वहाँ बेटेको मृतकको रखवालीके लिये छोड़कर दुर्गादास लकड़ी आदि दाह संस्कारके उचित द्रव्य लानेके लिये नगरमें चले गये और यथाशक्ति सुगन्धित काष्ठ, चंदन, धूप आदि सामग्रियां एकत्र करके गङ्गा तटपर लौट आये।

तब दुर्गादासने पुत्रकी सम्मतिसे शास्त्रानुसार दाहके पूर्व किये जानेवाले कर्मोंको समाप्त करके चन्दनकी चिता सजाकर उस पर पशुपतिका शव रख दिया और अग्नि-संस्कार करने चले।

इसी समय अचानक ही श्मशानभूमिसे यह कौन प्रकट हुई!

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

दोनों ब्राह्मणोंने आश्चर्यसे देखा कि मैला कुचैला कपड़ा पहने, सिरके बाल फैलायं, बदनमें राख और धूल लपेटे एक पगली श्मशानमें आई है। वह स्त्री ब्राह्मणोंके पास आकर खड़ी हो गयी। दुर्गादासने भयभीत होकर पूछा—आप कौन हैं ?

स्त्रीने पूछा—आप लोग किसका दाह कर रहे हैं ?

दुर्गादासने कहा—धर्माधिकारी पशुपतिका।

स्त्री—पशुपतिकी मृत्यु कैसे हुई ?

दुर्गादासने कहा—सवेरे नगरमें लोगोंके मुंहसे सुना कि पशुपति मुसलमानोंके बन्दी हुए थे, पर किसी तरह रातको जेलसे निकल भागे। आज यह सुनकर कि उनका मकान जलकर राख हो गया, मैं उसमेंसे अष्टभुजाकी मूर्ति निकालनेकी इच्छासे वहां गया था। वहां जाकर स्वामीको मरा पाया।

स्त्रीने कुछ नहीं कहा, गङ्गाके किनारे बालपर बैठ गई। बहुत देरतक चुप रहकर उसने पूछा—आप लोग कौन हैं ?

दुर्गादासने कहा—हम लोग ब्राह्मण हैं, और धर्माधिकारीने हमें पाला-पोसा है। आप कौन हैं ?

युवतीने कहा—मैं उनकी स्त्री हूँ।

दुर्गादासने कहा—उनकी स्त्री तो बहुत दिनोंसे लापता थीं। आप उनकी स्त्री कैसे हैं ?

युवती—मैं वही केशवकी कन्या हूं जो बहुत दिनोंसे लापता थी। पतिकी मृत्युके बाद मेरे सती होनेके डरसे पिताने मुझे इतने दिनों तक छिपा रखा था। आज मैं दिन पूरा होनेपर विधाताके लेखको पूरा करने आई हूँ।

सुनकर पिता-पुत्र दोनों सिहर उठे। उन्हें चुप देखकर विधवाने कहा—इस समय स्त्रीका जो कर्तव्य है उसे मैं करूंगी, आप लोग प्रबन्ध करें।

दुर्गादासने युवतीका अभिप्राय समझ लिया। उन्होंने पुत्रकी ओर देखकर पूछा—क्या कहते हो ?

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पुत्रने कुछ जवाब नहीं दिया। तब दुर्गादासने युवतीसे कहा—मा ! अभी तुम बालिका हो। यह कठिन कार्य करनेके लिये क्यों उद्यत हुई हो ?

युवतीने भौंहें चढ़ाकर कहा—आप ब्राह्मण होकर मुझे अधर्मकी ओर क्यों झुका रहे हैं ? इसीके लिये उद्योग करें।

तब ब्राह्मण सामग्री एकत्र करने चले गये। जाते समय विधवाने दुर्गादाससे कहा—आप नगरमें जा रहे हैं, नगरके पास ही राजाके उपवन-भवनमें हेमचन्द्र नामक एक परदेशी राजपुत्र रहते हैं। उनसे कहना कि मनोरमा गङ्गाकिनारे चितारोहण कर रही है, आप आकर एक बार उससे भेंट कर जायं। इस जीवनमें मनोरमाकी यही एक भिक्षा है।

हेमचन्द्रने जब ब्राह्मणके मुंहसे सुना कि मनोरमा पशुपतिकी स्त्री है और उनकी मृत्युके बाद सती हो रही है तो उनकी समझमें कुछ भी न आया। दुर्गादासके साथ ही वे श्मशान भूमिमें आये। वहां आकर मनोरमाकी अति मलिना-उन्मादिनी मूर्ति तथा उसके स्थिर, गंभीर और सुन्दर मुखकी कान्ति देखते ही उनकी आखों से सहसा आंसू बह चले। उन्होंने कहा—बहिन ! मनोरमा ! यह क्या ?

तब मनोरमाने चांदनीसे चमकते हुए सरोवरकी तरह स्थिर होकर मधुर एवं गम्भीर स्वरसे कहा—भाई ! जिसके लिये मेरा जीवन था आज उसकी चरमसीमा पहुँच गई—आज मैं अपने स्वामीके साथ जाऊंगी।

मनोरमाने संक्षेपमें धीरेसे अपना पूर्व वृत्तान्त सुनानेके बाद कहा—मेरे स्वामी अपार धन जमा कर गये हैं। इस समय मैं ही उस धनकी मालकिन हूँ। मैं वह सब धन तुम्हें सौंप देती हूँ। उसे तुम ले लेना, नहीं तो पापी मुसलमान उसका भोग करेंगे। उसका कुछ हिस्सा खर्च कर जनार्दन शर्माको काशीवास करा देना। जनार्दनको बहुत धन मत देना, नहीं तो मुसलमान छीन

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

लगे। मेरा दाह हो जानेपर तुम मेरे स्वामीके घर जाकर धन ढूंढ़ना। मैं जहाँ बताती हूं वहीं ढूंढ़नेसे तुम्हें वह धन मिलेगा। मेरे सिवा उस जगहको कोई नहीं जानता। यह कहकर मनोरमाने जहाँ धन गड़ा था, बता दिया।

उसके बाद मनोरमाने हेमचन्द्रसे बिदा माँगी। जनार्दन तथा उनकी पत्नीको प्रणाम कर हेमचन्द्रके द्वारा उन दोनोंके पास कितनी ही स्नेहसूचक बातें कहला भेजीं।

इसके पश्चात् ब्राह्मणोंने मनोरमासे शास्त्रानुसार इस कठोर व्रतका पालन करवाया। शास्त्रीय आचार-व्यवहार हो जानेके बाद मनोरमाने ब्राह्मणके लाये हुए नये वस्त्रको पहना। नया वस्त्र पहन, दिव्य पुष्प माला गलेमें डाल, पशुपतिकी प्रज्ज्वलित चिताकी प्रदक्षिणा कर मनोरमा उसपर चढ़ गई और हंसते-हंसते उस धधकती हुई आगकी लहरोंमें बैठकर धूपसे कुम्हलाई हुई पुष्पकलीकी तरह आगकी ज्वालामें उसने अपना प्राण विसर्जन किया।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

परिशिष्ट

हेमचन्द्रने मनोरमाके दिये हुए धनका कुछ हिस्सा जनार्दनको देकर उन्हें काशी भेज दिया। उन्होंने माधवाचार्यसे पूछा कि शेष धन लेना उचित है या नहीं। माधवाचार्यने कहा—इसी धनसे पशुपतिका सर्वनाश करनेवाले बख्तियार खिलजीसे बदला चुकाना ठीक है, और इसी अभिप्रायसे उसका ग्रहण करना भी उचित है। दक्षिणमें समुद्र-तटपर बहुतसे स्थान निर्जन होकर पड़े हैं। मेरी इच्छा है कि उसी धनकी सहायतासे तुम वहाँ नया राज्य बसाओ और मुसलमानोंका दमन करनेके लिये सेना संगठित करो। उसीकी मददसे पशुपतिके शत्रुओंका मानमर्दन करो।

यह विचार निश्चित कर माधवाचार्यने उसी रात हेमचन्द्रको नवद्वीपसे दक्षिणकी ओर भेजा। पशुपतिके धनको उन्होंने छिपाकर अपने पास रखा। मृणालिनी, गिरिजाया और दिग्विजय भी उनके साथ हो लिये। माधवाचार्य भी उनका नया राज्य स्थापित करानेके लिये उनके साथ चले। बड़ी आसानीसे राज्य स्थापित हो गया, क्योंकि मुसलमानोंके धर्म-द्वेषसे दुखी हो तथा उनके आतङ्कसे डरकर बहुतसे लोग उनके जीते हुए राज्योंको छोड़कर हेमचन्द्रके स्थापित नये राज्यमें आकर बस गये।

माधवाचार्यके परामर्शसे भी बहुतसे बड़े-बड़े धनी महाजन वहाँ बसने लगे। इस तरह वह छोटा राज्य बहुत शीघ्र ही सुन्दर बन गया। क्रमशः सेना भी संगठित होने लगी। कुछ ही दिनोंमें वहाँ एक सुन्दर राजमहल निर्मित हुआ। उसमें मृणालिनी रानी बनकर उसे प्रकाशित करने लगी।

गिरिजायाके साथ दिग्विजयका व्याह हुआ। गिरिजाया मृणालिनीकी सेवामें नियुक्त हुई। दिग्विजय हेमचन्द्रके सब काम-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

काज पहलेकी तरह सम्हालने लगा। लोगोंका कहना है कि ब्याह-के बाद कोई दिन ऐसा नहीं बीता जिस दिन गिरिजायाने दिग्विजयके शरीरको झाड़ूकी एकाध चोटसे पवित्र न किया हो, इस झाड़ूकी मारसे दिग्विजय दुःखी नहीं था, बरन एक दिन संयोग वश गिरिजाया झाड़ू मारना भूल गई तो दिग्विजयने उदास होकर गिरिजायासे पूछा—गिरि! क्या तुम आज मुझसे नाराज हो? वास्तवमें इन दोनोंने अपना जीवन बड़े सुखपूर्वक बिताया।

हेमचन्द्रके नये राज्यको स्थापितकर माधवाचार्यने कामरूपकी ओर प्रस्थान किया। तब हेमचन्द्र दक्षिणमें मुसलमानों का विरोध करने लगे। बख्तियार खिलजी हारकर कामरूपसे दूर भाग गया और लौटनेके समय बड़े अपमान और कष्टसे उसके प्राण छूटे। उन सब घटनाओंका वर्णन करना इस ग्रन्थ-का उद्देश्य नहीं है।

रत्नमयी एक धनी मल्लाहसे विवाह कर हेमचन्द्रके नये राज्यमें जा बसी। वहां मृणालिनीकी कृपासे उसके पतिको विशेष सुविधा मिली। गिरिजाया और रत्नमयीमें बहुत दिनों तक मैत्री भाव बना रहा।

मृणालिनीने माधवाचार्यके द्वारा हृषीकेशसे अनुरोध कराकर मणिमालिनीको अपने यहां बुलवाया। मणिमालिनी राजमहलमें मृणालिनीकी सखीकी तरह रहने लगी। उसके पति राजमहलमें पुरोहित बनाये गये।

शान्तशीलने जब देखा कि हिन्दुओंके राज्य लौटनेकी कोई सूरत नहीं है तो वह अपनी चालाकी और कार्य कुशलता दिखाकर मुसलमानोंके प्रियपात्र बननेकी चेष्टा करने लगा। हिंदुओं-के प्रति अत्याचार और विश्वासघातकतासे बहुत ही शीघ्र अपना मतलब पूरा कर वह अपने अभीष्ट राजकार्यमें नियुक्त हुआ।

———

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रजनी

ले०—स्वर्गीय बाबू बङ्किमचन्द्र चटर्जी

स्व० बंकिम बाबूने सामाजिक एवं ऐतिहासिक उपन्यासोंके लिखनेमें अपनी कलमकी करामात बड़ी खूबीके साथ दिखलायी है। इस उपन्यासमें उन्होंने मानव हृदयके भिन्न-भिन्न भावोंको जिस कौशलसे चित्रित किया है, वह पढ़ते ही बनता है। इसमें रजनी नामक एक जन्मांध युवती एवं शचीन्द्र नामक युवकके विशुद्ध प्रेमका वर्णन बड़ी रोचक भाषामें लिखा गया है। पुस्तक सुन्दर एण्टिक कागज पर छपी है। कवरपर एक तिरंगा, तथा भीतर कई सादे चित्र दिये गये हैं। मूल्य केवल ॥।=)

पता—हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, ज्ञानवापी—काशी।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

Pictures

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कृष्णकान्तका वसीयतनामा

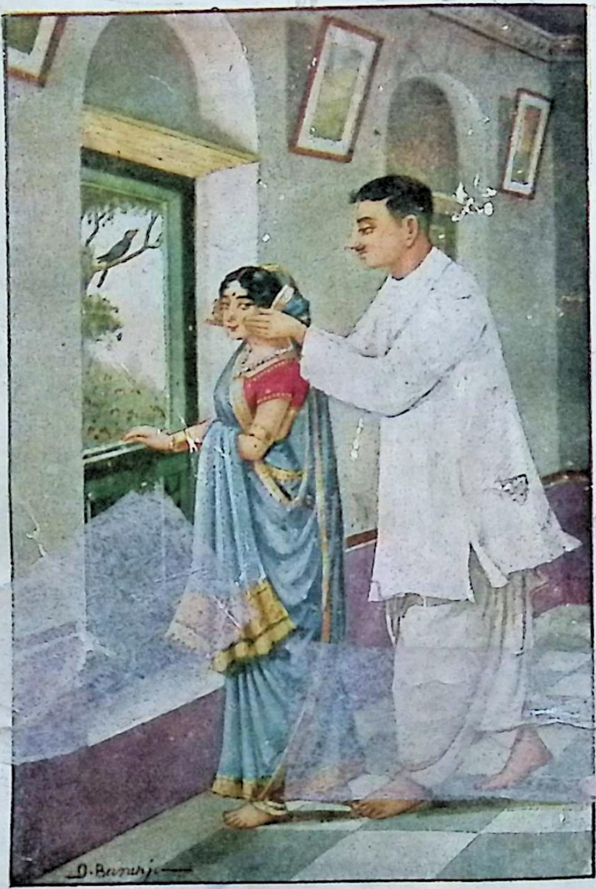

यह भी बंकिमबाबूकी लेखनी की करामात है।

मूल्य १)

हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, ज्ञानवापी-काशी।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)